3 | राजधानी
सुपरटेक के अध्यक्ष को जमानत देने से इनकार

6 | अभिमत
आम चुनाव के लिए बनती रणनीति

10 | विदेश
यूक्रेन में रूसी हमले में छह लोगों की मौत

12 | स्पोर्ट्स
शंघाई मास्टर्स में बोपन्ना और एबडेन की जोड़ी उपविजेता रही

RNI NO.DELHIN/2012/48369
वर्ष 11 अंक 338
नई दिल्ली, सोमवार, 16 अक्टूबर, 2023
पृष्ठ 12 मूल्य ₹ 3
नगर संस्करण

नई दिल्ली, लखनऊ, रायपुर और फरीदाबाद से प्रकाशित

पायनियर

www.dailypioneer.com

भारत किसी भी रूप में आतंकवाद का समर्थन नहीं करता

राष्ट्रीय-11

बर्बादी के कगार पर पहुंचा पश्चिम एशिया

एजेंसी। वाशिंगटन

राष्ट्रपति जो बाइडन ने इजराइल के लिए अमेरिका के अटूट समर्थन को दोहराया और फलस्तीन के लोगों के लिए मानवीय सहायता की आवश्यकता पर जोर दिया। व्हाइट हाउस ने कहा कि उन्होंने गाजा में बढ़ते तनाव के बीच इजरायल और फलस्तीनी नेताओं के साथ अलग-अलग फोन पर बातचीत की। एक सप्ताह पहले इज़राइल पर हमास के अभूतपूर्व हमले के बाद फलस्तीनी प्राधिकरण के राष्ट्रपति महमूद अब्बास के साथ अपनी पहली कॉल में बाइडन ने जोर देकर कहा कि आतंकवादी समूह फलस्तीनी लोगों के सम्मान और आत्मनिर्णय के अधिकार के लिए नहीं खड़ा है।

बाइडन ने गाजा में नागरिकों तक मानवीय आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए संयुक्त राष्ट्र, मिस्र, जॉर्डन, इज़राइल और अन्य के साथ काम करने के अमेरिका के प्रयासों पर अब्बास के साथ चर्चा की। राष्ट्रपति ने इजराइल के प्रधान मंत्री बेंजामिन नेतन्याहू को भी फोन किया। यह पिछले हफ्ते हमास के हमले के बाद उनका पांचवा कॉल था। दोनों कॉलों में बाइडन ने संघर्ष को बढ़ने से रोकने की आवश्यकता पर जोर दिया। उन्होंने सभी नागरिकों के लिए पानी, भोजन और चिकित्सा देखभाल तक

● गाजा में अशांति के बीच अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडन ने इजराइल के प्रधानमंत्री नेतन्याहू और फलस्तीन के राष्ट्रपति अब्बास से फोन पर की बातचीत

पहुंच सुनिश्चित करने के लिए संयुक्त राष्ट्र, मिस्र, जॉर्डन और क्षेत्र के अन्य देशों के साथ समन्वय के बारे में दोनों नेताओं से बात की। व्हाइट हाउस ने कहा कि अब्बास ने बाइडन को क्षेत्र में अपनी भागीदारी और फलस्तीनी लोगों, खासकर गाजा में तत्काल आवश्यक मानवीय सहायता लाने के अपने प्रयासों के बारे में जानकारी दी। बाइडन ने अब्बास और फलस्तीनी प्राधिकरण को इन महत्वपूर्ण और चल रहे प्रयासों के लिए अपना पूरा समर्थन देने की पेशकश की। व्हाइट हाउस ने कहा कि आज दोपहर, राष्ट्रपति बाइडन ने इज़राइल के लिए अटूट अमेरिकी समर्थन को दोहराने के लिए प्रधानमंत्री नेतन्याहू से बात की। राष्ट्रपति बाइडन ने प्रधानमंत्री नेतन्याहू को अमेरिकी सैन्य समर्थन के बारे में

रविवार को दक्षिणी इजराइल सीमा से गाजा पट्टी की ओर बढ़ते इजराइल सैनिकों का काफिला। गाजा हालात दिन प्रति दिन खराब होते जा रहे।

जानकारी दी और संघर्ष को बढ़ाने की कोशिश करने वाले किसी भी व्यक्ति के खिलाफ अपनी चेतावनी दोहराई। व्हाइट हाउस के संदेश में कहा गया कि बाइडन ने नागरिकों की सुरक्षा के सभी प्रयासों के लिए अपने समर्थन की पुष्टि की।

व्हाइट हाउस के मुताबिक, बाइडन ने अब्बास के साथ बातचीत में इजराइल पर हमास के क्रूर हमलों की निंदा की और कहा कि आतंकवादी समूह फलस्तीन के लोगों के सम्मान और आत्मनिर्णय के अधिकार के लिए खड़ा नहीं है। व्हाइट हाउस ने बताया कि बाइडन ने नेतन्याहू के साथ बातचीत में उन्हें अमेरिकी सैन्य सहयोग के बारे में अद्यतन जानकारी दी। उन्होंने संघर्ष को बढ़ावा देने की मंशा रखने वालों को भी चेताया। राष्ट्रपति कार्यालय की ओर से जारी एक बयान के अनुसार, आज दोपहर राष्ट्रपति बाइडन ने इजराइल के प्रधानमंत्री नेतन्याहू से बात की और अमेरिकी सैन्य समर्थन के बारे में जानकारी दी। उन्होंने संघर्ष को बढ़ावा देने की कोशिश करने वालों को भी चेतावनी दी। इसमें कहा गया है कि बाइडन ने पानी, भोजन और चिकित्सा देखभाल तक निर्दोष नागरिकों की पहुंच सुनिश्चित करने के लिए संयुक्त राष्ट्र, मिस्र, जॉर्डन, इजराइल और क्षेत्र के अन्य सहयोगियों के साथ अमेरिका के समन्वय पर नेतन्याहू के साथ चर्चा की। गाजा में अपने सैनिकों को भेजने की इजराइल की संभावित योजना के बारे में जानकारी दी। उन्होंने संघर्ष को बढ़ावा देने की कोशिश करने वालों को भी चेतावनी दी। इसमें कहा गया है कि बाइडन ने पानी, भोजन और चिकित्सा देखभाल तक निर्दोष नागरिकों की पहुंच सुनिश्चित करने के लिए संयुक्त राष्ट्र, मिस्र, जॉर्डन, इजराइल और क्षेत्र के अन्य सहयोगियों के साथ अमेरिका के समन्वय पर नेतन्याहू के साथ चर्चा की। गाजा में अपने सैनिकों को भेजने की इजराइल की संभावित योजना के

बीच अमेरिका ने दुनिया भर के देशों से बातचीत तेज कर दी है। अमेरिकी विदेश मंत्री एंटनी ब्लिंकन ने शनिवार को अपने चीनी समकक्ष वांग ई से बात की थी। विदेश मंत्रालय ने कहा, इजराइल के साथ खड़े होने और हमास द्वारा किए गए आतंकवादी हमलों की निंदा करने के बाइडन प्रशासन के राजनयिक प्रयासों के तहत मंत्री ने इजराइल की अपनी रक्षा करने के अधिकार के प्रति अमेरिकी समर्थन दोहराया और हमास से हमलों को तत्काल रोकने तथा सभी बंधकों को रिहा करने की मांग की।

अमेरिकी रक्षा मंत्री लॉयड ऑस्टिन ने शनिवार को सीएसजी को पूर्वी भूमध्य सागर की ओर बढ़ने का निर्देश दिया था। आइजनहावर सीएसजी यूएसएस गेराल्ड आर. फोर्ड कैरियर स्ट्राइक ग्रुप में शामिल हो जाएगा, जो इस सप्ताह की शुरुआत में आया था। फोर्ड सीएसजी में यूएसएस नॉर्मंडी, यूएसएस थॉमस हडनर, यूएसएस रैमेज, यूएसएस कार्नी और यूएसएस रूजवेल्ट शामिल हैं। उन्होंने कहा, इससे पहले सप्ताह में अमेरिकी वायु सेना ने क्षेत्र में एफ-15, एफ-16 और ए-10 लड़ाकू विमानों के स्क्वाड्रन की तैनाती की घोषणा की थी। ऑस्टिन ने कहा कि अमेरिकी बल की स्थिति में वृद्धि इजरायल की सुरक्षा के लिए संयुक्त राज्य अमेरिका (शेष पेज 9)

ऑनलाइन खतरों से निपटेंगे साइबर कमांडो

दीपक कुमार झा। नई दिल्ली

● राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के पुलिस बलों के साथ-साथ केंद्रीय पुलिस संगठनों से जाएगी चुने जाएंगे अभ्यर्थी

अगले युग के संघर्ष साइबर-युद्ध से संबंधित हैं। इसी धारणा के आधार पर केंद्र ने साइबर हमलों के खतरे को रोकने के लिए 'साइबर कमांडो' नामक एक विशिष्ट समर्पित कार्यबल बनाने के लिए राज्य सरकारों को संगठित किया है। जनशक्ति राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के पुलिस बलों के साथ-साथ केंद्रीय पुलिस संगठनों से ली जाएगी जैसे कि विशिष्ट एनएसजी या एसपीजी कमांडो को तैयार किया जाता है।

राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों को अपने हालिया संचार में, गृह मंत्रालय (एमएचए) ने सभी पुलिस बलों से 10 उपयुक्त कर्मियों की पहचान करने को कहा है जिन्हें 'साइबर कमांडो' के रूप में नामित किया जा सकता है। प्रस्ताव के अनुसार साइबर कमांडो विंग पुलिस संगठनों का एक अभिन्न अंग होगा और इसमें सूचना प्रौद्योगिकी (आईटी) सुरक्षा और डिजिटल फोरेंसिक के क्षेत्र में विशेष योग्यता वाले कमांडो होंगे। सूत्रों ने कहा कि 'चुने गए' कमांडो को प्रशिक्षण मिलेगा और उन्हें देश के साइबर बुनियादी ढांचे के लिए बड़ी जिम्मेदारी के साथ साइबर खतरों से निपटने और मुकाबला करने में मदद करने के लिए आवश्यक प्रणालियों से लैस किया जाएगा।

गृह मंत्रालय के पत्र में निर्दिष्ट किया गया है कि विशेष नई विंग साइबर सुरक्षा के खतरों का मुकाबला करेगी, सूचना प्रौद्योगिकी नेटवर्क की रक्षा करेगी और साइबर स्पेस में जांच करेगी। एक शीर्ष सरकारी अधिकारी ने कहा, 'प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के इस दशक को टेकेड नाम देने के दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए और सरकार के संस्थानों और बुनियादी ढांचे पर उभरते साइबर हमलों का मुकाबला करने के उद्देश्य से भारत के प्रत्येक जिले के लिए ऐसी इकाई पर विचार किया गया है।' साइबर योद्धाओं का पहला ख्याल एम्स, सफदरजंग जैसे शीर्ष अस्पतालों (शेष पेज 9)

द्वितीय ब्रह्मचारिणी

दधाना करपद्माभ्यामक्षमालाकमण्डलू।
देवी प्रसीदतु मयि ब्रह्मचारिण्यनुत्तमा॥

मां दुर्गा की नवशक्ति का दूसरा स्वरूप ब्रह्मचारिणी का है। यहां ब्रह्म का अर्थ तपस्या से है। मां दुर्गा का यह स्वरूप भक्तों और सिद्धों को अनंत फल देने वाला है। इनकी उपासना से तप, त्याग, वैराग्य, सदाचार और संयम की वृद्धि होती है। ब्रह्मचारिणी का अर्थ तप की चारिणी यानी तप का आचरण करने वाली। देवी का यह रूप पूर्ण ज्योतिर्मय और अत्यंत भव्य है। इस देवी के दाएं हाथ में जप की माला है और बाएं हाथ में यह कमण्डल धारण किए हैं।

विश्व कप क्रिकेट

- **परिणाम:** अफगानिस्तान ने इंग्लैंड को 69 रन से हराया
- **आज:** ऑस्ट्रेलिया और श्रीलंका

पाक, बांग्लादेश, म्यांमा व नेपाल सीमाओं पर विकिरण जांच उपकरण लगाए जाएंगे

भाषा। नई दिल्ली

रेडियोधर्मी सामग्री की तस्करी को रोकने लिए पाकिस्तान, बांग्लादेश, म्यांमा और नेपाल की सीमा पर जल्द ही विकिरण जांच उपकरण (आरडीई) लगाए जाएंगे, ताकि परमाणु यंत्र बनाने में इसके संभावित इस्तेमाल पर लगाम लगाई जा सके। अधिकारियों ने यह जानकारी दी। अधिकारियों ने बताया कि आरडीई को एकीकृत जांच चौकी (आईसीपी) और भूमि पारगमन स्थल पर लगाया जाएगा।

यह अटारी (पाकिस्तान सीमा), पेट्रापोल, अगरतला, डावकी और सुतारकांडी (बांग्लादेश सीमा पर), रक्सौल और जोगबनी (नेपाल) और मोरेह (म्यांमा सीमा) पर लगाए जाएंगे।घटनाक्रम की जानकारी रखने वाले एक अधिकारी ने कहा कि सरकार ने विकिरण जांच उपकरणों की आपूर्ति, स्थापना और रखरखाव के लिए कार्य आदेश पिछले साल हुए एक समझौते के माध्यम से प्रदान कर दिया था और संबंधित विक्रेता जल्द ही इसकी आपूर्ति करेगा और इन्हें लगाने का काम पूरा होगा। केंद्र सरकार ने आरडीई स्थापित करने की पहल इसलिए की है ताकि अंतरराष्ट्रीय सीमाओं से रेडियोधर्मी सामग्रियों की तस्करी पर रोक लगाई जा सके। आठ आईसीपी से बड़ी संख्या में लोगों और सामानों की आवाजाही होती है।

एक अन्य अधिकारी ने बताया कि रेडियोधर्मी सामग्री की तस्करी भारत की सुरक्षा एजेंसियों के लिए एक चुनौती हो सकती है क्योंकि इसका उपयोग परमाणु उपकरण या रेडियोलॉजिकल प्रसार उपकरण बनाने के लिए किया जा सकता है। आरडीई ट्रकों और उनमें लदे सामान की निगरानी करेगा। पाकिस्तान के साथ संबंधों में मौजूदा खटास के कारण अटारी आईसीपी के माध्यम से लोगों और सामानों की आवाजाही में भारी कमी आई है, लेकिन अन्य आईसीपी पर काफी आवाजाही है। आईसीपी पर तैनात सुरक्षा एजेंसियां सीमा पार सामान की आवाजाही की निगरानी के लिए आरडीई का उपयोग कर सकती हैं। अधिकारी (शेष पेज 9)

शहरी विकास से देश बनेगा आर्थिक महाशक्तिः योगी

● कहा, इससे लोगों को शासन की योजनाओं का लाभ तो मिलेगा ही बड़े पैमाने पर रोजगार सृजन की संभावना भी बढ़ेगी

पायनियर समाचार सेवा। गोरखपुर

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने रविवार को कहा कि शहरी विकास आज की आवश्यकता है और भारत को दुनिया की आर्थिक महाशक्ति बनाने में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका होगी। शारदीय नवरात्र के पहले दिन रविवार को मुख्यमंत्री ने अपने गृह जिले गोरखपुर में 233.20 करोड़ रुपए लागत की 303 विकास परियोजनाओं का शिलान्यास एवं लोकार्पण किया।

एक आधिकारिक बयान के अनुसार, यहां नगर निगम परिसर में आयोजित समारोह में मुख्यमंत्री ने 189 विकास कार्यों का शिलान्यास और 114 विकास कार्यों का लोकार्पण किया। समारोह को संबोधित करते हुए योगी ने कहा, नगरीय विकास आज की आवश्यकता है। भारत को दुनिया की आर्थिक महाशक्ति बनाने में नगरीय विकास की महत्वपूर्ण भूमिका होगी। इससे लोगों को शासन की योजनाओं का लाभ तो मिलेगा ही, बड़े पैमाने पर रोजगार सृजन की संभावना भी बढ़ेगी।

उप्र के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने नवरात्र के पहले दिन गोरखनाथ मंदिर में वैदिक अनुष्ठान के साथ कलश स्थापित किया

बयान में कहा गया कि इस दौरान योगी के समक्ष नगर निगम एवं नेशनल थर्मल पॉवर कॉरपोरेशन (एनटीपीसी) के बीच कूड़े से चारकोल बनाने का संयंत्र स्थापित करने के लिए समझौता ज्ञापन (एमओयू) का आदान-प्रदान भी हुआ। योगी ने कहा, स्मार्ट सिटी की परिकल्पना को साकार करने के लिए सॉलिड वेस्ट मैनेजमेंट की महती भूमिका है। गोरखपुर नगर निगम ने एनटीपीसी के सहयोग से इस दिशा में बड़ा कदम बढ़ाया है। एनटीपीसी की तरफ से संयंत्र लगाए जाने के बाद नगर निकायों का कूड़ा चारकोल के रूप में बिजली उत्पादन का साधन बनेगा। मुख्यमंत्री ने कहा, नगरीय विकास के क्षेत्र में अनियोजित और अवैज्ञानिक विकास की सोच ने बड़ी समस्या खड़ी कर दी थी। जगह-जगह कूड़े का पहाड़ दिखता था। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा शुरू किए गए स्वच्छ भारत अभियान ने इस समस्या के निदान में व्यापक और सकारात्मक परिवर्तन किया है।

योगी ने कहा कि इसी कड़ी में गोरखपुर नगर निगम ने नगरीय जीवन को स्वच्छ और सुंदर बनाने के साथ आधुनिक तकनीक से वेस्ट (कचरे) को वेल्थ (संपत्ति) बनाने की पहल की है। उन्होंने कहा कि ठोस कचरे का उचित प्रबंधन न होने से कूड़ा ऐसे ही यहां-वहां फेंक दिया जाता था और शहर में प्रवेश करने पर कूड़े के ढेर के दर्शन होते थे। मुख्यमंत्री ने उम्मीद जताई, अब ऐसा संयंत्र लगने जा रहा है, जिससे कूड़े से चारकोल और सीएनजी का उत्पादन होगा। एनटीपीसी के (शेष पेज 9)

क्विक न्यूज

पूर्व मुख्य निर्वाचन आयुक्त एमएस गिल का निधन

नई दिल्ली। पूर्व मुख्य निर्वाचन आयुक्त मनोहर सिंह गिल का रविवार को दक्षिणी दिल्ली के एक अस्पताल मे निधन हो गया। वह कुछ समय से बीमार थे। उनके करीबी लोगो ने यह जानकारी दी। गिल 86 वर्ष के थे। उनके परिवार मे पत्नी और तीन बेटिया है। करीबी लोगो ने बताया कि गिल का अंतिम संस्कार सोमवार को यहां किया जाएगा। पूर्व नौकरशाह गिल ने एक युवा अधिकारी के रूप मे प्रकाश सिंह बादल के अधीन उस वक्त कार्य किया था, जब शिरोमणि अकाली दल के संरक्षक पंजाब के मुख्यमंत्री थे। गिल दिसंबर 1996 और जून 2001 के बीच मुख्य निर्वाचन आयुक्त (सीईसी) रहे थे। एक पूर्व सरकारी अधिकारी ने बताया कि जब टी. एन. शेषन निर्वाचन आयोग के प्रमुख थे, तब गिल और जीवीजी कृष्णमूर्ति को निर्वाचन आयोग का सदस्य बनाया गया था। अधिकारी ने कहा कि उसी समय (शेषन के मुख्य निर्वाचन आयुक्त रहने के दौरान) निर्वाचन आयोग को तीन सदस्यीय निकाय बनाया गया था। वह शायद राजनीति मे आने वाले पहले पूर्व सीईसी थे।

नई दिल्ली में रविवार को विश्व कप क्रिकेट मैच के दौरान इंग्लैंड का विकेट गिरने पर जश्न मनाते अफगानिस्तान के खिलाड़ी। सलामी बल्लेबाज रहमानुल्लाह गुरबाज के 57 गेंद में 80 रन के बाद मुजीबुर रहमान की अगुवाई में अपने गेंदबाजों के शानदार प्रदर्शन के दम पर अफगानिस्तान ने इस विश्व कप का सबसे बड़ा उलटफेर करते हुए गत चैम्पियन इंग्लैंड को 69 रन से हरा दिया। *विस्तृत समाचार पेज 12*

निशिकांत व महुआ के बीच फिर ठनी

● निशिकांत दुबे का आरोप, महुआ मोइत्रा ने पैसे लेकर पूछे सवाल, लोकसभा अध्यक्ष को लिखा पत्र लिखकर की सदन से निलंबन की मांग

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

झारखंड के गोड्डा से भाजपा सांसद निशिकांत दुबे ने तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) सांसद महुआ मोइत्रा पर पैसे लेकर संसद में सवाल पूछने का गंभीर आरोप लगाया है। दोनों नेताओं के बीच पहले जारी जुबानी जंग एक बार फिर से तेज हो गई है।

लोकसभा स्पीकर ओम बिड़ला को लिखी चिट्ठी में दुबे का आरोप है कि महुआ मोइत्रा सदन में सवाल पूछने के लिए बिजनेसमैन दर्शन हीरानंदानी से गिफ्ट और कैश मिला।

इस आरोप पर टीएमसी सांसद महुआ मोइत्रा ने कहा है कि प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) के मेरे दरवाजे पर आने और अन्य लोगों द्वारा अडाणी कोयला घोटाले में केस दर्ज करने का भी इंतजार कर रही हूं। निशिकांत ने लोकसभा अध्यक्ष से मांग की कि महुआ मोइत्रा के खिलाफ मामले की जांच के लिए कमेटी बनाई जाए और उन्हें सदन से निलंबित किया जाए। निशिकांत ने स्पीकर को 'री-इमरजेंस ऑफ नेस्टी कैश फॉर क्वेरी इन पार्लियामेंट' टाइटल से चिट्ठी लिखी है। इसमें विशेषाधिकारों के गंभीर उल्लंघन, सदन के अपमान और आईपीसी की धारा 120ए के तहत आपराधिक केस की बात कही है। इस मामले पर महुआ मोइत्रा ने एक्स पर लिखा, फेक डिग्री वाले और भाजपा के कई नेताओं के खिलाफ विशेषाधिकार हनन के मामले लंबित हैं। अगर स्पीकर उन सबसे निपट लेते हैं तो मैं अपने खिलाफ किसी भी प्रस्ताव का स्वागत करूंगी।

ईडी के मेरे दरवाजे पर आने और अन्य लोगों द्वारा अडाणी कोयला घोटाले में केस दर्ज करने का भी इंतजार कर रही हूं। जानकारी के मुताबिक, निशिकांत दुबे ने अपने पत्र में एक एडवोकेट जय अनंत देहाद्रई की चिट्ठी भी लगाई है। इसमें लिखा है- ऐसा प्रतीत होता है कि जय अनंत देहाद्रई ने मेहनत से रिसर्च की है, जिसके आधार पर उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि हाल तक महुआ मोइत्रा ने संसद में कुल 61 में से करीब 50 प्रश्न पूछे। इनमें दर्शन हीरानंदानी और उनकी कंपनी के व्यावसायिक हितों की रक्षा करने या उन्हें कायम रखने के इरादे से जानकारी मांगी गई थी। निशिकांत दुबे ने अपने पत्र में यह भी कहा कि 14वीं लोकसभा के दौरान 12 दिसंबर 2005 को भी ऐसा ही मामला सामने आया था। तब स्पीकर ने उसी (शेष पेज 9)

हर्बल उत्पाद व्यापार के नाम पर करोड़ों की ठगी

गोरखपुर के तीन जालसाज गाजियाबाद में गिरफ्तार, करीब सौ लोगों को दिया मोटे मुनाफे का झांसा

पायनियर समाचार सेवा। गाजियाबाद

गाजियाबाद पुलिस की साइबर क्राइम सेल ने ऐसे गैंग का रविवार को पर्दाफाश किया है, जो हर्बल उत्पाद की सप्लाई के नाम पर लोगों को ठगता था। इस गैंग के तीन लोग गिरफ्तार हैं। खुलासा हुआ है कि ये गैंग अब तक 100 से ज्यादा लोगों से करोड़ों रुपए की ठगी कर चुका है।

गाजियाबाद के ही दो मामलों में दो पीड़ितों से 29 लाख रुपए ठगे गए थे। पुलिस को इस गैंग के 32 बैंक खाते मिले हैं, जिन्हें फ्रीज कराए जाने की तैयारी है।

एडिशनल डीसीपी क्राइम सच्चिदानंद ने बताया, 16 सितंबर को नीतिखंड-1 निवासी राजेंद्र यादव ने हर्बल प्रोडक्ट की आपूर्ति व निर्यात का बिजनेस करने का झांसा देकर 20 लाख रुपए ठगे जाने की शिकायत थाना इंदिरापुरम पर दी थी। ये केस साइबर क्राइम सेल को ट्रांसफर किया गया। रविवार को इस केस में तीन अभियुक्तों की गिरफ्तारी नोएडा सेक्टर-62 अंडरपास के नजदीक से हुई है। आरोपियों की पहचान आशीष जायसवाल, उमेश शुक्ला और सत्यम कुमार गौड़ निवासी गोरखपुर के रूप में हुई है। आरोपियों से 7 मोबाइल, दो पासबुक, 5 आधार कार्ड, 4 पेनकार्ड, 47 डेबिट कार्ड, एक लाख रुपए कैश, एक कार आदि सामान बरामद हुआ है। एडीसीपी सच्चिदानंद ने बताया ये गैंग मेंबर खुद को बड़ी फर्म से बताकर हर्बल प्रोडक्ट की विदेश में सप्लाई का झांसा देकर लोगों को निवेश करने के लिए आमंत्रित करते हैं।

उन्हें बताते हैं कि अगर वे ऐसा करेंगे तो मोटा मुनाफा होगा। लोगों को झांसे में लेने के लिए इस गैंग ने गोरखपुर, अयोध्या, दिल्ली सहित कई शहरों में फर्जी फर्म संचालित की हुई हैं और उन्हीं के आधार पर 32 करंट अकाउंट खुलवाए हुए हैं।

इस तरह लोग बिजनेस के नाम पर इनके खातों में पैसा ट्रांसफर कर देते हैं। इस गैंग के सदस्य शुभम उर्फ गोलू निवासी गोरखपुर और मुल्ला अकरम निवासी दिल्ली सहित कई लोग फरार हैं। पुलिस इनकी भी गिरफ्तारी के लिए दबिशें दे रही है।

निवेश का लालच देकर जालसाज ने ठगे 21.50 लाख

गाजियाबाद। इंदिरापुरम कोतवाली क्षेत्र के वसुंधरा सेक्टर.12 के युवक से निवेश कर मुनाफा कमाने का झांसा देकर 21 लाख 50 हजार रुपये ठग लिए। पीड़ित ने रुपये मांगे तो आठ लाख रुपये और जमा कराने को कहा। पीड़ित की शिकायत मिलने पर पुलिस ने रिपोर्ट दर्ज कर ली है। गोकुलधाम सोसायटी के हितेश ने बताया उनके पास एक नंबर से कॉल आई। कॉल करने वाले ने टास्क देकर और निवेश कर मुनाफा कमाने की जानकारी दी। उन्हें टेलीग्राम के एक ग्रुप में जोड़ दिया गया। कुछ रुपये निवेश कराए और उसका मुनाफा भी दिया। फिर कई बार में 21 लाख 50 हजार रपिये जमा करा लिए। मुनाफा के साथ लौटने के लिए सर्टिफिकेट मांगा। आठ लाख रूपये की भी मांग की। तब उन्हे अपने साथ हुई ठगी का पता चला। पीड़ित ने इंदिरापुरम कोतवाली में शिकायत की। सहायक पुलिस आयुक्त इंदिरापुरम स्वतंत्र कुमार सिंह ने बताया कि आरोपितों के नंबर और बैंक खातों की डिटेल के आधार पर जानकारी जुटा जा रही है। साइबर सेल की मदद से जांच की जा रही है।

तीन महिला मित्र को खुश करने के लिए करता था चोरी, धरा

● ऐश कराने के लिए पब ले जाता था

पायनियर समाचार सेवा। गाजियाबाद

मकान और दुकान की रेकी करने के बाद ताले तोड़कर चोरी करने वाले चोर की असली कहानी सुनकर गाजियाबाद पुलिस अंचिभत हो गई।

गाजियाबाद की पॉश कॉलोनी में चोरी करने वाले शातिर चोर को क्राइम ब्रांच की टीम ने गिरफ्तार किया है। पुलिस ने उसके कब्जे से चोरी के सवा लाख रुपये, पांच चांदी के सिक्के के अलावा नकब, हथौड़ी, पेचकस, 20 चाबियां, पिट्ठू बैग व ताले तोड़ने के उपकरण आदि बरामद किए हैं। खास बात यह है कि इस शातिर चोर की तीन गर्लफ्रेंड हैं। उन्हें ऐश कराने और पब ले जाने के लिए चोरी करता था। विजयनगर का रहने वाला युवक सोनीपत के एक रेस्तरां में खाना बनाने का काम करता है। खुद 12वीं पास है, लेकिन तीन गर्लफ्रेंड रखता है। साथ ही उनके शौक भी पूरा करता है। बता दें कि चोरी के पैसों से उसने केटीएम ड्यूक बाइक भी खरीदी हुई थी, जिस पर वह अपनी गर्लफ्रेंड को घुमता है और पब ले जाकर शराब पिलाता है। टशन दिखाने को वह गर्लफ्रेंड के सामने वेटरों को एक से दो हजार रुपये की टिप देता था।

एडीसीपी क्राइम सच्चिदानंद ने बताया कि क्राइम ब्रांच प्रभारी अब्दुल रहमान सिद्दीकी ने टीम के साथ शनिवार को शातिर चोर करण जाटव पुत्र हरिश्चंद्र को गिरफ्तार किया है। उन्होंने बताया कि आरोपी सोनीपत में जिंदल ग्लोबल सिटी के पास स्पेस यू लव रेस्टोरेंट में खाना बनाता है। छुट्टी लेकर जब गाजियाबाद आता है तो यहां रैकी कर पॉश इलाकों में बंद मकान को निशाना बनाकर चोरी करता है। 7 अक्टूबर को संजीव अग्रवाल के कार्यालय का ताला तोड़कर डेढ़ लाख चोरी की।

बाइक पर लिफ्ट दी, जंगल में फोन लूटा विरोध पर टाइल्स मुंह पर मारकर हत्या

● मामले में पुलिस ने आरोपी को पकड़ा

पायनियर समाचार सेवा। गाजियाबाद

गाजियाबाद में एक शख्स ने सिर्फ मोबाइल फोन लूटने के लिए राह चलते नौजवान की हत्या कर दी। इसी मोबाइल फोन से आरोपी को पुलिस ने चार दिन में धर दबोचा। उससे हत्या में प्रयुक्त इंटरलॉकिंग टाइल्स, लूटा गया मोबाइल और वारदात में प्रयुक्त बाइक बरामद हुई है।

मूल रूप से जनपद हरदोई निवासी सुरेंद्र कन्नौजिया परिवार सहित गाजियाबाद के गांव सिहानी में रहते हैं। सुरेंद्र और उनकी पत्नी राजनगर रेजिडेंसी सोसाइटी के बेसमेंट में कपड़ों पर प्रेस करने का काम करते हैं। 8 अक्टूबर की रात सुरेंद्र का सूरज लापता हो गया। परिजनों ने कॉल की तो उसने कुछ देर में घर लौटने की बात कही।

बाद में उसका मोबाइल भी स्विच ऑफ हो गया। 10 अक्टूबर को सूरज की लाश सिहानी गांव से वीवीआईपी मॉल को जाने वाले रास्ते पर झाड़ियों में पड़ी मिली थी। एसीपी रवि कुमार सिंह ने बताया, इस मामले में नंदग्राम थाना पुलिस ने प्रशांत प्रजापति 27 वर्ष निवासी नूरनगर सिहानी को शनिवार को गिरफ्तार किया है। पूछताछ में प्रशांत ने बताया कि 8 अक्टूबर की रात करीब 11 बजे वो अपनी ड्यूटी से घर लौट रहा था। रास्ते में उसे गली के सामने मुख्य रास्ते पर एक व्यक्ति लड़खड़ाता हुआ जाता मिला। उसके हाथ में मोबाइल था। प्रशांत ने फोन छीनने की नीयत से सूरज को लिफ्ट देकर अपनी बाइक पर बैठा लिया।

उसने सूरज से कहा कि तू ज्यादा नशे में है, मैं तुझे घर छोड़ देता हूं। इस बहाने से प्रशांत, सूरज को तेजराम स्कूल के पीछे जंगल में ले गया और वहां मोबाइल छीनने लगा। सूरज ने विरोध किया तो प्रशांत ने पहले उसका गला दबाया।

छात्रा की पिटाई मामले में पांच छात्रों के खिलाफ एफआईआर

● पिता की शिकायत के बाद पुलिस ने स्कूल को नोटिस जारी किया

पायनियर समाचार सेवा। नोएडा

नोएडा के एक नामचीन स्कूल में 11वीं की छात्रा के साथ छेड़छाड़ मामले में पुलिस ने पांच छात्रों के खिलाफ एफआईआर दर्ज की है।

साथ ही स्कूल को भी नोटिस जारी किया है। छात्रा के पिता ने कहा, पहली बार छेड़खानी होने पर स्कूल प्रशासन को पूरी घटना के बारे में बताया गया था, लेकिन उन्होंने एक्शन नहीं लिया। ये पूरा मामला कोतवाली सेक्टर-39 का है। इसी इलाके के सेक्टर-100 में प्राइवेट स्कूल है।

छात्रा के पिता के मुताबिक, उनकी बेटी स्कूल में कक्षा 11वीं में पढ़ती है। 9 अक्टूबर को बेटी के साथ उसी की कक्षा में पढ़ने वाले दो स्टूडेंट्स ने छेड़छाड़ की। उसको अश्लील शब्द कहे। रेप करने की धमकी दी। पीड़िता ने इसका विरोध किया। इसके बाद बेटी ने स्कूल प्रशासन से ई-मेल से इसकी शिकायत की। उनका कहना है कि प्रिंसिपल ने कार्रवाई का आश्वासन देकर मामले को टाल दिया। पिता ने कहा, इसके बाद 3 दिन, स्कूल में कुछ नहीं हुआ। मगर 13 अक्टूबर को जब स्कूल की छुट्टी हुई और सभी लोग हॉल एरिया की तरफ थे, तब 5 छात्रों ने बेटी को घेर लिया। उसको कंधे पर धक्का दिया। थप्पड़ मारकर धमकाने लगे। एक छात्र ने छात्रा का सिर दीवार पर मार दिया। जिससे उसको चोट लगी।

शुक्रवार दोपहर छात्रा ने अपने स्कूल से ही फोन करके पिता को कि उसके साथ तीन से चार स्टूडेंट ने मारपीट की है। पिता ने तुरंत स्कूल के प्रधानाचार्य को फोन करके घटना के बारे बताया। छात्रा का कहना है कि ये लड़के मेरी ही क्लास में पढ़ते हैं।

वो मुझे सेक्शुअल एक्टिविटी में शामिल होने का दबाव बना रहे थे। अतिरिक्त पुलिस आयुक्त शक्ति अवस्थी ने बताया, पुलिस के मुताबिक, मामले में भारतीय दंड संहिता (आईपीसी) की धारा 147 (दंगा), 323 (स्वेच्छा से चोट पहुंचाना), 352 (हमला या आपराधिक बल प्रयोग), 345 ए (यौन हमला) और 506 (आपराधिक धमकी) के तहत प्राथमिकी दर्ज की गई है।

छात्रा के पिता का वीडियो वायरल

मामले से संबंधित आठ सेकेंड का एक वीडियो शनिवार को सोशल मीडिया पर वायरल हुआ है। वायरल वीडियो में पीड़ित छात्रा का पिता कह रहा है कि वह इस घटना के साथ जिंदा नहीं रह सकता है। सहमी हुई बेटी वीडियो में पापा का हाथ पकड़े हुए कमरे से बाहर निकल रही है। दोनों के पीछे अन्य लोग भी बाहर निकल रहे हैं। छात्रा के पिता ने पुलिस और स्कूल प्रबंधन से आरोपी छात्रों के खिलाफ सख्त कार्रवाई करने की मांग की है। सोशल मीडिया यूजर ने भी घटना में शामिल छात्रों के खिलाफ कार्रवाई करने की मांग की है।

संक्षिप्त समाचार

ग्राम सर्फाबाद में आयोजित दंगल में प्रतिभागी और पदाधिकारी।

ग्राम सर्फाबाद में दंगल का हुआ समापन

नोएडा। रविवार को ग्राम सर्फाबाद में प्रधान श्याम सिंह की याद में 33 वा दंगल संपन्न हुआ दंगल में 500 पहलवानों ने भाग लिया इसमें सबसे बड़ी कुश्ती कलुआ पहलवान अखाड़ा गुरु हनुमान, रोहित पहलवान अखाड़ा गुरु तेज सिंह, के बीच 400000 की कुश्ती बराबरी पर छूटी दोनों पहलवानों का हाथ केंद्रीय राज्य मंत्री बीएल वर्मा ने मिलकर कुश्ती का शुभारंभ कराया दंगल की दूसरी नंबर की 251000 की कुश्ती उपकार शर्मा गुरु सुखबीर खलीफा व सुमित खड़खड़िया गुरु हनुमान के बीच बराबरी पर रही दंगल का आयोजन प्रधान श्याम सिंह के सुपुत्र एमएलसी जितेंद्र यादव प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य भाजपा व विक्रांत यादव ब्लॉक प्रमुख सहसवान ने किया ऋषभ पहलवान गुरु सुखबीर ने गोलू पहलवान अखाड़ा बामेटा को हराया दंगल में लाखों रुपए के इनाम बांटे गए दंगल में मलखान पहलवान रणपाल पहलवान सूबे पहलवान आदि पूर्व पहलवान उपस्थित रहे।

सोशल मीडिया पर आपत्तिजनक पोस्ट, युवक गिरफ्तार

नोएडा। सोशल मीडिया ट्विटर अकाउंट पर आपत्तिजनक पोस्ट करने वाले युवक को पुलिस ने गिरफ्तार किया है। आरोपी ने 21 जुलाई 2023 को आपत्तिजनक पोस्ट किया था। इस घटना को डेढ़ महीने हो गए है, अब जाकर पुलिस आरोपी तक पहुंच पाई। डेढ़ महीने तक आरोपी जेवर कोतवाली पुलिस के पकड़ में नहीं आया। जिस युवक को पुलिस ने गिरफ्तार किया है। उसका नाम वाजिद है। वाजिद के ट्विटर अकाउंट पर राहुल गांधी की फोटो लगी हुई है। इसके अलावा बीते 9 अप्रैल को वाजिद ने ट्विटर करते हुए लिखा था कि राहुल गांधी देश का लीडर है और नरेंद्र मोदी डीलर है। इस मामले में पुलिस से बातचीत की गई। जेवर कोतवाली प्रभारी मनोज कुमार सिंह ने बताया कि इस पोस्ट को लेकर वाजिद को गिरफ्तार नहीं किया गया है। वाजिद ने 21 जुलाई को एक पोस्ट किया था, जो काफी आपत्तिजनक था। उस मामले में पुलिस ने आरोपी को गिरफ्तार किया है।

दुर्गा पूजा और विजयदशमी महोत्सव का आयोजन

नोएडा। नोएडा महर्षी नगर महर्षि वेद महर्षि वेद विज्ञान विद्यापीठ के द्वारा महर्षि नगर में शारदीय नवरात्र विजय दशमी उत्सव महोत्सव एवं रामलीला मंचन किया जा रहा है, मीडिया प्रभारी के लाल ने बताया की 15 अक्टूबर को प्रात: मां दुर्गा को मां दुर्गा के नव दिवसीय का पूजन का शुभारंभ किया जा रहा है नवरात्र के साथ ही सायंकाल में श्री रामलीला के मंचन का शुभारंभ हो रहा है। भारी संख्या में उपस्थित लोगों के बीच पहले दिन राम लक्ष्मण भारत और शत्रुघ्न के जन्म प्रसंग के मनमोहक मंचन का दर्शकों ने आनंद लिया। महर्षि वेद विज्ञान विद्यापीठ के प्रभारी शिशिर श्रीवास्तव में जानकारी देते हुए बताया कि 15 अक्टूबर से 25 अक्टूबर तक प्रतिदिन प्रात: 9.00 बजे से दुर्गा पूजन पाठ एवं सायंकाल 7.00 बजे से दुर्गा पूजा का पाठ एवं आरती होगी। 24 अक्टूबर को विजयदशमी महोत्सव कथा रावण का दहन किया जाएगा। अगले दिन 25 अक्टूबर को भरत मिलाप और राजतिलक का मंचन किया जाएगा। महर्षि संस्था के अध्यक्ष अजय प्रकाश ने बताया कि भगवान राम के भांति की धर्म संस्कृति की धुरी है और आज भी मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम की चरित्र भारतीय जनमानस की पर मार्ग पर चलने और पारिवारिक तथा सामाजिक स्तर पर मर्यादित जीवन देने, जीने की प्रेरणा देता है। इस अवसर पर विनीत श्रीवास्तव, विनोद श्रीवास्तव, श्रीकांत ओझा, राघवेंद्र यादव कमलेश यादव, रामेंद्र सचान, एलएस सोम, विनोद दीक्षित संतोष श्रीवास्तव लल्लन पाठक एवं नरेंद्र सिंह तथा कई गणमान्य लोग मौजूद थे।

सोसाइटी की लिफ्ट में फंसे मां-बेटे

पायनियर समाचार सेवा। गाजियाबाद

गाजियाबाद के सिद्धार्थ विहार की प्रतीक ग्रैंड सोसाइटी के पायोनिया टावर संख्या पी 6 के निवासी आकाश शर्मा की पत्नी गुरप्रीत कौर और बड़ा बेटा निमित्त शर्मा देर रात 10.12 बजे लिफ्ट में फंस गए। लिफ्ट फ्री फाल होकर लेवल 2 पर पहुंच गई। उसके बाद अचानक दोबारा फ्लोर पर आ गई। परिवार का कहना है कि लिफ्ट का इंटरकॉम और अलार्म नहीं बजा। वह जैसे तैसे लिफ्ट से निकलीं।

विजयनगर पुलिस को इस मामले में शिकायत दी गई है। पुलिस ने मुकदमा दर्ज किया गया है। कल रात ही उन्होंने एस्टेट मैनेजर, वीपी एडमिन और लिफ्ट देख रही टीम को भी सूचित किया है। लोगों का कहना है कि खानापूर्ति के लिए सर्टिफिकेट लगाए गए हैं। गाजियाबाद के सिद्धार्थ विहार स्थित प्रतीक ग्रैंड सोसायटी की लिफ्ट अचानक खराब हो गई। उसमें मां-बेटे फंस गए। लिफ्ट के अंदर की सीसीटीवी में घटना रिकॉर्ड हो गई है। लिफ्ट 10वें तल से बेसमेंट में चली गई। लिफ्ट फ्री फॉल होकर नीचे आ गई थी। पीड़ित का कहना है कि बिना एनओसी लिए ही बायर्स को बिल्डर पजेशन दे देते हैं। कहीं ना कहीं बायर्स की जान हमेशा खतरे में बनी रहती है।

दिल्ली एनसीआर में लगातार लिफ्ट गिरने के हादसे बढ़ते जा रहे हैं। सिद्धार्थ विहार में ऐसे भी बिल्डर हैं, जिन्होंने ईडब्ल्यूएस व एलआईजी फ्लैट तक नहीं बनाए हैं। फिर भी बिल्डर के हौसले इतने बुलंद है कि वह बिल्डिंग 80 प्रतिशत तक बायर्स को बेच चुके हैं, लेकिन आवास विकास परिषद मौन बन कर हादसों का इंतजार करता रहता है। प्रतीक ग्रैंड सोसाइटी के बिल्डर को दोषी मानते हुए आकाश शर्मा ने एक शिकायत विजयनगर थाने में दी है। उसमें उन पर कई गंभीर आरोप लगाए हैं। शिकायत मिलने पर विजयनगर थाने में मामला दर्ज कर लिया गया है।

नवरात्र में नकली कुट्टू के आटे की बिक्री को लेकर खाद्य विभाग सतर्क

● टीम ने कई दुकानों पर जाकर किया निरीक्षण

पायनियर समाचार सेवा। गाजियाबाद

नवरात्र को लेकर बाजार में मिलावटी कुट्टू का आटा बिकने लगा है। कुछ बड़े दुकानदारों ने पिछले साल के आटे को भी बिक्री के लिए छोटी.छोटी दुकानों पर भेजना शुरू कर दिया है। खाद्य सुरक्षा एवं औषधि विभाग की टीम सतर्क हो गई है।

शनिवार को शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों के बाजारों में पहुंचकर टीमों ने कुट्टू के आटे को लेकर आकस्मिक निरीक्षण किया। सहायक आयुक्त विनीत कुमार ने बताया कि मोदीनगर, लोनी, मुरादनगर और साहिबाबाद में विशेष सतर्कता बरती जा रही है। पिछले एक साल में कुट्टू के आटे के 27 नमूने लेकर जांच को राजकीय प्रयोगशाला में भेजे गए थे। इनमें से 11 नमूने फेल हुए हैं।

चार नमूनों की रिपोर्ट में आटे को सेहत के लिए हानिकारक बताया गया है। आटा बिक्री करने वालों के खिलाफ सक्षम कोर्ट में वाद दायर किया गया है। पिछले छह साल में विभाग द्वारा 23271 निरीक्षण करते हुए 3856 खाद्य सामग्रियों के नमूने लेकर जांच को राजकीय प्रयोगशालाओं में भेजे गए।

इनमें से 1647 नमूने जांच रिपोर्ट में फेल पाये गए। 1470 मिलावटखोरों के खिलाफ कोर्ट द्वारा निर्णय सुनाते हुए 6.82 करोड़ का जुर्माना लगाया गया। सर्वे में पता चला है कि शहर में पंजीकृत 28000 खाद्य सामग्री विक्रेताओं में से अधिकांश मिलावटी खाद्य सामग्री बेचकर लोगों की सेहत खराब कर रहे हैं।

किसानों ने बिल्डर से मुक्त कराई जमीन, अनिश्चितकालीन धरना शुरू

● खेतों पर गड्ढ़े खोदकर चलाया अनोखा अभियान

पायनियर समाचार सेवा। नोएडा

ग्रेटर नोएडा क्षेत्र की दादरी तहसील में भूमाफिया बिल्डर का अवैध धंधा लगातार जारी है। इस अवैध धंधे को रोकने के लिए किसानों ने एक बार फिर जोरदार हुंकार भरी है। किसानों ने बड़ी संख्या में एकत्र होकर बील अकबरपुर व उसके आसपास के गांवों में अनोखा अभियान चलाया।

बिल्डर द्वारा जिन किसानों के खेतों पर गड्ढ़े खोदकर कब्जा लिया जा रहा था, उस कब्जे को ग्रेटर नोएडा क्षेत्र के किसानों ने बिल्डर से वापस छीन लिया है।

साथ ही बिल्डर के दफ्तर के बाहर अनिश्चितकालीन धरना भी शुरू कर दिया है। ग्रेटर नोएडा क्षेत्र में सक्रिय किसान नेता सुनील फौजी ने बताया कि बिल्डरों द्वारा किसानों के साथ की गई वादा खिलाफी और धोखाधड़ी के प्रतिरोध में 1 अक्टूबर 2023 को ग्रेटर नोएडा के बील अकबरपुर गांव में हुई किसान पंचायत और 9 अक्टूबर को हुए जिला कलेक्ट्रेट के घेराव कार्यक्रम के बाद भी शासन प्रशासन ने किसानों को एक समान नीति एवं नए भूमि अधिग्रहण कानून के लाभ दिए जाने की मांग के बारे में अभी तक कोई संज्ञान नहीं लिया।

उन्होंने बताया कि बिल्डर द्वारा भी आए दिन षड्यंत्र के तहत अलग अलग स्थानों पर बाउंसरों को साथ लेकर किसानों के खेतों पर गड्ढ़े कराकर कब्जे किए जाने की साजिशें रची जा रही थीं। सुनील फौजी ने बताया किसानों की समस्या को ध्यान में रखते हुए संयुक्त किसान मोर्चा के आह्वान पर शनिवार को भोगपुर गांव में बुलाई गई सभी संगठनों की मीटिंग में सर्वसम्मति से लिए गए निर्णय के अनुसार जिन किसानों के खेतों पर जबरन गड्ढ़े किए गए थे उन्हें भरवाकर वापस किसानों का कब्जा किए जाने और बिल्डर के खिलाफ तत्काल आंदोलन शुरु किए जाने की रणनीति बनाई गई थी। सुनील फौजी ने आगे बताया कि बैठक में लिए गए निर्णय के तहत किसानों ने खेतों पर पुन: अपना कब्जा कर लिया और बिल्डर के कार्यालय पर प्रदर्शन किया। इसी कड़ी में रविवार से बिल्डर के कार्यालय के बाहर

राकेश टिकैत ने भरी हुंकार, बोले-झूठे मुकदमे का जवाब हम देंगे

नोएडा। गौतमबुद्ध नगर पुलिस ने बीते 12 अक्टूबर को भारतीय किसान यूनियन के प्रदेश अध्यक्ष पवन खटाना समेत 10 लोगों के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया था। इन लोगों पर धोखाधड़ी और घोटाले के आरोप है। इस मामले के बाद अब सभी किसान संगठनों में पुलिस के खिलाफ भयंकर रोष व्याप्त हो गया है। किसानों का आरोप है कि गरीबों की लड़ाई लड़ने वाले पवन खटाना को फर्जी मुकदमे में फंसाया गया है। इसके खिलाफ भारतीय किसान यूनियन के राष्ट्रीय प्रवक्ता राकेश टिकैत ने हुंकार भारी है। राकेश टिकैत ने कहाए हम गौतमबुद्ध नगर में किसान के ऊपर दर्ज हुए मुकदमे की बात कर रहे हैं, जहां पर पुलिस ने फर्जी मुकदमे दर्ज किए है।

गौतमबुद्ध नगर के बिल्डरों रेरा ने दिया झटका

● अब घर खरीदारों का पैसा नहीं होगा बर्बाद, डेबिट कार्ड के साथ नेट बैंकिंग और चेक बुक पर लगाई रोक

पायनियर समाचार सेवा। नोएडा

यूपी रेरा ने एक बार फिर गौतमबुद्ध नगर के बिल्डरों को झटका दिया है। यूपी रेरा ने फैसला सुनाते हुए कहा कि अब किसी भी बिल्डर को डेबिट कार्ड, चेक बुक और नेट बैंकिंग की सुविधा नहीं मिलेगी।

यूपी रेरा की तरफसे इस आदेश की कॉपी सभी बैंक के पास भेज दी गई है। इसके अलावा कहा गया है कि केवल मुख्य प्रमोटर के नाम पर बैंक अकाउंट खुल सकता है। बाकी बैंक अकाउंट मान्य नहीं होंगे। इसकी निगरानी खुद बैंक को करनी पड़ेगी। यूपी रेरा की तरफसे राज्य स्तरीय बैंक का समिति को पालन करने के लिए रिपोर्ट भेजी गई है। आपको बता दें कि बीते 24 दिसंबर 2020 में यूपी रेरा ने एक आदेश जारी किया था।

आदेश के मुताबिक 1 अप्रैल 2021 से पंजीकृत होने वाले प्रमोटर के तीन बैंक खाते होंगे। इनमें सेपरेट, कलेक्शन और ट्रांजैक्शन अकाउंट है। रिपोर्ट के मुताबिक प्रमोटर से जुड़ा पैसा कलेक्शन अकाउंट में जाएगा। इसके अलावा बैंक को खुद ही 40 प्रतिशत राशि सेपरेट और 30 प्रतिशत राशि ट्रांजैक्शन अकाउंट में भेजनी होगी। इसी के साथ अब यूपी रेरा ने सेपरेट और कलेक्शन अकाउंट में बिल्डरों की डेबिट कार्ड, चेक बुक व नेट बैंकिंग की सुविधा देने पर रोक लगा दी है। मतलब अब सेपरेट और ट्रांजैक्शन अकाउंट से बिल्डर को कोई धनराशि नहीं दी जाएगी, ना ही चेक बुक का इस्तेमाल होगा और ना ही नेट बैंकिंग होगी। अधिकारियों ने कहा है कि दोनों अकाउंट की धनराशि केवल प्रमोटर पर ही खर्च की जाएगी। इस सुविधा के बाद बिल्डर के द्वारा घर खरीदारों के पैसा का गलत इस्तेमाल नहीं किया जा सकता।

इसी वजह से तीनों सुविधा पर रोक लगा दी गई है। इस संबंध में सभी बैंकों का आदेश भी दिया गया है। केवल मुख्य प्रोजेक्ट के नाम पर बैंक खाता खोलने की अनुमति है।

किरायेदार को घर से निकाला तो बेटी का फोटो किया वायरल

पायनियर समाचार सेवा। गाजियाबाद

● चार लोगों के खिलाफ मामला दर्ज

सिहानी गेट थाना क्षेत्र में रहने वाले पीड़ित का आरोप है कि जब उसने किरायेदारों से अपना घर खाली कराया तो उसने उसकी नाबालिग बेटी की फोटो सोशल मीडिया पर वायरल कर दी। इससे उसकी बेटी की समाज में बदनामी हो रही है।

पीड़ित ने थाने में शिकायत देकर चार लोगों के खिलाफ मुकदमा दर्ज कराया है। लगभग एक वर्ष पहले शिवम तोमर सिहानी गेट थाना क्षेत्र निवासी के घर किराये पर रहने आया था। पीड़ित ने बताया कि वह एक निजी कंपनी में काम करता है। किराये के कमरे में शिवम तोमर के साथ अन्य तीन युवक भी रहते थे, जिनका नाम नीरज, अनुज और अंकित है। एक दिन जब उसे पता चला कि उसकी नाबालिग बेटी के साथ शिवम तोमर के संबंध हैं, तो उसने दो माह पहले कमरा खाली करा लिया। पीड़ित का आरोप है कि अब शिवम तोमर ने सोशल मीडिया अकाउंट इंस्टाग्राम पर उसकी नाबालिग बेटी की तस्वीर को एडिट कर सोशल मीडिया पर फर्जी अकाउंट बनाकर डाल दिया है।

इससे उसकी काफी बदनामी हो रही है। जब शिवम तोमर से पीड़ित ने उसकी बेटी के फोटो डिलीट करने को कहा तो उसने जान से मारने की धमकी देते हुए गाली गलौज भी की। इसके बाद पीड़ित आरोपी शिवम तोमर के खिलाफ थाने में शिकायत दी है। पुलिस का कहना है कि पीड़ित की तहरीर पर मामला दर्ज कर लिया गया है। आरोप के आधार पर जांच की जा रही है।

पायनियर
नई दिल्ली, सोमवार, 16 अक्टूबर, 2023

जेएनयू में बाइक की टक्कर से छात्र की मौत

परिसर में रात ढाई बजे हुआ हादसा, तीन जख्मी, दो की हालत गंभीर

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय (जेएनयू) परिसर में एक मोटरसाइकिल सवारों ने पैदल चलने वाले दो लोगों को टक्कर मार दी, जिससे इस घटना में 22 वर्षीय एक छात्र की मौत हो गई जबकि तीन अन्य लोग घायल हो गए। पुलिस ने यह जानकारी दी। पुलिस के मुताबिक, दुर्घटना शनिवार-रविवार की रात ढाई बजे की है, जब मोटरसाइकिल सवार दो छात्रों ने गोदावरी छात्रावास की ओर जा रहे दो छात्रों को जबरदस्त टक्कर मार दी। उन्होंने बताया कि मरने वाले छात्र की पहचान अंशु कुमार के रूप में हुई है, जो रूसी भाषा में कला स्नातक का प्रथम वर्ष का छात्र था।

उन्होंने बताया कि पैदल चल रहे व्यक्तियों की पहचान सचिन शर्मा और मृगांक यादव के रूप में हुई है। पुलिस के मुताबिक, सचिन की हालत गंभीर है वहीं मृगांक स्थिर अवस्था में है और दोनों विश्वविद्यालय में राजनीति विज्ञान में स्नातकोत्तर की पढ़ाई कर रहे हैं। पुलिस के अनुसार, मृतक समेत दो छात्र बाइक पर थे, जब उन्होंने सुबह गोदावरी बस स्टॉप के पास दो अन्य को टक्कर मार दी। मारा गया 22 वर्षीय अंशू कुमार परिसर में सतलुज हॉस्टल में रहता था और रूसी अध्ययन में बीए प्रथम वर्ष का छात्र था। डॉक्टरों ने बताया कि उसकी मौके पर ही मौत हो गई।

बाइक पर बैठे उनके दोस्त 23 वर्षीय विशाल कुमार को भी चोटें आईं और उनका इलाज चल रहा है। विशाल, जो कि जेनयू का छात्र नहीं है, और अंशू बिहार के गया में एक ही गांव के रहने वाले हैं। डीसीपी (दक्षिण-पश्चिम) मनोज सी ने कहा कि उन्हें सुबह-सुबह एम्स ट्रॉमा सेंटर से जेएनयू में दुर्घटना के बारे में फोन आया। उन्होंने बताया कि एक तेज रफ्तार बाइक ने विश्वविद्यालय परिसर के अंदर दो पैदल यात्रियों को टक्कर मार दी थी।

जांच अधिकारी को घटनास्थल और अस्पताल भेजा गया। पुलिस ने पाया कि बाइक ने दो अन्य छात्रों को टक्कर मारी और बाद में सड़क के किनारे दुर्घटनाग्रस्त हो गई। चारों छात्रों को अस्पताल ले जाया गया।

घटनास्थल का निरीक्षण करने के लिए अपराध और फोरेंसिक टीमों को बुलाया गया और अज्ञात व्यक्तियों के खिलाफ लापरवाही और लापरवाही से गाड़ी चलाने से संबंधित भारतीय दंड संहिता (आईपीसी) की धाराओं के तहत मामला दर्ज किया गया है। पुलिस ने बताया कि दुर्घटना उस समय हुई जब केटीएम बाइक, जिस पर मृतक और उसका दोस्त यात्रा कर रहे थे, दो पैदल यात्रियों से टकरा गई। सतुलज हॉस्टल में रहने वाला अंशू कुमार बाइक चला रहा था। वह बिहार के गया का रहने वाला था। वह अंशू जेएनयू में रूसी भाषा में बीए प्रथम वर्ष की पढ़ाई कर रहा था।

रविवार को राजधानी के चितरंजन पार्क में दुर्गा पूजा उत्सव को लेकर एक कारीगर मां देवी दुर्गा की मूर्तियों को अंतिम रूप देता हुआ। फोटो: रंजन डिमरी

बवाना से रिठाला मेट्रो स्टेशन जाना हुआ आसान

- मंत्री ने इलेक्ट्रिक बसों को हरी झंडी दिखाकर किया रवाना

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

बवाना गांव के लोगों को अब रिठाला मेट्रो पहुंचना आसान होने के साथ सुविधाजनक हो गया है। दिल्ली के परिवहन मंत्री कैलाश गहलोत ने रविवार को चार नई इलेक्ट्रिक बस को रूट 990सी को हरी झंडी दिखाकर शुभारंभ किया।

इस अवसर पर कैलाश गहलोत ने कहा कि दिल्ली में सार्वजनिक परिवहन नेटवर्क को बढ़ाने के यह रूट शुरू किया गया है। कैलाश गहलोत ने बवाना चौक पर इलेक्ट्रिक बसों को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया।

इस नए बस मार्ग के शुरू होने से दिल्ली के उत्तर-पश्चिमी हिस्से में बवाना गांव, बवाना औद्योगिक क्षेत्र, बरवाला, पूठ खुर्द, प्रह्लादपुर और उसके आसपास के इलाकों में रहने वाले लोगों को रिठाला मेट्रो स्टेशन आने-जाने में आसानी होगी। इस अवसर पर परिवहन मंत्री ने कहा, मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल के कुशल नेतृत्व में, हम दिल्ली की परिवहन व्यवस्था को बेहतरीन बनाने के लिए प्रतिबद्ध हैं और इस दिशा में हम लगातार काम कर रहे हैं। 990सी बस मार्ग की शुरुआत दिल्ली के नागरिकों के लिए सुविधाजनक विश्वस्तरीय सार्वजनिक परिवहन विकल्प प्रदान करने की हमारी प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

इस बस रूट के शुरू होने से बवाना गांव, बवाना औद्योगिक क्षेत्र और आसपास के गांवों बरवाला, पूठ खुर्द और प्रहलादपुर में रहने वाले लोगों को आने-जाने के लिए बेहतर परिवहन विकल्प उपलब्ध होंगे।

रोहतक मार्ग पर जल निकासी होगी बेहतर

नई दिल्ली। रोहतक मार्ग पर नागलोई मेट्रो स्टेशन और टिकरी बॉर्डर के बीच सड़क पर जलभराव की स्थिति को रोकने के लिए जल निकासी व्यवस्था को बेहतर बनाया जाएगा।

पीडब्ल्यूडी मंत्री आतिशी ने अधिकारियों के साथ नांगलोई मेट्रो से टीकरी बॉर्डर के बीच की सड़क के रिडिजाइनिंग प्लान पर समीक्षा बैठक की। पीडब्ल्यूडी मंत्री आतिशी ने निर्देश पर इंजीनियर यहाँ एक्सपर्ट्स के साथ सर्वे कर इस पूरे रोड स्ट्रेच के रिडिजाइनिंग का विस्तृत प्लान तैयार कर रहे है। समीक्षा बैठक में मंत्री आतिशी ने इसके प्रगति की जाँच की। बयान के मुताबिक, दिल्ली लोक निर्माण विभाग की मंत्री आतिशी ने सड़क की पुर्नसंरचना पर अधिकारियों के साथ एक समीक्षा बैठक की।

ईडी अधिकारी बनकर लूट ले गए 3.20 करोड़

- जबरन घर में घुसकर बदमाशों ने वारदात को दिया अंजाम, पुलिस महकमें में हड़कंप

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

पुलिस गिरफ्त में मामले का मुख्य आरोपी।

राजधानी के बाबा हरिदास नगर क्षेत्र में बदमाशों ने खुद को ईडी का अधिकारी बताकर लूट को अंजाम दिया।

घटना की जानकारी मिलने के बाद पुलिस ने एक कार पकड़ी है, जिससे 70 लाख रुपये बरामद किए हैं। पुलिस ने बताया कि बाबा हरिदास नगर इलाके में स्थित एक घर में खुद को ईडी का अधिकारी बताकर घुसे और घर से 3.20 करोड़ रुपये लूटकर फरार हो गए। पीड़ित व्यक्ति ने आरोपितों के घर से निकलने के बाद पीसीआर कॉल कर घटना की सूचना दी। उन्होंने कॉल पर बताया कि छह लोग मेरे घर आए और कहा कि हम ईडी विभाग से हैं और उन्होंने मेरे घर से 3 करोड़ रुपये लूट लिए हैं। वे दो कारों में आए थे। उन सभी के पास बंदूकें थीं।

चोरी को अंजाम देने के बाद आरोपी खतरनाक और संदिग्ध तरीके से कार चला रहा था। संदेह होने पर पीसीआर स्टाफ ने आरोपी को रोका तो वह भाग गया। इसके बाद पुलिस ने आरोपी का दो किलोमीटर तक पीछा करते हुए बदमाश को गिरफ्तार कर लिया है।

पकड़े गए व्यक्ति की तलाशी लेने पर उसके पास से एक पिस्तौल, 4 कारतूस और 70 लाख रुपये नकद बरामद हुए है। आगे पूछताछ करने पर पता चला कि वह बाबा हरि दास नगर में डकैती में शामिल टीम का ही सदस्य था।

पुलिस ने बताया कि आरोपित को गिरफ्तार कर स्थानीय पुलिस को सौंप दिया है। पुलिस टीम आरोपी से लूट में शामिल अन्य लोगों को लेकर पूछताछ की जा रही है और बदमाशों की तलाश में कई जगहों पर

अमृतकाल के प्रतिनिधि हस्ताक्षर हैं युवा : कुलपति

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

- तीन दिवसीय यूथ कॉन्क्लेव विमर्श का समापन, विद्वानों ने विभिन्न विषयों पर किया मंथन

दिल्ली विश्वविद्यालय के कुलपति योगेश सिंह ने कहा की युवा अमृतकाल के प्रतिनिधि हस्ताक्षर हैं। उन्हें भारत को समरस श्रेष्ठ और शक्ति संपन्न बनाने में अपनी निर्णायक भूमिका निभानी होगी।

कुलपति ने यह बयान युवा (यूथ यूनाइटेड फॉर विजन एंड एक्शन) द्वारा आयोजित यूथ कॉनक्लेव 'विमर्श' के तीसरे दिन समापन समारोह के दौरान दिया। कॉनक्लेव के मुख्यवक्ता सुरेश सोनी ने कहा कि देश एक ऐसे पड़ाव पर आ गया है जब आगे की ओर कूच करना है तो एक संकल्प रखा गया कि स्वाधीनता के 100 वर्ष मे भारत कैसा होगा। इस पूरी दुनिया मे विशेषण हमारे देश को मिले हैं चाहे वो सोने की चिड़िया हो या विश्व गुरु का। उन्होंने कहा कि भारत सबसे तेजी से उभरती हुई अर्थव्यवस्था है। आज के समय में जनसंख्या नही बल्कि युवा कैसा हो प्रश्न ये है। कॉनक्लेव में देशभर से आमंत्रित विद्वानों ने विभिन्न विषयों पर युवाओं से संवाद किया। कला, सोशल मीडिया, पत्रकारिता, नीति कानून एवं राजव्यवस्था से लेकर सांस्कृतिक विषयों पर विचार मंथन हुआ जिसमें शोधकर्ता, लेखक और शैक्षणिक संस्थाओं में अध्ययनरत युवा शामिल हुए। मध्यभारत के सबसे बड़े बौद्धिक महाकुंभ विमर्श के समापन समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में अशोक अग्रवाल, प्रो. अंजू सेठ, प्रो. दयाशंकर तिवारी, प्रो. हरिंदर सिंह शामिल हुए।

सिपाही ने खुद को मारी तीन गोलियां, हालत गंभीर

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

- पुलिस को मौके से नहीं मिला सुसाइड नोट

उत्तर-पूर्वी दिल्ली के मान सरोवर पार्क में दिल्ली पुलिस की पहली बटालियन में तैनात सिपाही मंदीप ने अत्याधुनिक इंसास राइफल से सीने में तीन गोली मार ली। गंभीर हालत में उन्हें पटपड़गंज स्थित मैक्स अस्पताल में भर्ती कराया गया है।

सिपाही के पास से कोई सुसाइड नोट बरामद नहीं हुआ है। इसलिए गोली मारने के कारण की जानकारी पुलिस को नहीं मिल पाई है। मानसरोवर पार्क थाना पुलिस मामले की जांच कर रही है।

डीसीपी पीसीआर आनंद कुमार मिश्रा के मुताबिक पीसीआर को शनिवार देर रात 2.37 बजे कॉल मिली। मौके पर पहुंची पीसीआर ने उसे तुरंत मैक्स अस्पताल में भर्ती करा दिया। मंदीप मूलरूप से हरियाणा के भिवानी का रहने वाला है। परिवार में पत्नी व एक बेटी है। उसकी फैमिली भिवानी में ही रहती है। कुछ सालों से उसकी तैनाती दिल्ली पुलिस की पहली बटालियन में है। वह दिल्ली में अकेले रहता है।

दिल्ली पुलिस में एक से लेकर 12 बटालियन पुलिस हैं। हर जिले के विभिन्न थानों में रिजर्व पुलिस के तौर बटालियन पुलिस के रहने के लिए बैरक की व्यवस्था की गई है ताकि किसी जिले को कोई इमरजेंसी पड़ने पर वहां से तुरंत अतिरिक्त पुलिस बल को मौके पर भेजा जा सके। मान सरोवर पार्क थाने में पहली बटालियन का बैरक है जहां पर मंदीप की शनिवार रात से सुबह तक ड्यूटी थी। ड्यूटी के दौरान उसने सरकारी इंसास राइफल से एक के बाद तीन गोली सीने में मार ली। उसके हाथ पर गन शॉट के पाउडर मिले हैं।

जांच से पता चला है कि उसने ब्रस्ट मोड पर बटन को सेट नहीं किया था। इंसास की मैग्जीन में कई गोलियां भरी हुई पाई गई। पुलिस का कहना है कि अगर वह ब्रस्ट मोड पर बटन को सेल करके ट्रिगर को दबाता तब मैग्जीन में भरी हुई सभी गोलियां निकल जाती।

दिल्ली में भाजपा के सातों सांसदों को हराएंगे : लवली

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

केंद्र की भाजपा सरकार की नीतियों और दिल्ली के सातों सांसदों द्वारा जनता की उपेक्षा करने का आरोप लगाते हुए कांग्रेस ने दिल्ली प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष अरविन्दर सिंह लवली के नेतृत्व में रविवार को जंग का ऐलान किया है।

उत्तरी पश्चिमी दिल्ली संसदीय क्षेत्र के बवाना में जवाब दो-हिसाब दो अभियान के प्रथम चरण में आयोजित प्रतिज्ञा रैली में हजारों नागरिकों व कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने सभी सातों सीटों पर भाजपा को हराने व दिल्ली में नफरत की दुकान बंद करके मोहब्बत की दुकान को प्रसारित करने की प्रतिज्ञा ली। रैली की अध्यक्षता किराड़ी जिला कांग्रेस के अध्यक्ष एवं पूर्व विधायक सुरेन्द्र कुमार कर रहे थे व रोहिणी जिला अध्यक्ष विशाल मान भी उनके साथ मौजूद थे। बवाना के झंडा चौक पर ग्रामीण, झुग्गी झौपडी वाले, मजदूर, किसान, महिलाऐं, नौजवान सैंकड़ों की संख्या में लोग भाजपा के खिलाफ जोरदार नारेबाजी करते हुए बवाना के झंडा चौक पर इकट्ठा होने शुरु हो गए थे। लंबे समय के बाद कांग्रेस के कार्यकर्ता हाथों में तिरंगा झंडा लिए सड़कों पर नारेबाजी करते हुए दिखाई पड़ रहे थे।

बवाना में कांग्रेस का जवाब दो-हिसाब दो अभियान में प्रदेश अध्यक्ष लवली व अन्य।

संक्षिप्त समाचार

सीएम हाउस प्रदर्शनी का उद्घाटन करते प्रदेश अध्यक्ष वीरेन्द्र सचदेवा।

सचदेवा ने सीएम हाउस प्रदर्शनी का किया उद्घाटन

नई दिल्ली। दिल्ली भाजपा अध्यक्ष वीरेन्द्र सचदेवा ने रविवार को नेता प्रतिपक्ष रामवीर सिंह बिधूड़ी, राष्ट्रीय महामंत्री दुष्यंत गौतम ने मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल के सरकारी घर के अंदर की सचित्र व सजीव दो दिवसीय प्रदर्शनी का उद्घाटन किया। इस मौके पर सांसद मनोज तिवारी, पूर्व सांसद विजय गोयल, प्रदेश महामंत्री योगेन्द्र चंदौलिया, प्रदेश उपाध्यक्ष दिनेश प्रताप सिंह, योगिता सिंह, लता गुप्ता एवं कपिल मिश्रा, प्रदेश मंत्री बांसुरी स्वराज एवं किशन शर्मा, महिला मोर्चा अध्यक्ष ऋचा पांडेय मिश्रा समेत बड़ी संख्या में पदाधिकारी व कार्यकर्ता मौजूद थे।

रामलीला: श्री गणेश पूजन,शंकर-पार्वती संवाद

नई दिल्ली। आदर्श रामलीला कमेटी अशोक विहार फेस 2 के मंच पर श्री गणेश पूजन, शंकर पार्वती संवाद, नारद मोह, रावण तपस्या एवं वैदवती संवाद की लीला का मंचन निपुण कलाकारों के द्वारा किया गया। शंकर पार्वती संवाद व नारद मोह की लीला देख दर्शक मंत्र मुग्ध हो गए। पहाड़, बन, झरना आदि का प्राकृतिक दृश्य मनमोहक था। रामलीला का उद्घाटन वीरेंद्र सचदेवा अध्यक्ष भाजपा दिल्ली प्रदेश, अजय गुप्ता निदेशक बचपन व सतीश गर्ग कोषाध्यक्ष भाजपा दिल्ली प्रदेश ने किया । सतीश गर्ग ने अपने संबोधन में कहा कि श्री राम के चरित्र का वर्णन शब्दों में तो हो ही नहीं सकता प्रभु श्रीराम अत्यंत शक्तिशाली थे किंतु उन्होंने कभी अपनी शक्तियों का दुरुपयोग नहीं किया तथा युद्ध में भी उन्होंने सदा मर्यादाओं का ही पालन किया। हमें उनके जीवन से प्रेरणा लेनी चाहिए।

लघु प्रशिक्षण कार्यक्रम में 200 शिक्षक लेंगे भाग

नई दिल्ली। भारत बोध श्रृंखला में (सीपीडीएचई) (यूजीसी - एम एम टीटीसी) के संयोजन में छह दिवसीय लघु प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन 16 अक्टूबर से 21 अक्टूबर तक किया जा रहा है। भारतीय ज्ञान परम्परा के अन्तर्गत कार्यक्रम में भारत के विभिन्न शैक्षणिक संस्थानों से 200 प्राध्यापक भाग लेंगे। राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुसार सभी भारतीय भाषाओं, मातृभाषा और सांस्कृतिक ज्ञान को प्रोत्साहित करना है। भारतीय ज्ञान परम्परा का प्रमुख उद्देश्य ज्ञान, विज्ञान और जीवन दर्शन को अपने अनुभव, अवलोकन और अनुसंधान द्वारा जीवंत करना है। सीपीडीएचई की निदेशक प्रो.गीता सिंह का कहना है कि भारत बोध की श्रृंखला में 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति' के तहत भारतीय ज्ञान परम्परा अत्यधिक महत्वपूर्ण है जिसकी कमी भारतीय शैक्षणिक ढाँचें में स्पष्ट रूप से नज़र आती थी। यह कदम वास्तव में हमारा हमसे परिचय करवाएगा।

सुपरटेक के अध्यक्ष को जमानत देने से इनकार

नई दिल्ली। दिल्ली की एक अदालत ने धनशोधन के एक मामले में रियल एस्टेट की कंपनी सुपरटेक के अध्यक्ष एवं प्रवर्तक आर के अरोड़ा को वैधानिक जमानत देने से इनकार कर दिया। अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश देवेंद्र कुमार जांगला ने अरोड़ा का आवेदन खारिज कर दिया जिन्होंने दलील दी थी कि उन्हें जमानत दे दी जानी चाहिए क्योंकि केंद्रीय जांच एजेंसी ने उनके विरूद्ध अधूरा आरोपपत्र दाखिल किया है। न्यायाधीश जांगला ने इस दलील को खारिज करते हुए कहा कि प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने अरोड़ा के खिलाफ जांच पूरी कर ली है। अदालत ने 14 अक्टूबर को अपने आदेश में कहा, उपरोक्त विमर्श से यह स्पष्ट हो जाता है कि अभियोजन पक्ष ने जांच पूरी होने के बाद आवेदक राम किशोर अरोड़ा समेत शिकायत में नामजद आरोपियों के खिलाफ शिकायत दर्ज की है। न्यायाधीश जांगला ने कहा कि अदालत उसके समक्ष मौजूद पर्याप्त सबूत को ध्यान में रखते हुए 26 सितंबर के आदेश में ही कथित अपराध को लेकर संज्ञान ले चुकी है।

हाफ मैराथन में डेनियल एबेन्यो और अयाना ने मारी बाजी

केंद्रीय मंत्री ने कहा- देश ने फिट इंडिया मूवमेंट को अपनाया, स्पर्धा में 36000 धावकों ने की भागीदारी

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

दिल्ली हॉफ मैराथन के विजेता खिलाड़ियों के साथ उपराज्यपाल वीके सक्सेना।

कीनिया के डेनियल एबेन्यो और इथियोपिया की अल्माज अयाना ने अपनी ख्याति के अनुरूप प्रदर्शन करते हुए रविवार को यहां दिल्ली हाफ मैराथन में क्रमश: पुरुष और महिला वर्ग की एलीट दौड़ जीती। इस दौड़ में भाग लेने वाले प्रतिभागियों का उत्साह बढ़ाने के लिए खेल मंत्री अनुराग ठाकुर भी उपस्थित थे।

केंद्रीय सूचना प्रसारण मंत्री अनुराग ठाकुर ने कहा, दिल्ली हाफ मैराथन के लिए लोगों का उत्साह देखकर मुझे खुशी हुई है। 36000 धावकों की भागीदारी ने उस उत्साह को दिखाया जिसके साथ देश ने फिट इंडिया मूवमेंट को अपनाया है और यह एक जन आंदोलन बन गया है। बुडापेस्ट में विश्व चैंपियनशिप 2023 में 10000 मीटर की दौड़ में रजत पदक जीतने वाले 28 वर्षीय एबेन्यो ने पुरुष वर्ग में दौड़ 59 मिनट और 27 सेकंड में पूरी की। उन्होंने हमवतन चार्ल्स माटाटा (1:00:05) और इथियोपिया के अदिसु गोबेना (1:00:51) को पीछे छोड़ा। रियो ओलंपिक 2016 में महिलाओं की 10000 मीटर दौड़ का स्वर्ण पदक जीतने वाली अयाना ने एक घंटे, सात मिनट और 59 सेकंड में दौड़ पूरी करके युगांडा की स्टेला चेसांग (1:08:28) और कीनिया की वियोला चेपनजेनो (1:09:09) को पीछे छोड़कर शीर्ष स्थान हासिल किया। भारतीय खिलाड़ियों में अभिषेक पाल (1:04:08) और कविता यादव (1:17:42) ने क्रमश: पुरुष और महिला वर्ग में पहला स्थान हासिल किया। महिला वर्ग में इससे पहले 2017 में भी दिल्ली हाफ मैराथन जीत चुकी अयाना ने बाद में कहा, यह आसान दौड़ नहीं थी तथा मौसम भी थोड़ा गर्म था। लेकिन दिल्ली हाफ मैराथन में दौड़कर मुझे बहुत अच्छा लगा। मैं आयोजकों का आभार व्यक्त करती हूं जिन्होंने मुझे इस दौड़ के लिए आमंत्रित किया।

पुरुषों की दौड़ में मुख्य मुकाबला कीनिया के धावकों के बीच था। सभी धावक 13 किलोमीटर तक बराबरी पर चल रहे थे। एबेन्यो ने इसके बाद अपनी गति बढ़ाई और खिताब जीतने में सफल रहे। एबेन्यो ने कहा, यह शानदार दौड़ थी लेकिन मैंने जो समय लिया मैं उससे निराश हूं। मैं यहां प्रतियोगिता का नया रिकार्ड बनाने के लक्ष्य के साथ आया था लेकिन मामूली अंतर से चूक गया। उम्मीद है कि अगले साल मैं यह रिकॉर्ड बनाने में सफल रहूंगा।

राज्यसभा से निलंबन मामले में राघव चड्ढा की याचिका पर सुनवाई आज

नई दिल्ली। उच्चतम न्यायालय आम आदमी पार्टी (आप) नेता राघव चड्ढा के राज्यसभा से अनिश्चितकालीन निलंबन को चुनौती देने वाली उनकी याचिका पर सोमवार को सुनवाई करेगा।

संसद के मानसून सत्र के आखिरी दिन 11 अगस्त को चड्ढा को नियमों के घोर उल्लंघन और अवमाननापूर्ण आचरण के चलते विशेषाधिकार समिति की रिपोर्ट आने तक निलंबित कर दिया गया। आप नेता ने वकील शादान फरासत के माध्यम से दायर अपनी याचिका में कहा है कि अनिश्चितकाल के लिए निलंबित किया जाना शक्ति का दुरुपयोग हो सकता है और यह अतिरेक है। याचिका में कहा गया है, निलंबन की शक्ति का उपयोग केवल ढाल के रूप में किया जा सकता है।

नवरात्र के पहले दिन श्रद्धालुओं ने की मां शैलपुत्री की उपासना

नवरात्र के पहले दिन पूजा करती महिलाएं।

गुरुग्राम। शारदीय नवरात्रे शुरू होने के साथ ही पूरा शहर नवरात्रों के रंग में रंगा नजर आ रहा है। शहर के सभी मंदिरों को जहां दुल्हन की तरह सजाया गया है, वहीं माता शीतला मंदिर में भी नवरात्रों के पहले दिन ही भीड़ उमड़ती दिखाई दी। प्रथम नवरात्र पर शहर के विभिन्न मंदिरों में रविवार को श्रद्धालुओं ने मां दुर्गा के व्रत रखकर मां भगवती के प्रथम स्वरुप शैलपुत्री की पूजा अर्चना की। दुर्गा मां के इस पर्व को मनाने के लिए शहर के कई मंदिरों ने विशेष अनुष्ठानों का आयोजन भी किया है। मंदिरों में माता के अलग -अलग स्वरूपों का श्रृंगार किया गया है। शीतला माता मंदिर में श्रद्धालुओं ने माता के दर्शन कर अपनी मनोकामना पूर्ण करने की मन्नतें भी मांगी। शीतला माता मंदिर में मां के दर्शनों के लिए दूर-दराज से आए श्रद्धालुओं की भीड़ जुटनी शुरु हो गई है। श्रद्धालुओं की लंबी-लंबी कतारें देखने को मिली। शीतला माता श्राईन बोर्ड ने श्रद्धालुओं को शीतला माता के दर्शन कराने के लिए पहले से ही व्यवस्था की हुई है। श्रद्धालुओं को माता के दर्शन करने में किसी प्रकार की समस्या का सामना नहीं करना पड़ा।

रामजी के जन्म पर जैकबपुरा में अयोध्या नगरी जैसा बना माहौल

रामलीला में राम जन्म की खुशियों में झूमे लोग

पायनियर समाचार सेवा। गुरुग्राम

गुरुग्राम में श्री दुर्गा रामलीला में राम, लक्ष्मण, भरत व शत्रुघ्न की लीला का दृश्य।

रामलीला मंचन में दूसरे दिन राम जन्म की लीला दिखाई गई। रामजन्म पर लोगों ने नाच-गाकर खुशियां मनाई। इसके बाद रामचंद्र जी बड़े हुए और फिर राक्षसों का भी सर्वनाश किया। बड़े ही रंगारंग और हर्षोल्लास से दूसरे दिन की रामलीला का मंचन हुआ। वृंदावन से आए कलाकारों ने भी भव्य कार्यक्रम पेश किए।

श्री दुर्गा रामलीला जैकमपुरा में राम जन्म से पूर्व दिखाई गई लीला में दशार्य गया कि देवताओं को राक्षसों द्वारा परेशान किया जा रहा है। इसके बाद विष्णु भगवान से आराधना की गई कि वे अवतार लेकर इनका सर्वनाश करें। इसके बाद राजा दशरथ का दरबार सजाया गया। राजा दशरथ को अपने महल में चिंतित दिखाया गया। राजा दशरथ तीन रानियों के होते हुए एक भी संतान नहीं होने को लेकर दुखी थे। इस दुख की घड़ी में उन्होंने मुनि वशिष्ठ के आश्रम में दस्तक दी और वशिष्ठ जी से अपनी चिंता का इस तरह से कारण बताया-विवाह कर चुका तीन, फिर भी न मनोरथ सिद्ध हुआ।

इस पर मुनि वशिष्ठ ने एक उपाय बताया कि वे अपने महल में हवन-यज्ञ करें। वह हवन भृंगि ऋषि से कराएं। राजा दशरथ ने वैसा ही किया। इस दौरान मुनि जी की ओर से भेंट की गई खीर को तीनों रानियों कौशल्या, कैकेयी व सुमित्रा को खिला दिया। इस खीर को खाने से तीनों रानियों को चार बेटे हुए। इस खुशी में राजा दशरथ फूले नहीं समाए। लीला के मंच पर राम, लक्ष्मण, भरत व शत्रुघ्न के जन्म की जो खुशियां मनाई गई, वे बड़े ही आनंददायी रही।

बहुत ही धार्मिकमय माहौल में यहां पर रामजन्म की खुशियां मनाई गई। रामजन्म की बधाई लेने के लिए यहां किन्नर भी पहुंचे। हालांकि यहां आना उनका पहले से तय था। इसके बाद सभी राजकुमारों का बड़े ही बेहतर तरीके से लालन-पालन हुआ। उनको शिक्षा-दीक्षा दिलवाई गई। इसके बाद राम ने ताड़का राक्षसी का वध करके धरती को पाप से मुक्त करने का प्रयास शुरु किया गया। ताड़का के बाद सुबाहु व मारिच का भी वध किया गया।

संक्षिप्त समाचार

1008 पाठ के संकल्प के साथ जीएल ने शुरू किया सुंदर कांड पाठ

भगवान परशुराम भवन में सुंदर कांड पाठ की शुरुआत के दौरान पाठ करते जीएल शर्मा व अन्य श्रद्धालु।

गुरुग्राम। रविवार से गुरुग्राम में एक साल तक सुंदरकांड का पाठ के आयोजन की शुरुआत हो गई। भगवान परशुराम भवन में पहले पाठ का आयोजन हुआ, जिसमें सेंकड़ों की संख्या में राम भक्त पहुंचे। अब साल भर तक साइबर सिटी में भगवान श्री राम एवं हनुमान जी की महिमा का गुणगान जारी रहेगा। साइबर सिटी के नाम से विश्व में प्रसिद्ध गुरुग्राम में मां दुर्गा के पहले नवरात्र से पहली बार एक अनूठा धार्मिक अनुष्ठान आरंभ हो गया है। जीएल शर्मा की ओर से रविवार से सुंदरकांड के 1008 पाठ का आरंभ कर दिया गया है। पहले पाठ का भव्य आयोजन भगवान परशुराम भवन में किया गया। जहां सेंकड़ों राम भक्तों ने पहुंचकर इस अनूठे धार्मिक अनुष्ठान में अपनी भागीदारी निभाई। गुरुग्राम के अलावा प्रदेश भर से कई धार्मिक सामाजिक एवं सांस्कृतिक संस्थाओं के पदाधिकारी ने भी इस भव्य अनुष्ठान में हिस्सेदारी की। शहर की विभिन्न आरडब्ल्यूए के पदाधिकारी भी सुंदरकांड पाठ के पहले भव्य आयोजन में शरीफ हुए। विभिन्न राजनीतिक दलों के नेताओं ने भी कार्यक्रम में पहुंचकर भगवान श्री राम एवं हनुमान जी की कृपा प्राप्त की। अनुष्ठान में शामिल होने आए श्रद्धालुओं के लिए टीम जय शर्मा की ओर से विशेष व्यवस्थाएं की गई थी। सभी का भगवा पटका पहनकर एवं चंदन का तिलक लगाकर स्वागत किया गया। करीब 4 घंटे तक चले कार्यक्रम में गुरुग्राम के कोने-कोने से राम भक्त पहुंचे और श्री राम में हनुमान जी की कृपा के पात्र बने।

चोरी करने वाले तीन आरोपी काबू, चोरी हुई दो बाइक बरामद

सोहना। सोहना अपराध शाखा पांच पुलिस ने चोरी के मामले में शातिर तीन चोरों को अलग-अलग स्थानों पर गिरफ्तार किया है। जिनके पास से दो चोरी की बाइक बरामद की है। जिमसें दो जिला नूंह और एक आरोपी बिहार मूल का निवासी है। अपराध शाखा पांच पुलिस सोहना प्रभारी एसआई सत्य प्रकाश ने बताया कि उनकी टीम ने शनिवार की शाम को गुरुग्राम सेक्टर-40 क्षेत्र में बाइक चोरी करने वाले तीन आरोपियों को सोहना से नूंह जाने वाले मार्ग पर गिरफ्तार किया है। तीनों बाइक चोरों को एक को गांव रायपुर में लगा पुलिस नाके पर गिरफ्तार किया है। जिसकी पहचान रुबिन उर्फलंबू निवासी नई नंगला नूंह के रुप में हुई है। दूसरे की पहचान अकरम निवासी गांव मौहम्मद नगर जिला नूंह हुई है। जिसे शहर की चुंगी नंबर एक के पास से सूरज कुमार जिला समस्तीपुर बिहार को सैक्टर -5 गुरुग्राम से गिरफ्तार किया है। और तीसरा आरोपी सूरज कुमार जिला समस्तीपुर बिहार के रुप में हुई है। पुलिस ने पूछताछ में तीन चोरों से दो बाइक चोरी की बरामद की है।

सोहना में कड़ी सुरक्षा व्यवस्था के बीच रामलीलाओं का मंचन शुरु

सोहना। सोहना में रामलीलाओं का मंचन शनिवार से शुरु हो गया है। रामलीलाओं के शुरु होने के साथ ही पुलिस सुरक्षा व्यवस्था और अग्निशमन विभाग ने भी अपनी पूरी तैयारियों करके तैनात हो गए है। शनिवार से शहर की हनुमान बगीची समेत अन्य दो स्थानों पर रामलीलाओं का मंचन शुरु हो गया है। शहर की हनुमान बगीची में एक सौ साल से पुरानी संस्था शानदार रामलीला कमेटी ने पहले दिन नारद मुनी के नाटक से शुरुआत की। पहले दिन दर्शक दीर्घा में दर्शक कम थी। रविवार को रामलीला का पहला पाठ राम जन्म व ताडका वध का मंचन होगा। जिसमें भगवान राम के जन्म को देखने के लिए भारी मात्रा में दर्शक आने की उम्मीद जताई जा रही है। कमेटी के वरिष्ठ सदस्य निरज सिंगला ने बताया कि एक साथ 400 से 600 लोग आराम से बैठकर रामलीला का मंचन देख सकते है। दर्शकों के लिए विशेष रुप से सुविधाएं उपलब्ध कराई गई। जिसमें महिलाओं के लिए अलग से दर्शक दीर्घा तैयार की जाती है। शहर में रामलीला देखने के बाद रात 11 बजे के बाद लोगा अपने घरों को सुरक्षित लौटे। इसके लिए रामलीला ग्राउंड से लेकर शहर में सुरक्षा व्यवस्था को पहले से कड़ा किया गया है। पीसीआर, सीवीआर और राइड की गश्त को बढ़ाया गया है। संदिग्ध लोगों से रात के समय बाजार की सड़कों पर घूमने वालों से पूछताछ की जाती है। संदिग्ध को पुलिस किसी भी सूरत में माफनहीं करेगी। सिटी थाना प्रभारी इंस्पेक्टर देवेन्द्र सिंह ने बताया कि रात के समय में लोग अपने घरों से बिना किसी काम के सड़कों पर न घूमे। जयवीर भड़ाना-कार्यवाहक अधिकारी दमकल विभाग ने बताया कि अग्निशमन विभाग ने कमर कसी ली उन्होंने बताया कि रामलीला मैंदानों के आस पास आगजनी की घटना पर तुरन्त काबू पाने की उम्मीद से एक-एक वाहन को रात 8 बजे से रामलीला मंचन समापन तक खड़ा किया जाएगा। जिसकी शुरुआत कर दी गई है। अग्निशमन विभाग कर्मचारियों की टीम रामलीला मंच या उसके आस पास ऐसे संदिग्धता से जांच पड़ता हर दिन करती रहेगी।

जनता ने जो जिम्मेदारी दी उस पर खरा उतरने का प्रयास किया: सुधीर सिंगला

अशोक विहार व शीतला कालोनी के लोगों ने किया विधायक का सम्मान समारोह

पायनियर समाचार सेवा। गुरुग्राम

गुरुग्राम में स्वागत समारोह से पूर्व तिरंगा यात्रा में शामिल विधायक सुधीर सिंगला।

अशोक विहार व शीतला कालोनी में सीवरेज की समस्या का स्थायी समाधान करवाने पर रविवार को गुरुग्राम के विधायक सुधीर सिंगला का सम्मान समारोह आयोजित किया गया। इस समारोह में क्षेत्र के सेंकड़ों लोगों ने विधायक का आभार जताया। समारोह से पूर्व सेक्टर-5 हुडा मैदान से पूर्व डिप्टी मेयर परमिन्दर कटारिया के नेतृत्व में सेंक्ड़ों बाइक सवारों ने विशाल तिरंगा यात्रा निकाली। इस यात्रा में विधायक सुधीर सिंगला भी शामिल हुए।

विधायक सुधीर सिंगला ने अपने कार्यकाल में किए गए जनहित के कार्यों को लेकर बात कही। उन्होंने भविष्य में भी इसी तरह से कार्य करते रहने के लिए जनता से वायदा किया। कहा कि वे गुरुग्राम से चंडीगढ़ तक जनता की सुविधाओं की बात करते रहे हैं और करते रहेंगे। विधायक ने कहा कि जनता ने ही उन्हें विधायक चुना और वे जनता के बीच से ही विधानसभा में पहुंचे हैं। जिन जनता ने उन्हें जो जिम्मेदारी दी, उस पर सदा खरे उतरने का प्रयास किया है। उन्होंने पूरी जिम्मेदारी के साथ कहा कि हो सकता है कुछ काम बाकी हों। वे हर काम को पूरा कराने के लिए सदा प्रयासरत रहते हैं। आम जनता को बिजली, पानी, सड़क, सीवरेज की बेहतर व्यवस्था चाहिए, इन्हें बेहतर बनाने के लिए उन्होंने सदा काम किया है। आम जन की जनता दरबार लगाकर समस्याएं सुनी और उनका मौके पर ही निराकरण भी किया। उन्होंने कहा कि वे गुरुग्राम की जनता के आभारी हैं, जिन्होंने हर कदम पर उनका साथ दिया है। लोगों ने उनके समक्ष समस्याएं रखीं और उनका समाधान हुआ तो जनता ने भी आभार जताया है। विधायक सुधीर सिंगला ने कहा कि यह आभार के साथ जनता का प्यार है। काम करना उनकी जिम्मेदारी थी और उन्होंने अपनी जिम्मेदारी निभाई। समारोह में पूर्व डिप्टी मेयर परमिंदर कटारिया, भगत कटारिया, रमेश समोता, भगवान मलिक, खालिद खान, रणवीर यादव, बलविंद्र सिंह, दिनेश सिंह, संदीप मलिक, सुरेंद्र यादव, पवन नरवाल, रोशन लाल, सुरेंद्र मारूति, हरी नंदन, खेमचंद शर्मा, विकास हुड्डा, जुगल रैना, दिनेश सिंह, सुरेंद्र अहलावत, रविंद्र त्यागी, शशिकांत दुबे, अरुण देशवाल, देशराज, गोपाल चौधरी समेत अनेक लोग मौजूद रहे।

द मौर्या स्कूल में हुआ स्टूडेंट शार्क पिच इवेंट

बच्चों को सम्मानित करते बीकानेरवाला के निदेशक नवरतन अग्रवाल।

गुरुग्राम। द मौर्या स्कूल में स्टूडेंट शार्क पिच इवेंट ट्रम्पिंग स्टार्स द्वारा आयोजित किया गया। अपने दूरदर्शी व्यावसायिक विचारों को प्रस्तुत करने के लिए प्रतिभाशाली छात्र प्रतिभाओं को एक छत के नीचे लाया या। इस कार्यक्रम में विद्यार्थियों ने बेहतर प्रदर्शन किया।

कार्यक्रम में बिजनेस जगत के जाने-माने नाम बीकानेरवाला के निदेशक नवरतन अग्रवाल की उपस्थिति रही। नवरतन अग्रवाल ने व्यक्तिगत रूप से विजेताओं को नकद पुरस्कार सौंपे। इन युवा उद्यमियों ने नवोन्मेषी व्यावसायिक विचारों का प्रदर्शन किया, जो विभिन्न क्षेत्रों में फैले हुए हैं। जिनमें वर्मी कम्पोस्ट, किशोरों और वयस्कों दोनों में चिंता को दूर करने के लिए डिजाइन किए गए उत्पाद और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) के माध्यम से महिलाओं में पीसीओएस का पता लगाने और संबोधित करने के लिए एक अभिनव दृष्टिकोण शामिल है। स्टूडेंट शार्क पिच इवेंट केवल प्रेरक विचारों के बारे में नहीं था, यह वास्तविक दुनिया के मुद्दों को संबोधित करने के लिए सहयोग करने वाले युवा दिमागों का उत्सव था। इस आयोजन से कई एआई प्रोटोटाइप विचार और नवीन ऐप अवधारणाएं उभरीं, जिन्होंने एक उज्जवल, तकनीक-संचालित भविष्य के लिए मंच तैयार किया।

गुरुग्राम के किसानों के दो हजार करोड़ ब्याज समेत लौटाए सरकार: नवीन जयहिंद

गुरुग्राम के मानेसर क्षेत्र में किसानों के धरने पर बोलते नवीन जयहिंद।

गुरुग्राम। रविवार को नवीन जयहिंद किसानों के 1128 एकड़ जमीन अधिग्रहण मामले में 190 दिनों से अनिश्चितकालीन समय के लिए चल रहे धरने पर समर्थन देने पहुंचे। नवीन जयहिंद ने किसानों की मांगों का समर्थन करते हुए कहा कि सरकार किसानों के 2 हजार करोड़ रुपये खाकर बैठी है। जब किसान सरकार से पैसा लेता है तो सरकार ब्याज पर ब्याज लगा कर देती है। अब किसानों की जमीन भी हड़प रही है और किसानों के पैसे भी खा गई। जमीन मां समान होती है। जैसे आप अपनी माँ की रक्षा के लिए लड़ते है वैसे ही आपको जमीन के लिए भी लड़ना होगा। नवीन जयहिंद ने कहा कि ये जमीन की नहीं जमीर की लड़ाई है।

युवाओं को भी इस लड़ाई का हिस्सा बनना होगा। क्योंकि युवाओं को अपने भविष्य के लिए इस जमीन की जरूरत है। जयहिंद ने कहा कि वे किसानों के तन-मन-धन से साथ हैं। जिस तरीके से सरकार तानाशाही कर रही है, वह बिल्कुल सही नहीं है। जमीन किसानों की है और किसानों की ही रहेगी।

सोहना बस स्टैंड पर बदमाश अवैध हथियार समेत गिरफ्तार

सोहना। गुरुग्राम अपराध शाखा 40 पुलिस ने सोहना के सामान्य बस स्टैंड पर बदमाश को अवैध हथियार समेत गिरफ्तार किया। आरोपी से बरामद अवैध हथियार में तलाशी के दौरान 4 जिंदा रौंद मिले। अपराध शाखा 40 में तैनात एएसआई विकास कुमार ने शहर थाना सोहना को पुलिस को लिखित में एक शिकायत दर्ज कराई। जिसमें एएसआई विकास कुमार ने बताया कि शनिवार को गश्त के दौरान उसे पता चला कि जिला नूंह का गांव अलावलपुर निवासी प्रिंस मुराद खान सोहना के सामान्य बस स्टैंड पर अपनी गाड़ी के अंदर बैठा है।

वह किसी अपराधी वारदात को अंजाम देने वाला है। क्योकि वह अपराधि प्रवृति का है। एएसआई विकास कुमार ने अपनी टीम का गठन करके प्रिंस मुराद खान को काबू किया। जिसकी गाड़ी के डेस्क बोर्ड में से तलाशी के दौरान अवैध हथियार बरामद किया। जिसके अंदर 4 जिन्दा रौंद थे। जिन्हे पुलिस ने अपने कब्जे में ले लिया।

अवैध रूप से चल रहे है पीजी, अधिकारी सो रहे हैं कुंभकरणीय नींद

पायनियर समाचार सेवा। सोहना

शहर में चल रहे 20 से 22 पीजी में फायर सुरक्षा के उपकरणों की सुविधा नहीं है। न ही किसी भी पीजी संचालक के पास लाइसेंस है। यह खुलाशा अग्निशमन विभाग द्वारा करीब डेढ़ वर्ष पहले किए गए सर्वे से हुआ है। लेकिन सर्वे करने और नोटिस देने के बाद अग्निशमन विभाग के अधिकारी कूंभकरणीय नींद में सो गए हैं।

अग्निशमन विभाग के खंड कार्यालय से प्राप्त जानकारी के अनुसार करीब डेढ़ वर्ष पहले शहर में संचालित पीजीओं को सर्वे किया गया था। सर्वे के दौरान किसी भी पीजी में आग की घटना घटित होने पर सुरक्षा व्यवस्था के कड़े प्रबंध नहीं है।

किसी भी पीजी में अग्निशमन यंत्र तक नहीं लगे है। न ही आग लगने पर सुरक्षित बचकर निकलने के इंतजाम है। पीजी संचालक यहा ठहरने या रहने वालों की सुरक्षा व्यवस्था पर कम और कमाई करने पर अधिक ध्यान दिया जा रहा है।

> **किसी** भी पीजी के खिलाफ कानूनी प्रक्रिया करने का अधिकारी विभाग के उच्चाधिकारियों का है। अधिकारी जैसे भी आदेश उनका देंगे। उनकी पालना करना प्राथमिकता रहेगी।
> **(जयवीर भड़ाना-कार्यवाहक अधिकारी दमकल केन्द्र)**

दिए गए नोटिसों का जवाब नहीं : अग्निशमन विभाग ने सर्वे के दौरान करीब 20 पीजी संचालकों को आग की घटना से निपटने के लिए उपकरण लगाने तथा एनओसी लेने के लिए नोटिस दिए गए थे। लेकिन डेढ़ वर्ष बीत जाने के बाद भी आज तक पीजी संचालकों ने न तो नोटिसों का जबाव दिया हैं और न ही लगाएं गए उपकरणों की जानकारी देते हए एनओसी ली है।

हर साल दो से तीन पीजी हो रहे हैं तैयार : गुरुग्राम के बाद सोहना भी शिक्षा ग्रहण के क्षेत्र में हब बनता जा रहा है। क्षेत्र में नामचीन स्कूल से लेकर कॉलेज और यूनिवर्सियों की संख्या बढ़ती जा रही है। वैसे-वैसे इन में पढ़ने वाले विद्यार्थियों की पीजी में रहने की मांग बढ़ती जा रही है। यही कारण है मांग को देखते व सुनते हुए हर वर्ष दो से तीन पीजी बनकर तैयार हो रहे है। जिनका निर्माण कार्य आबादी क्षेत्र में किया जा रहा है। जहा पर प्रशासन की नजर आसानी से न पड़ सके।

कुंभकरणीय नींद में सोए हैं अधिकारी : अग्निशमन विभाग के उच्चाधिकारियों के आदेश पर खंड स्तरीय अधिकारियों ने अवैध रुप से चल रहे पीजीओं को डेढ साल पहले नोटिस तो दे दिया। लेकिन आज तक दिए गए नोटिसों पर कोई कार्रवाई नहीं की गई। जबकि दिए गए नोटिस का 7 दिन में जबाव देना होता। नोटिस देकर चुप्पी साधना पर सवालियां निशान लग रहे है। संचालक अवैध रुप से पीजी चलाने का हौसला बनाएं हुए है।

भाजपा राजपरिवारों की नहीं कार्यकर्ताओं की पार्टी: ओम प्रकाश धनखड़

जजपा और आम आदमी पार्टी के अनेक कार्यकर्ता हुए भाजपा में शामिल

गुरुग्राम में पार्टी कार्यालय में नए सदस्यों ने की भाजपा की सदस्यता ग्रहण

पायनियर समाचार सेवा। गुरुग्राम

रविवार को गुरुग्राम में आम आदमी और जननायक जनता पार्टी को छोड़कर भाजपा में शामिल हुए कार्यकर्ता हरियाणा भाजपा अध्यक्ष ओमप्रकाश धनखड़ के साथ।

सोनीपत व गुरुग्राम में जजपा और रोहतक में आम आदमी पार्टी को पहले नवरात्र में झटका लगा है। इन दोनों पार्टियों के अनेक कार्यकर्ताओं ने भाजपा की रीति-नीति और पीएम मोदी के सशक्त नेतृत्व में आस्था जताते हुए हरियाणा भाजपा अध्यक्ष ओम प्रकाश धनखड़ की मौजूदगी में रविवार को गुरुग्राम स्थित पार्टी कार्यालय में भाजपा का पटका पहना।

हरियाणा भाजपा प्रदेश अध्यक्ष धनखड़ ने पार्टी में शामिल हुए नए सदस्यों का स्वागत करते हुए कहा कि आप सभी पीएम मोदी के सशक्त नेतृत्व में अमृतकाल में भारत को आत्मनिर्भर बनाने की यात्रा में सहयोगी बन रहे हैं। आपका भाजपा में स्वागत है। उन्होंने कहा कि मोदी जी के साथ हर देश भक्त नागरिक भारत को आत्मनिर्भर बनाने की यात्रा में शामिल होकर भागीदारी करना चाहता है। धनखड़ ने कहा कि आप मेहनत कीजिए, भाजपा राजपरिवारों की नहीं कार्यकर्ताओं की पार्टी है, इसलिए दुनिया का सबसे बड़ा राजनीतिक दल बनकर उभरा है। भाजपा में कार्यकर्ता की पहचान उसके काम से होती है नाम से नहीं।

रोहतक से भाजपा में शामिल होने वालों में आम आदमी पार्टी के रोहतक लोकसभा से जिला अध्यक्ष महाराज सिंह, पूर्व संगठन मंत्री रोहतक विधानसभा एवं एडवोकेट राजबीर सिंह, पूर्व यूथ प्रेजीडेंट लीगल एडवोकेट विकास लाकरा, जिला कोषाध्यक्ष आशीष धनखड़, पूर्व जिला उपाध्यक्ष महिला विंग लतेश धनखड़, विधानसभा सचिव कश्मीर राठी, एडवोकेट निखिल गोयल लीगल सेल, सचिव रामनिवास दलाल, बुद्धिजीवी प्रकोष्ठ से चंद्रभान, जिला सचिव यूथ विंग अंकित मल्हान, सुरेंद्र, मोहित समर्थकों सहित बड़ी संख्या में भाजपा में शामिल हुए। इस दौरान पार्टी के रोहतक जिला अध्यक्ष एडवोकेट रणवीर ढाका भी मौजूद रहे।

गुरुग्राम से जजपा के पूर्व जिला वरिष्ठ उपाध्यक्ष साहब सिंह सोलंकी, पूर्व जिला सहसचिव गुरप्रीत सिंह, पूर्व जिला वरिष्ठ उपाध्यक्ष लीगल सेल प्रेम सिंह सहरावत, पूर्व जिला अध्यक्ष व्यापार प्रकोष्ठ मनोज गुप्ता, युवा नेता बलराम हंस अपने लगभग 175 समर्थकों सहित जजपा छोड़कर भाजपा में शामिल हुए। सोनीपत जिला व्यापार प्रकोष्ठ प्रधान एवं पूर्व हल्का प्रधान जजपा गोहाना नरेंद्र गहलावत ने समर्थकों सहित भाजपा में आस्था जताई।

हरियाणा और जापान के बीच व्यापार बढ़ाने पर हुई चर्चा

जापान चैम्बर ऑफ कॉमर्स इन इंडिया के साथ मिलकर हुआ कार्यक्रम

पायनियर समाचार सेवा। गुरुग्राम

गुरुग्राम के लघु सचिवालय में जापान चैम्बर ऑफ कॉमर्स इन इंडिया जापान चैम्बर ऑफ कॉमर्स इन इंडिया कार्यक्रम में मौजूद अतिथि व स्थानीय अधिकारी।

हरियाणा सरकार के विदेश सहयोग विभाग ने लघु सचिवालय में जापान चैम्बर ऑफ कॉमर्स इन इंडिया के साथ मिलकर हरियाणा और जापान के बीच परस्पर व्यापार बढ़ाने पर विचार विमर्श किया। बैठक में गुरुग्राम के अतिरिक्त उपायुक्त और विदेश सहयोग विभाग हरियाणा के आला अधिकारियों के साथ जापान चैम्बर ऑफ कॉमर्स के 50 से ज्यादा प्रतिनिधियों और भारत में जापान दूतावास के अधिकारियों ने भाग लिया।

बैठक में विशेष रूप से तंजानिया ट्रेड डेवलपमेंट अथॉरिटी की महानिदेशक लतीफा खाामिस उपस्थित रही । विचार विमर्श के शुभारंभ पर अतिरिक्त उपायुक्त हितेश कुमार मीणा ने कहा कि यह आयोजन हरियाणा और जापान के बीच बढ़ते व्यापारिक रिश्तों को दर्शाता है। निश्चित ही इस विचार विमर्श के सकारात्मक परिणाम इन संबंधों को और मजबूत करेंगे, जो हरियाणा और जापान दोनों के लिए लाभकारी होंगे। बैठक में हरियाणा एक्सपोर्ट प्रमोशन कौंसिल के चेयरमैन अनुराग बख्शी ने कहा की विदेश सहयोग विभाग और हरियाणा एक्सपोर्ट प्रमोशन कौंसिल का गठन मुख्यमंत्री मनोहर लाल की दूरगामी सोच को दर्शाता है और हरियाणा के समग्र विकास के लिए गो ग्लोबल एप्रोच के साथ काम करने का विचार प्रदेश के लिए हितकारी साबित हो रहा है।

डाईकॉन एयरकंडिशनिंग इंडिया प्राइवेट लिमिटेड के वरिष्ठ प्रबंधक और जापान चैम्बर ऑफ कॉमर्स के वरिष्ठ उपाध्यक्ष योशिहिसा ईंटों ने अपने संबोधन में कहा कि जापान चैम्बर 600 से भी ज़्यादा जापानी कंपनियों को साथ लेकर व्यापार को बढ़ाने के लिए काम कर रहा है और तमाम वैश्विक चुनौतियों के बावजूद दूसरे देशों में नए बाजार तलाशने और निर्यात बढ़ाने के लिए निरंतर प्रयास कर रहा है । विदेश सहयोग विभाग हरियाणा के सलाहकार पवन चौधरी ने हरियाणा से निर्यात और निवेश बढ़ाने के लिए विभाग द्वारा किए गए प्रयासों की विस्तृत जानकारी दी और बताया की किस प्रकार इस विभाग के गठन से लेकर अब तक मुख्यमंत्री मनोहरलाल के नेतृत्व में हरियाणा ने 50 से भी अधिक विदेशी दूतावासों के साथ व्यापार और सहयोग बढ़ाने के लिए कारगर कदम उठाये हैं। लतीफा खामिस ने हरियाणा और तंजानिया के बीच बढ़ते रिश्तों की चर्चा की और कहा कि तंजानिया सरकार तंजानिया में निवेश और परस्पर व्यापार बढ़ाने के लिए हर संभव सहायता और प्रोत्साहन देने के लिए तैयार है। जेट्रो जापान के महानिदेशक तकाशी सुजुकी ने वीडियो कांफ्रेंस के माध्यम से बैठक में अपने विचार रख। भारत में जापानी दूतावास से क्योको हॉकुगो ने भी वीडियो कांफ्रेंस के माध्यम से बैठक को संबोधित किया।

मंडी में एक करोड़ की लागत से बना सीवर ट्रीटमेंट प्लांट बना सफेद हाथी

पदम सिंह घुघेरा। पलवल

प्लांट कार्य नहीं करने से यहां पर बना रहता है जल भराव

लगभग एक करोड़ की लागत से पलवल की अनाज मंडी व सब्जी मंडी के सीवर के पानी की निकासी करने के लिए बनाया सीवर ट्रीटमेंट प्लांट सफेद हाथी साबित हुआ। पिछले काभी दिनों से इसके कार्य नहीं करने से मंडी के सीवर के पानी की निकासी नहीं होती है। जिसकी वजह से यहां पर आने वाले व रहने वाले लोगों को भारी परेशानियों का सामना करना पड़ता है।

लोगों का कहना है कि सफाई व्यवस्था के लिए करोड़ की लागत से लगाए प्लांट के काम नहीं करने से मंडियों की गंदगी का बुरा हाल रहता है। लगभग आठ साल पहले पलवल की अनाज मंडी व सब्जी मंडी के सीवर व बरसाती पानी की निकासी के लिए बने ट्रीटमेंट प्लांट के कार्य नहीं करने से मंडियों में गंदगी का बुरा हाल है।

मंडियों की सफाई व्यवस्था के लिए ट्रीटमेंट प्लांट बना तो दिया, परंतु कार्य नहीं करने से सीवर व बरसात के पानी की निकासी नहीं हो पाती है। जिससे मंडी की सड़कों पर पानी व कीचड़ भरा रहता है। इससे सब्जियां व फसलें बेचने व खरीदने आने वाले लोगों को कीचड़ से गुजरकर निकलना पड़ता है। लोगों का कहना है कि जब सीवर ट्रीटमेंट प्लांट को चालू ही नहीं करना था तो इसको बनाने की जरूरत ही नहीं थी।

प्लांट कार्य नहीं करने से सीवर जाम रहते हैं। यहां के लोग अपने टॉयलेट व बाथरूम भी प्रयोग नहीं कर पाते हैं। वहीं कई बार इसमें बच्चे, महिला, बुजुर्ग गिरकर गंभीर रूप से घायल हो जाते है। इसकी वजह से क्षेत्र के लोग आसपास की होडल, बल्लभगढ़ मंडियों में सब्जी और फसल बेचने को प्राथमिकता देते हैं।

> **सीवरेज** ट्रीटमेंट प्लांट कार्य नहीं करने से सब्जी मंडी व अनाज मंडी में पानी की निकासी नहीं हो पाती है। जिससे यहां के लोगों को परेशानी होती है।
>
> **-नीरज गर्ग, दुकानदार**

> **सीवरेज** ट्रीटमेंट प्लांट चालू न होने से मंडी के सीवर के पानी की निकासी नहीं हो पाती है। इससे यहां की सड़कों व गलियों में पानी भरा रहता है।
>
> **-राज कुमार, दुकानदार**

कई गांवों के लोगों को मीठा स्वच्छ जल उपलब्ध होगा : प्रवीण डागर

21 लाख की लागत से बिछाई पेयजल लाइन का विधायक ने किया उद्घाटन

पायनियर समाचार सेवा। पलवल

हथीन के विधायक प्रवीण डागर ने रविवार को अपने पैतृक गांव मंडकोला में जनस्वास्थ्य एवं अभियांत्रिकी विभाग द्वारा 21 लाख रुपये की लागत से बिछाई गई पीने के पानी की पाइप लाइन का उद्घाटन किया।

प्रवीण डागर ने ग्रामीणों को संबोधित करते हुए कहा कि गांव की गढिया पट्टी में 21 लाख की लागत से पीने के पानी की पाइप लाइन का कार्य पूरा किया गया है। इससे ग्रामीणों को पीने का मीठा स्वच्छ जल उपलब्ध होगा।

उन्होंने कहा कि वर्तमान सरकार में हथीन विधानसभा क्षेत्र का विकास व लोगों की मूलभूत सुविधाओं पर करोड़ों खर्च किए जा रहे हैं। सभी हथीन विधानसभा क्षेत्रवासियों से मैंने हथीन विधानसभा क्षेत्र के चहुंमुखी विकास के जो वादे किए थे, वह सभी कार्य पूरे होने जा रहे हैं। अभी एक साल का समय शेष है। हथीन क्षेत्र के अन्य जो भी जनता के हित के विकास कार्य है, उन्हें मुख्यमंत्री मनोहर लाल के मार्गदर्शन में पूरा कराया जाएगा। हथीन के विकास में कोई कसर नहीं रहने दी जाएगी। इस अवसर पर उनके साथ सरपंच सविता, पूर्व सरपंच देवी सिंह, जग्गी, छिद्दा पंच, सचिव राम स्वरूप, धर्म मेंबर व जनस्वास्थ्य विभाग के अधिकारीगण उपस्थित रहे। उन्होंने कहा कि जनता के कल्याण के लिए यह सरकार हमेशा तत्पर है। विकास से संबंधित कोई भी कार्य नहीं रूकेगा, सभी कार्यों को प्राथमिकता के आधार पर पूर्ण करवाया जाएगा। प्रदेश के मुख्यमंत्री मनोहर लाल के नेतृत्व में सभी विधानसभा क्षेत्रों में समान रूप से विकास कार्य किए जा रहे हैं। विकास कार्यों को पूरा करवाने में धन की किसी भी प्रकार से कमी आडे नहीं आने दी जाएगी।

इस दौरान स्थानीय निवासियों ने विधायक के समक्ष कुछ मांग भी रखी, जिस पर विधायक ने उन्हें आश्वस्त किया कि जल्द ही सभी कार्य पूरे करवाए जाएंगे। निवासियों ने विधायक को फूलमालाएं पहनाकर जोरदार स्वागत किया।

रेलवे ओवरब्रिज पर काम कर रहे मजदूरों से लूट

कमरे में घुसे हथियारबंद चार बदमाश, मोबाइल और कैश लेकर फरार

पलवल। रसूलपुर रेलवे ओवर ब्रिज का निर्माण कर रहे मजदूरों के साथ हथियार के बल पर मारपीट कर लूटपाट करने का मामला प्रकाश में आया है। मजदूर की शिकायत पर कैंप थाना पुलिस ने अज्ञात के खिलाफ केस दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। मजदूरों के साथ हुई वारदात के बाद वे डरे हुए हैं, क्योंकि बाहर के रहने वाले हैं।

कैंप थाना प्रभारी सत्य नारायण के अनुसार, जिला कन्नोज के बनयानी गांव निवासी विनोद कुमार ने दी शिकायत में कहा कि वह अपने साथियों के साथ रसूलपुर रेलवे क्रॉसिंग पर गुरुनानक इंजीनियरिंग सर्विस के लिए कार्य कर रहे हैं। उसके साथी दीपक व सरसिंह भाटिया कॉलोनी में एक कमरा लेकर रह रहे हैं। रात करीब सवा 12 बजे जब वे अपने कमरे में सोए हुए थे, उसी दौरान हथियार बंद चार बदमाश कमरे में घुसे और उन्हें दबोच लिया। जिसके बाद आरोपियों ने उनके साथ जमकर मारपीट की और हथियार के बल पर तीनों के मोबाइल लूट लिए। आरोपियों ने उनके साथ ही सो रहे बृजेश कुमार से 24 हजार रुपये व विनोद कुमार से साढ़े आठ हजार रुपये लूट लिए। पीड़ितों ने जब उनका विरोध किया तो उन्हें जान से मारने की धमकी दी। पीड़ित का कहना है कि बदमाशों में से दो की पहचान उन्होंने कर ली है। जिनमें एक हरी नगर निवासी सन्नी व दूसरा अमित शामिल थे। जबकि, ये अपने साथियों को मोहित व विशाल नाम लेकर भागने के लिए कह रहे थे।

जगतजननी मां तीनों लोकों को शक्ति प्रदान करती हैं : स्वामी पुरुषोत्तमाचार्य

पायनियर समाचार सेवा। फरीदाबाद

श्री सिद्धदाता आश्रम एवं श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम में शुरू हुए नौ दिन के अनुष्ठान

सेक्टर 44 स्थित सिद्धदाता आश्रम में हर साल आयोजित होने वाले नवरात्र अनुष्ठान प्रारंभ हो गए। जगदगुरु स्वामी पुरुषोत्तमाचार्य महाराज ने घटस्थापना की और आए हुए हजारों भक्तों को प्रसाद वितरित किया।

स्वामी पुरुषोत्तमाचार्य ने बताया कि वैदिक परंपरा अनुसार चार नवरात्र होते हैं, लेकिन दो नवरात्र चैत्र और शारदीय गृहस्थों के करने के लिए होते हैं। इन नवरात्रों में व्यक्ति को सुचितापूर्ण जीवन जीने की आदत स्वयं में विकसित करनी चाहिए। तभी इन नवरात्र का महत्व है। इनमें भी जो भक्त किन्हीं भी कारणों से अन्य नवरात्र न भी रख सके तो वह शारदीय नवरात्र में जरूर माता का ध्यान, पूजन, अर्चन करे। इससे उनके जीवन में धन धान्य की प्रचुरता रहेगी। उन्होंने बताया कि वर्ष 1989 में आश्रम के स्थापना काल से ही यहां पर शारदीय नवरात्र में अनुष्ठान आयोजित किए जाते रहे हैं। हर वर्ष यहां पर भक्तिभाव से परिपूर्ण भक्तगण गुरुमंत्र का जाप करते हैं और सफल जीवन की कामना करते हैं।

यहां नौ दिन तक रहकर सैकड़ों भक्तगण अनुष्ठान कर माता से, गुरु से, अपने इष्ट से मनोकामनाएं पूर्ण करने की प्रार्थना करेंगे। नौ दिन तक माता के विभिन्न स्वरूपों का पूजन एवं आराधना का कार्यक्रम होगा और 23 अक्टूबर को नवमी के दिन यहां विशाल दशहरा पर्व का आयोजन किया जाएगा। जिसमें हजारों की संख्या में भक्त जुटेंगे।

कंप्यूटर-मोबाइल के सामने घंटों बैठने की आदत बढ़ा रही पीठ का दर्द

पायनियर समाचार सेवा। फरीदाबाद

कंप्यूटर के सामने घंटों बैठकर चैट करने और गेम खेलने की आदत यूथ में लुंबर स्पोंडिलोसिस की दिक्कत पैदा कर रही है। लुंबर स्पोंडिलोसिस (पीठ दर्द) लाइफ को काफी अनकॉमन बना देता है। इस बीमारी में शुरुआती दौर में ही उठने-बैठने व झुकने में दर्द का एहसास होता है। बीमारी जब घातक हो जाती है तो बैठना तक मुश्किल हो सकता है।

डॉक्टर मानते हैं कि युवाओं में यह बीमारी काफी तेजी से बढ़ी है। पिछले दो साल में ओपीडी में इस बीमारी के मरीजों में युवाओं के केस 30 प्रतिशत तक बढ़े हैं। ग्रेटर फरीदाबाद सेक्टर-86 स्थित एकॉर्ड अस्पताल न्यूरोलॉजी डिपार्टमेंट के चेयरमैन डॉ. रोहित गुप्ता ने कहा कि भागदौड़ भरी जीवनशैली में 70 से 80 प्रतिशत लोगों को पीठ दर्द की समस्या होती है। साथ ही रहन-सहन में बदलाव व तकनीकी निर्भरता के कारण युवा इस बीमारी की गिरफ्त में आ रहे हैं, जोकि आमतौर पर बुजुर्गों की बीमारी कही जाती है। उनके पास पहले जहां इस बीमारी के केस में 90 बुजुर्ग और 10 युवा आते थे। वहीं आज यह रेश्यो 70 और 30 पर पहुंच गया है। उन्होंने कहा कि युवा आजकल घंटों कंप्यूटर पर समय बिताते हैं। उनकी फिजिकल एक्टिविटी जीरो हो गई है, ऐसे में स्पाइन डिसऑर्डर लगातार बढ़ रहा है। शुरुआती दौर में भले ही युवा इसे गंभीरता से न लें, लेकिन लंबे समय में यह परेशानी का कारण बन सकती है। उन्होंने कहा कि इस साल विश्व स्पाइन दिवस की थीम मूव योर स्पाइन है, जो लोगों को सक्रिय रहकर अपनी रीढ़ की देखभाल करने का संदेश देती है।

जिला स्तरीय सांस्कृतिक कार्यक्रम का आज से होगा आगाज

पलवल। शिक्षा विभाग हरियाणा के मार्गदर्शन में राज्य के प्रत्येक जिला में सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। इन कार्यक्रमों को चार स्तर विद्यालय स्तर, खंड स्तर, जिला स्तर और राज्य स्तर में विभाजित किया गया है। प्रत्येक स्तर पर कक्षा पांच से आठ एवं नौ से 12 की टीम भाग लेंगी। सांस्कृतिक कार्यक्रम में चार इवेंट को शामिल किया गया है, जिसमें फोक डांस सोलो, रागिनी, फोक डांस ग्रुप एवं लघु नाटिका। खंड स्तर पर प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय आने वाली टीम अब जिला स्तरीय कार्यक्रम में भाग लेंगी। जिला शिक्षा अधिकारी अशोक बघेल ने जानकारी दीं।

प्ले स्कूलों में मूलभूत सुविधाएं मुहैया करवाना सरकार की प्राथमिकता

पायनियर समाचार सेवा। पलवल

आंगनबाड़ी केंद्रों को प्ले स्कूल बनाने की प्रकिया के अंतर्गत वहां मूलभूत सुविधाएं उपलब्ध करवाना सरकार की प्राथमिकता है। सरकार इन प्ले स्कूलों में बच्चों को पढ़ाने के साथ-साथ मूलभूत सुविधाएं मुहैया करवाने पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। इस प्रक्रिया के तहत जिला की 122 आंगनबाड़ी केंद्रों को प्ले स्कूलों में अपग्रेड किया गया है, जिनमें से 98 प्ले स्कूल आसआस के प्राइमरी स्कूल में स्थापित किए गए हैं। इसके अलावा 24 प्ले स्कूल आंगनबाडी केंद्रों में ही चलाए जा रहे हैं। इन प्ले स्कूलों में बच्चों के साथ-साथ स्टॉफ के लिए मूलभूत सुविधाएं मुहैया करवाने के दृष्टिगत बीडीपीओ, ग्राम पंचायतों व ग्राम सचिवों के साथ बैठक का आयोजन किया गया। बैठक की अध्यक्षता डीडीपीओ उपमा अरोड़ा ने की। उन्होंने ने कहा कि जो 98 प्ले स्कूल प्राइमरी विद्यालयों में चलाए जा रहें हैं, उन सभी में कमरे, रसोई एवं चाइल्ड फ्रेंडली टॉयलेट की मरम्मत अथवा निर्माण की आवश्यकता है।

डीडीपीओ ने सरपंचों को निर्देश दिए कि संबंधित ग्राम पंचायत इन प्ले स्कूलों में आवश्यकतानुसार मरम्मत व निर्माण कार्य का रेजोल्यूशन पास करवाकर वहां कार्य तुरंत प्रभाव से शुरू करवाएं।

अग्रसेन जयंती पर वैश्य समाज ने की महाआरती व भजन कीर्तन

पायनियर समाचार सेवा। फरीदाबाद

वैश्य समाज सेक्टर 28, 29, 30, 31 ने श्री अग्रसेन जी महाराज की 5149वीं जयंती पर 101 थालियों से महाआरती कर अग्रसेन जी का वंदन किया। सेक्टर-28 के रघुनाथ मंदिर परिसर में श्री अग्रसेन जी के विशाल चित्र के समक्ष समाज के अध्यक्ष विनेश अग्रवाल की अध्यक्षता में एकत्रित सैकड़ों वैश्य अग्रवालजनों ने सुबह छह बजे अग्रसेन के भजनों पर नाच गाकर जयंती मनाई।

इस अवसर पर प्रसिद्ध उद्योगपति व समाजसेवी नरेश अग्रवाल ने अग्रसेन के जीवन पर प्रकाश डालते हुए कहा कि अग्रसेन के सिद्धांत एवं आदर्श आज भी उतने ही प्रसांगिक हैं। आज सर्वत्र कहे जा रहे नारे सबका साथ सबका विकास सूत्र को अग्रसेन जी ने 5149 वर्ष पहले ही अपने राज्य में धारण कर लिया था। अग्रसेन के सुसंस्कारों का अनुसरण करते हुए ही आज समानता, समाजवाद, अहिंसा एवं समाजसेवा की भावना वैश्य समाज के लोगों में व्याप्त है। मंच संचालन करते हुए महासचिव बीआर सिंगला ने कहा कि अग्रकुल में जन्म लेना हम सबका परम सौभाग्य है। सिंगला ने कहा कि वर्ष 1993 में स्थापित 900 सदस्यों वाला हमारा यह वैश्य संगठन आज पूरे महानगर में निरंतर व सबसे सक्रिय संगठन के नाते जाना जाता है। महाआरती के कार्यक्रम में नरेश अग्रवाल, विनेश अग्रवाल, बीआर सिंगला, विष्णु गुप्ता, बलराज गुप्ता, अरुण मित्तल, दीपचंद गुप्ता, सुधा गुप्ता, अनिता गुप्ता, सुमन सिंगला, सरोज गुप्ता आदि मौजूद थे।

सफल ऑपरेशन होने पर दो साल बाद मरीज ने ली खुलकर सांस

पायनियर समाचार सेवा। फरीदाबाद

सांस की नली सिकुड़ने के कारण लंबे समय तक मरीज ने जी पीड़ा भरी जिंदगी

सेक्टर-16 स्थित मैरिंगो एशिया अस्पताल में ईएनटी और सीटीवीएस (कार्डियोथोरेसिक एंड वैस्कुलर सर्जरी) टीम ने मिलकर फरीदाबाद से 28 वर्षीय राजेश चौधरी की दो साल से बंद पड़ी सांस की नली का सफल ऑपरेशन किया। ऑपरेशन के बाद मरीज ने खुलकर सांस ली। मैरिंगो एशिया अस्पताल फरीदाबाद में ईएनटी रोग विभाग के एचओडी एवं सीनियर कंसल्टेंट डॉ. आनंद गुप्ता ने बताया कि सन 2020 में सड़क दुर्घटना के कारण मरीज के ब्रेन में क्लॉट (खून का थक्का जमना) की समस्या हो गई थी। इसके लिए मरीज की शहर के अन्य अस्पताल में ब्रेन सर्जरी की गई।

वहां मरीज को लगभग 40 दिनों तक आईसीयू में वेंटिलेटर पर रखा गया। फिर दोबारा से मरीज को ब्रेन में खून का थक्का जमने की समस्या हुई तो फिर से ब्रेन की सर्जरी की गई। इस कारण मरीज को लगभग 60 दिनों तक आईसीयू में रहना पड़ा। दो बार मरीज के गले में ट्यूब डाली गई और गले का रास्ता खोला गया। गले में ट्रेकियोस्टोमी सर्जरी करके बाहर से पाइप डाली गई थी। इसके कारण गले में सांस का रास्ता ऊपर से सिकुड़ गया। सांस का रास्ता सिकुड़ने के कारण शुरू के एक साल तक मरीज ट्रेकियोस्टोमी ट्यूब पर ही रहा। मरीज को सांस आती ही नहीं थी।

मरीज ने कुछ लेजर थेरेपी भी कराई। फिर सांस आने पर मरीज के गले से ट्रेकियोस्टोमी ट्यूब निकाल दी गई। लेकिन मरीज को चलने में काफी परेशानी होती थी, क्योंकि थोडा सा चलने पर उसकी सांस फूल जाती थी। जब मरीज हमारे पास आया था तो उस समय उसके गले में ट्रेकियोस्टोमी ट्यूब नहीं थी और वह सीढियां भीं नहीं चढ़ पा रहा था।

एमआरआई और सीटी स्कैन कराने पर हमें पता चला कि गले से लेकर फेफड़ों तक जाने वाले सांस का रास्ता लगभग 45 प्रतिशत सिकुड़ा हुआ था। मरीज के फेफड़ों में कोई परेशानी नहीं थी। ठीक से इन्वेस्टिगेशन करने के बाद हमने मरीज के सांस की नली (ट्रेकिआ) लगभग 3.5-4 सेंटीमीटर लंबे ब्लॉक हिस्से को

काटकर निकालने का निर्णय लिया। इस प्रोसीजर के दौरान छाती को खोलने के लिए सीटीवीएस (कार्डियोथोरेसिक एंड वैस्कुलर सर्जरी) टीम की मदद ली गई।

सांस की नली के बंद हिस्से को गले के निचले हिस्से और छाती के बीच वाले हिस्से से खोलकर हटा दिया। फिर सांस की नली को छाती की सांस की नली से जोड़ दिया, ऑपरेशन सफल रहा। अब मरीज पूरी तरह ठीक है और सामान्य रूप से सांस ले रहा है। चलने-फिरने भी लगा है। स्वस्थ होने पर मरीज को अस्पातल से डिस्चार्ज कर दिया गया है। मरीज राजेश चौधरी ने ईएनटी रोग विभाग के एचओडी एवं सीनियर कंसल्टेंट डॉ. आनंद गुप्ता और सीटीवीएस (कार्डियोथोरेसिक एंड वैस्कुलर सर्जरी) टीम का धन्यवाद किया और कहा कि वह अपने घर में इकलौता कमाने वाला इंसान है और सांस की इस समस्या के कारण उसे अपने परिवार के पालन-पोषण को लेकर भी काफी परेशानी हो रही थी।

ठीक होने के बाद अब वह अपने काम पर नियमित रूप से जा सकता है। अगर इलाज में ज्यादा देरी होती तो सांस का रास्ता और भी ज्यादा ब्लॉक हो जाता और छाती में पानी भर सकता था। इस कारण मरीज को न्यूमोनिया हो सकता था और छाती में टीबी हो सकती थी। इससे मरीज की जान जाने का जोखिम बढ़ जाता।

सलाह : जब भी किसी व्यक्ति को किसी समस्या के चलते लंबे समय तक आईसीयू में रहना पड़े तो ईएनटी सर्जन की मदद से मुंह से ट्यूब डालने की बजाय गले में पहले ही ट्रेकियोस्टोमी ट्यूब डाल दी जानी चाहिए और ट्रेकियोस्टोमी ट्यूब की ठीक से देखभाल की जानी चाहिए। इससे सांस के रास्ते में मरीज को समस्या नहीं आएगी।

संक्षिप्त समाचार

सेक्टर 21ए की हुडा मार्केट में सजा मां भवानी का दरबार

फरीदाबाद। सेक्टर 21ए के हुडा मार्केट पार्क में नवयुवक संगठन की ओर से 21वें विशाल भगवती जागरण कार्यक्रम का शुभारंभ मां भवानी की पूजा अर्चना आरती के साथ हुआ। समन्वय मंदिर सेक्टर 21डी से संबद्ध अमित पाठक एवं संतोष गौतम ने संयुक्त रूप से मंत्रोच्चार के साथ विधिवत प्रतिष्ठा कार्यक्रम शुरू करवाया। नवयुवक संगठन के पदाधिकारी विपिन कुमार एवं सुनील कुमार ने बताया कि दशहरा तक प्रतिदिन प्रात: व सांयकाल मां भवानी दरबार में पूजा होगी एवं 23-24 को दशहरा के अवसर पर जागरण व विशाल भंडारे का आयोजन किया जाएगा। इस मौके पर भारत, विनोद कुमार, मनोज कुमार, राजेश, गोलू, संतोष, छोटेलाल, युगल किशोर शर्मा आदि कई श्रद्धालु उपस्थित थे।

छात्रों में आत्मविश्वास बढ़ाने के लिए दी गई फ्रेशर पार्टी

पलवल। जीजीडीएसडी कॉलेज के वनस्पति विभाग स्नातकोत्तर के 2023-24 के छात्रों के लिए उनके वरिष्ठ छात्रों ने फ्रेशर्स पार्टी का आयोजन किया। इस अवसर पर छात्रों ने अपनी रुचि के अनुसार कार्यक्रम में गायन, नृत्य, शायरी एवं कविताओं का प्रदर्शन किया। छात्रों के आत्मविश्वास व साहस को निखारने के लिए रैंप वॉक का भी आयोजन किया गया। नवागत छात्रों को उनके प्रदर्शन के लिए निर्णायक मंडल डॉक्टर कांता रानी वनस्पति विभागाध्यक्षा और डॉ. मनीषा अग्रवाल ने उनकी प्रतिभा, परिधान चयन, आत्मविश्वास और प्रश्नों के जवाब के लिए अंक दिए। महाविद्यालय की प्राचार्या प्रतिभा सिंगला ने बताया कि किस तरह सार्वजनिक मंच पर प्रदर्शन करके छात्र नया आत्मविश्वास अर्जित कर सकते हैं और उसे अपने करियर में उपयोग कर सकते हैं। उन्होंने कार्यक्रम में शामिल प्रथम वर्ष के सभी छात्रों को उपहार वितरित किया। इस कार्यक्रम का मंच संचालन द्वितीय वर्ष की छात्रा विनीता और वंशिका ने किया। प्रथम वर्ष के छात्र कृष्ण को मिस्टर फ्रेशर, पूजा को मिस फ्रेशर और भावना को मिस इनरजैनेटिक चुना गया। इस मौके पर डॉ. वंदना कालरा, डॉ. नेहा भटनागर, कंचन, डॉ. दीपा, पिंकी, साक्षी, विजया जैन, सुनील और नरेश आदि उपस्थित रहे।

बघौला के सरकारी स्कूल में कराया योग अभ्यास

पलवल। मॉडर्न विद्या मंदिर सीनियर सेकेंडरी स्कूल बघौला में प्रत्येक रविवार को एक योग शिविर का आयोजन सभी विद्यार्थियों, युवाओं, महिलाओं व बुजुर्गों के लिए प्रात: छह से आठ बजे किया जाएगा। जिसकी शुरुआत 15 अक्टूबर से की गई। योग एवं चिकित्सा शिविर का शुभारंभ गायत्री मंत्र महामंत्र से किया गया। इस योग शिविर का संयोजन विद्यालय के मुख्य अध्यापक जुगल किशोर की देखरेख में किया गया। योगाचार्य कृष्ण भारद्वाज ने सभी को शारीरिक व्यायाम और योग क्रियाएं जैसे सूर्य नमस्कार, अनुलोम विलोम, भ्रामरी, कपालभाति, ओम जाप का अभ्यास कराया।

आरडब्ल्यूए के पंजीकृत होने पर किया हवन

पलवल। आरडब्ल्यूए शिव विहार कॉलोनी रेजिडेंट विकास सोसायटी के सभी पदाधिकारियों व कॉलोनी वासियों ने सोसइटी को पंजीकृत होने की खुशी में ब्राइट किंगडम स्कूल में हवन यज्ञ का आयोजन किया। पतंजलि योगपीठ हरिद्वार के तत्वावधान में चल रहे सह योग शिक्षक प्रशिक्षण शिविर का भी शुभारंभ किया गया। जिसमें मुख्य अतिथि नगर परिषद के वाइस चेयरमैन मनोज कुमार बंधु, वार्ड नंबर-23 के पार्षद दिनेश सैनी, पूर्व पार्षद मोहित गोयल व वार्ड नंबर 25 की पार्षद रेखा शर्मा रहे। जिनके सामने सोसाइटी गठित करने के उद्देश्य रखे गए। जिसका वाइस चेयरमैन व पार्षदगणों ने कॉलोनी की साफ सफाई व अन्य सामाजिक कार्यों को करवाने का आश्वासन भी दिया। हवन में आरडब्ल्यूए के प्रधान राजकुमार शर्मा एडवोकेट, उपप्रधान जितेश कौशिष एडवोकेट, महासचिव रवि डांगी एडवोकेट, सहसचिव शिव ओम भार्गव आदि लोग मौजूद रहे।

फिलिस्तीन मुद्दा
भारत का दृष्टिकोण

फिलिस्तीन के मुद्दे पर भारत के दृष्टिकोण में कोई परिवर्तन नहीं हुआ है। हालांकि, मीडिया तथा कुछ लोगों का अनुमान है कि भारत ने फिलिस्तीनी लक्ष्य का समर्थन करने की अपनी दीर्घकालिक नीति बदल दी है। पिछले सप्ताह इज़राइल पर हमास के हमले के बाद प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 'एक्स' पर इज़राइल के साथ एकजुटता प्रदर्शित करते हुए कहा था कि भारत इस देश के साथ दु:ख के समय खड़ा है। भारत में बहुत से लोगों ने इस बयान को गलती से इज़राइल पर दृष्टिकोण बदलने की तरह देखा। इसका कारण इज़राइल के साथ भारत की बढ़ती निकटता तथा नई दिल्ली में मध्य से दक्षिण की ओर झुकी भाजपा सरकार है। लेकिन विश्लेषकों ने इस मामले में जल्दबाजी की। भारत ने हमेशा फिलिस्तीनी जनता तथा फिलिस्तीनियों के न्यायोचित लक्ष्य का समर्थन किया है। उसका मानना है कि फिलिस्तीनियों का अपना देश होना चाहिए जिसमें बाहरी शक्तियों का कोई हस्तक्षेप न हो। लेकिन भारत ने हमेशा दोनों पक्षों की ओर से आतंकवाद तथा बल प्रयोग को अस्वीकार किया है और उसने बातचीत के आधार पर समझौते की पैरवी की है। फिलिस्तीनी लक्ष्य के प्रति भारत का समर्थन निरंतर बना हुआ है। 1974 में भारत ने फिलिस्तीनी मुक्ति संगठन-पीएलओ को फिलिस्तीनी जनता के एकमात्र व वैध प्रतिनिधि के रूप में मान्यता दी थी और ऐसा करने वाला वह पहला गैर-अरब देश था। 1988 में भारत ने फिलिस्तीन राज्य को मान्यता दी थी। 1996 में ही भारत ने फिलिस्तीन के गाजा शहर में अपना प्रतिनिधि कार्यालय खोला था। भारत ने विभिन्न अंतरराष्ट्रीय मंचों पर हमेशा फिलिस्तीनी लक्ष्य का समर्थन किया। संयुक्त राष्ट्र महासभा-यूएनजीए के 53वें सत्र में 'फिलिस्तीनियों को आत्मनिर्णय का अधिकार'

पर प्रस्ताव पास हुआ था, भारत इसका सह-प्रायोजक था और उसने इसके पक्ष में वोट दिया था। भारत ने अक्टूबर, 2003 में भी यूएनजीए प्रस्ताव का समर्थन किया था जिसमें इज़राइल द्वारा अलग करने वाली दीवाल बनाने का विरोध किया गया था।

लेकिन हमास और फिलिस्तीन उसी प्रकार समानार्थी नहीं हैं जिस प्रकार लिट्टे व श्रीलंका में रहने वाले तमिल एक नहीं थे। जब प्रधानमंत्री ने बयान दिया तो उसमें उन्होंने हमास की हिंसक कार्रवाइयों का समर्थन नहीं किया। भ्रम दूर करने के लिए विदेश मंत्रालय ने संप्रभु फिलिस्तीन राज्य बनाने के अपने आह्वान की पुष्टि की। प्रवक्ता ने कहा कि मानवतावादी सिद्धान्तों का समर्थन 'जिम्मेदारी' है और भारत का लंबे समय से यही दृष्टिकोण है। विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता अरिंदम बागची ने कहा, 'भारत ने हमेशा एक संप्रभु, स्वतंत्र तथा सक्षम फिलिस्तीन राज्य बनाने के लिए सीधे वार्तायें बहाल करने की पैरवी की है जो अपनी सुरक्षित व स्वीकृत सीमाओं में रहे तथा इज़राइल के साथ शांति बनाए रखे।' हालांकि, उन्होंने सीधे तौर पर हमास को आतंकी संगठन नहीं कहा। दोनों पक्षों के बीच चार बार पहले टकराव के बाद हमास ने उस क्षेत्र पर मजबूती से कब्जा कर लिया है जहां वह 2007 से शासन में शामिल था। इस बीच भारत ने अपने नागरिकों को इज़राइल से निकालने के लिए 'आपरेशन विजय' शुरू किया है तथा लोगों को वहां से ले कर उड़ानें भारत आने लगी हैं। अब तक किसी भारतीय की मृत्यु की खबर नहीं मिली है। तेजी से बदलती स्थितियों में भारत सभी 'महत्वपूर्ण पक्षों' के साथ निकट संपर्क बनाए हुए है। अब तक भारत का दृष्टिकोण निरंतरता पर आधारित रहा है, लेकिन स्थिति तेजी से बदल रही है। यदि कोई आमूल परिवर्तन होता है तो भारत को अपनी पश्चिम एशिया नीति की समीक्षा की जरूरत पड़ सकती है।

आम चुनाव के लिए बनती रणनीति

पांच राज्यों में विधानसभा चुनावों के नतीजे 2024 लोकसभा चुनाव प्रभावित कर सकते हैं। इससे राजनीतिक दलों द्वारा अपनाई रणनीतियों का खुलासा होगा।

के.एस. तोमर
(लेखक, वरिष्ठ पत्रकार हैं)

पांच राज्य विधानसभाओं के चुनाव में राजग व 'आई.एन.डी.आई.ए' या 'इंडिया' के बीच विभाजक रेखायें स्पष्ट होती जा रही हैं। हालांकि, राजग उम्मीदवारों की सूचियां जारी करने में 'इंडिया' से आगे है जो सुविचारित रणनीति का हिस्सा है। कुछ लेखक इसे 2024 का 'सेमीफाइनल' मान रहे हैं, लेकिन इससे कोई अंतर नहीं पड़ता है क्योंकि मतदाताओं को अभी अपना मन बनाना है। हालांकि, कोई भी पांच राज्यों के चुनावों के परिणामों से ऐसे नतीजे नहीं निकाल सकता है जिनका प्रभाव 2024 लोकसभा चुनाव में मतदाताओं की सोच पर पड़ता हो।

भाजपा आलाकमान और आरएसएस के सर्वोच्च नेताओं ने पार्टी के चेहरे के तौर पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को पेश किया है और उन्होंने राजस्थान, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ व मिजोरम में संभावित मुख्यमंत्रियों के नाम नहीं घोषित किए हैं। भाजपा ने तीन चुनावी राज्यों में 24 सांसदों व 4 केन्द्रीय मंत्रियों को चुनाव में उतारने की रणनीति बनाई है जिनमें मध्य प्रदेश, राजस्थान व छत्तीसगढ़ शामिल हैं। इससे भाजपा की 'परेशानी और प्रतिबद्धता' प्रकट होती है कि वह इन राज्यों में विजय सुनिश्चित कर 2024 लोकसभा चुनाव के लिए बेहतर विमर्श तैयार करना चाहती है। इसका लक्ष्य मतदाताओं में वर्तमान विधायकों के प्रति नाराजी को 'निष्प्रभावी' करना है ताकि वे इन निर्वाचन क्षेत्रों में नए चेहरों पर पुनर्विचार कर सकें। राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि यह यह पार्टी के रणनीतिकारों की सुविचारित रणनीति के साथ एक खोजी तरीका भी है। प्रधानमंत्री मोदी मतदाताओं को आकर्षित करने वाले हैं जिनकी राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय छवि का प्रयोग मतदाताओं को अपने पक्ष में लाने के लिए हो सकता है। दूसरा, सर्वोच्च पद के लिए अनेक लोगों की उपस्थिति को देखते हुए यह गुटबाजी व विद्रोह रोकने की रक्षात्मक रणनीति है।

इसी कारण भाजपा ने हर राज्य में एक मुख्यमंत्री उम्मीदवार नहीं घोषित किया है।

मध्य प्रदेश में वर्तमान मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान पर लगाम लगाने के लिए भाजपा आलाकमान ने उम्मीदवारों की पहली सूची में नरेन्द्र सिंह तोमर, प्रह्लाद सिंह पटेल तथा फग्गन सिंह कुलस्ते व सांसदों को उतार कर सबको आश्चर्यचकित कर दिया। पार्टी के आंकलन के अनुसार केन्द्रीय मंत्रियों का पूरे राज्य पर प्रभाव है और उनको जनता के बीच अपनी राज्यव्यापी स्वीकार्यता सिद्ध करनी है। हालांकि, सवाल है कि क्या उन्होंने अपने विधानसभा क्षेत्रों पर समुचित ध्यान दिया है जो विरोधियों को हराने के लिए जरूरी है? राजनीतिक विश्लेषकों का विश्वास है कि मंत्री आमतौर से बड़े क्षेत्रों पर ध्यान देते हैं और अपने गृह राज्यों में किसी खास तबके पर विरले ही ध्यान देते हैं। इससे उनके लिए समस्या पैदा हो सकती है।

इस तथ्य से इनकार नहीं किया जा सकता है कि गांवों तक फैले मतदाताओं की इच्छायें बहुत बढ़ गई हैं और वे तार्किक आधारों पर अपना फैसला करेंगे। आवश्यक वस्तुओं की कीमतों में भारी वृद्धि के कारण बेरोजगार नौजवानों की इच्छायें भी बहुत ऊंची हैं। इसलिए मतदान करते समय वे हर उम्मीदवार के पूरे पांच साल के कामकाज पर ध्यान देंगे। विशेषज्ञों का मानना है कि सांसद या मंत्री विरले ही अपने खास निर्वाचन क्षेत्रों के माइक्रो-प्रबंधन पर ध्यान देते हैं और मध्य प्रदेश में भी उनके सामने यह चिन्ता होगी। शिवराज सिंह चौहान की तुलना में शायद उनका राज्य-स्तरीय दर्जा न हो। राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि यदि भाजपा राजस्थान और छत्तीसगढ़ की कांग्रेस सरकारों तथा तेलंगान में सी.एस. राव की 'भारत राष्ट्र समिति'-बीआरएस को सत्ता से हटाने में विफल रहती है तथा मध्य प्रदेश में भी सत्ता खो देती है तो इसका सीधा प्रभाव 2024 के लोकसभा चुनाव पर पड़ सकता है।

लेकिन यदि ये नतीजे भाजपा के पक्ष में जाते हैं तो उसका लगातार तीसरे कार्यकाल के लिए मोदी की विजय सुनिश्चित करने पर दूना प्रभाव पड़ेगा। लेकिन इसके उलट इस तथ्य को भी अनदेखा नहीं किया जा सकता है कि विधानसभा चुनाव स्थानीय मुद्दों पर लड़े जाते हैं और मतदाता राजस्थान, छत्तीसगढ व तेलंगाना में मुख्यमंत्रियों द्वारा बांटी जाने वाली 'खैरातों' से प्रभावित हो सकते हैं। हालांकि, भाजपा शासित मध्य प्रदेश ने भ्ज्ञी जनता को अनेक रियायतें दी हैं। जब मोदी 2024 में देश से अपने लिए वोट देने की अपील करेंगे तथा 'आई.एन.डी.आई.ए' गठबंधन अपना प्रधानमंत्री उम्मीदवार चुनने में विफल होगी तो चुनावी परिदृश्य एकदम अलग होगा। इसका कारण गठबंधन में भीतरी टकराव तथा कांग्रेस समेत प्रत्येक क्षेत्रीय क्षत्रप की अपनी व्यक्तिगत महत्वाकांक्षायें हैं।

राजस्थान में राजे-समर्थकों को किनारे किया गया है। जमीनी रिपोर्टों से स्पष्ट है कि गजेंद्र सिंह शेखावत, अश्विनी वैष्णव, अर्जुन राम मेघवाल व पूर्व केन्द्रीय मंत्री राज्यवर्धन राठौर का जमीनी स्तर पर राजे की तरह मजबूत संपर्क नहीं है। जयपुर के पूर्व राज-परिवार की दिया कुमारी राजसमंद से सांसद हैं और वे जयपुर के विद्याधर नगर से चुनाव लड़ेंगी जिसका प्रतिनिधित्व स्वर्गीय भैरों सिंह शेखावत के दामाद नरपत सिंह राजवी कर रहे हैं। इसके साथ ही मीणा समुदाय के नेता व राज्यसभा सांसद किरोड़ी लाल मीणा सवाई माधोपुर सीट से लड़ेंगे जहां मीणा-गुज्जर समुदायों का प्रभुत्व है। भाजपा ने राजे को पांच साल तक राजनीतिक अज्ञातवास में रखा है जिससे पूर्व-मुख्यमंत्री एक सीमा तक पार्टी कार्यकर्ताओं से कट गई हैं, हालांकि अब भी उनके समर्थक विधायकों की संख्या सबसे अधिक है।

राजे अपने गृह क्षेत्र, कोटा जिले के झालावाड़ में भी भाजपा की 'परिवर्तन यात्रा' में शामिल नहीं हुई थीं, जबकि वहां जनता से उनका लंबे समय से जुड़ाव है। भाजपा अशोक गहलोत के पांच साल के कार्यकाल में आक्रामक विपक्ष की भूमिका नहीं निभा सकी क्योंकि आलाकमान युवा पीढ़ी के नेताओं के साथ प्रयोग कर रही थी। छत्तीसगढ़ में कांग्रेस की स्थिति काफी मजबूत मानी जा रही है जिसका कारण भूपेश बघेल का नेतृत्व है। इंडिया टुडे-सीवोटर सर्वेक्षण के अनुसार भाजपा कांग्रेस से पांच प्रतिशत का अंतर घटा सकती है, पर इससे उसे कांग्रेस को 46 सीट के बहुमत तक पहुंचने से रोकना संभव नहीं होगा। भाजपा ने मुख्यमंत्री के भतीजे विजय बघेल को उम्मीदवार बनाया है जो लोकसभा सांसद हैं। भाजपा की छत्तीसगढ़ इकाई पिछले पांच साल में बघेल सरकार को घेरने में सफल नहीं हुई है। इससे कांग्रेस को लाभ हो सकता है। पूर्व मुख्यमंत्री रमन सिंह का भाजपा आलाकमान की रणनीति में महत्वपूर्ण स्थान नहीं है। छत्तीसगढ़ में विधानसभा चुनाव से पूर्व भाजपा नेता व पूर्व राज्यसभा सदस्य रणविजय प्रताप सिंह जूदेव ने सभी संगठनात्मक पदों से इस्तीफा देने की इच्छा प्रकट की थी, हालांकि वे भाजपा में प्रतिबद्ध रूप से बने हुए हैं।

तेलंगाना में राजनीतिक टकराव बहुत तीखा है। मध्य प्रदेश की तरह केन्द्रीय मंत्रियों या सांसदों के 'करिश्मे' पर विश्वास करते हुए भाजपा आलाकमान ने राज्य इकाई की जिम्मेदारी केन्द्रीय मंत्री जी. किशन रेड्डी को सौंपी है। लेकिन उनके सामने पार्टी में व्याप्त गुटबाजी पर लगाम लगाने की कठोर चुनौती है। केसीआर सरकार के खिलाफ मुखर बंदी संजय कुमार को हटाने से पार्टी कार्यकर्ताओं को सही संकेत नहीं मिले हैं, हालांकि भाजपा इससे इनकार करती है। भाजपा ने अपने 'गुजरात माडल' पर चलते हुए पुरानी पीढ़ी के नेताओं के स्थान पर नई पीढ़ी के नेताओं को स्थान देने का प्रयोग पूरे देश में किया है। इसके सकारात्मक परिणाम उत्तराखंड, गोवा व त्रिपुरा में दिखाई पड़े, लेकिन कुछ राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि कर्नाटक में भाजपा की हार के पीछे यह प्रयोग एक बड़ा कारण रहा है।

अब यह देखना दिलचस्प होगा कि क्या मंत्रियों व सांसदों को चुनाव मैदान में उतारने की रणनीति भाजपा को लाभ दिलाएगी या उसके विपरीत नतीजे सामने आ सकते हैं।

कोविड-19 महामारी से मिले सबक

महामारी के दौरान किशोरों के अनुभव मूल्यवान सबक हैं। उनकी कहानियां विपरीत परिस्थितियों में लचीलेपन और अनुकूलन के बारे में हैं।

कमरुन निसां
(लेखिका स्वतंत्र स्तम्भकार हैं)

जैसा कि हम कोविड-19 के उद्भव के बाद से पिछले तीन वर्षों पर विचार करते हैं, हम खुद को हमेशा के लिए बदली हुई दुनिया में पाते हैं। महामारी ने जीवन को अस्त-व्यस्त कर दिया, हमारे मानदंडों को नया आकार दिया और विशेष रूप से किशोर आबादी पर एक अमिट छाप छोड़ी।

जबकि हम आगे बढ़ने और सामान्य स्थिति हासिल करने का प्रयास करते हैं, इस अवधि के दौरान किशोरों के अनुभव मूल्यवान सबक देते रहते हैं। उनकी कहानियां विपरीत परिस्थितियों में लचीलेपन, अनुकूलन और परिवर्तन का प्रमाण बनी हुई हैं - एक संदेश जो आज और भी अधिक मजबूती से गूंजता है। लेह, लद्दाख के मध्य में, चुचोट ब्लॉक के गोंगमा गांव के 17 वर्षीय निवासी मोहम्मद सज्ञेन जैसे किशोरों को कोविड-19 महामारी के दौरान असाधारण चुनौतियों का सामना करना पड़ा। विपरीत परिस्थितियों में उनकी यात्राएं ऐसी अंतर्दृष्टि प्रदान करती हैं जो न केवल प्रासंगिक हैं बल्कि वर्तमान की अनिश्चितताओं से निपटने में भी महत्वपूर्ण हैं।

लेह के जिला मुख्यालय से लगभग 18 किलोमीटर दूर स्थित चुचोट गांव, जनता कर्फ्यू से कुछ हफ्ते पहले तालाबंदी लागू करने वाले भारत के पहले स्थानों में से एक था। जब महामारी शुरू हुई, तो सैप्टेन ने खुद को घर से दूर जम्मू में पढ़ाई करते हुए पाया। डर, अनिश्चितता और अपने परिवार से दूरी का उन पर भारी असर पड़ा। ऑल लद्दाख स्टूडेंट वेलफेयर एसोसिएशन के समर्थन के लिए धन्यवाद, सैप्टेन और अन्य फंसे हुए छात्र अंतत: लेह वापस आ गए। घर लौटने पर, सैप्टेन को नई चुनौतियों का सामना करना पड़ा। उसके माता-पिता, जाहिर तौर पर, चाहते थे कि वह अपनी पढ़ाई में उत्कृष्टता प्राप्त करे, ऐसा माहौल बनाए जो प्रतिबंधात्मक लगे। तनाव से निपटने के लिए सैप्टेन ने अपने दोस्तों के साथ धूम्रपान करना शुरू कर दिया। फिर भी, उन्हें जल्द ही एहसास हुआ कि धूम्रपान न केवल उनके स्वास्थ्य को बल्कि उनके सपनों को भी खतरे में डालता है, खासकर फुटबॉल के प्रति उनके जुनून को। अपनी भलाई और आकांक्षाओं को प्राथमिकता देने के लिए दृढ़ संकल्पित होकर, उन्होंने धूम्रपान छोड़ने का फैसला किया। हालांक, उनके सभी दोस्तों को नशे की गिरफ्त से छुटकारा पाना इतना आसान नहीं लगा। उनके संघर्ष इस बात की स्थायी याद दिलाते हैं कि कैसे महामारी ने युवाओं के जीवन पर प्रभाव छोड़ा है।

लेह में 17 वर्षीय स्कर्मा त्सेरिंग वांग्याल के परिवार की कहानी उन अप्रत्याशित तरीकों को दर्शाती है जिसमें महामारी ने परिवारों को करीब ला दिया। स्कर्मा के माता-पिता, जो महामारी की शुरुआत में लेह से बाहर थे, घर लौट आए और उनका कोविड-19 टेस्ट पॉजिटिव आया। शर्मा ने खुद को घर पर अकेला पाया, डर और तनाव से जूझ रहे थे। उनके छोटे भाई की चिंता, जो उस समय कर्नाटक में था, ने उनकी चिंता को और बढ़ा दिया।

अनेक चुनौतियों के बावजूद, स्कर्मा और उनके परिवार ने उन विचित्र परिस्थितियों में आशा की किरण खोजी। इस दौरान उनके साझा अनुभवों ने उन्हें करीब ला दिया और उन्हें अपने बंधन में मजबूती मिली। संकर, लेह की एक मां रिचेन डोल्मा ने अपना दृष्टिकोण साझा किया कि महामारी ने उनके परिवार को कैसे प्रभावित किया। शुरुआत में अपनी बेटी के स्कूल प्रवेश के लिए जम्मू में एक छोटे से अवकाश की योजना बना रही थीं, लेकिन महामारी की अप्रत्याशित चपेट के कारण उनका प्रवास बढ़ा दिया गया। इसके कारण 15 दिन का अवकाश लंबे समय तक खिंच गया और उनकी स्थिति की अनिश्चितता ने उन पर बहुत भारी असर डाला।

इस दौरान रिचेन ने अपनी बेटी के व्यवहार में आने वाले बदलाव को देखा। कई छात्रों की तरह, उनकी बेटी को भी ऑनलाइन कक्षाओं में भाग लेना पड़ता था, जिसके लिए मोबाइल फोन की आवश्यकता होती थी। हालाँकि, उनकी बेटी ने अन्य उद्देश्यों के लिए फोन का उपयोग करना शुरू कर दिया, जिससे चिंताएं बढ़ गईं। हालांकि ऑनलाइन संसाधनों ने लचीले सीखने के अवसर प्रदान किए, लेकिन स्क्रीन पर बिताया गया समय और मोबाइल फोन का उपयोग चिंता का विषय बन गया।

इन परिवारों को, कई अन्य लोगों की तरह, महामारी के दौरान ऑनलाइन सीखने और अपने बच्चों के लिए स्क्रीन पर समय बढ़ाने की चुनौतियों का सामना करना पड़ा। यह अनुभव लोगों के जीवन में सकारात्मक और नकारात्मक दोनों तरह के बदलाव लेकर आया, जो किशोरों और उनके परिवारों पर पड़े जटिल प्रभाव को दर्शाता है।

लेह के निमू के 16 वर्षीय रिग्ज़ेन नर्बू की मां त्सेतान कुन्जेस ने साझा किया कि महामारी ने उनके परिवार को कैसे प्रभावित किया। उनका बेटा, जो एक समय अपने फोन पर बहुत अधिक निर्भर नहीं था, तेजी से गेमिंग और स्क्रीन में तल्लीन हो गया। स्क्रीन की लत के कारण व्यवहार में बदलाव आया, निराशा बढ़ी और पढ़ाई के प्रति उपेक्षा हुई। त्सेतन की कहानी महामारी के दौरान कई परिवारों के सामने आने वाली चुनौतियों को प्रतिबिंबित करती है, किशोरों और उनके परिवारों पर प्रौद्योगिकी की लत और अलगाव के महत्वपूर्ण प्रभाव को रेखांकित करती है।

ये कहानियां किशोरों पर महामारी के बहुमुखी प्रभावों को उजागर करती हैं। प्रतिकूल परिस्थितियों का सामना करते हुए, मोहम्मद सज्ञेन और स्कर्मा त्सेरिंग वांग्याल जैसे युवा व्यक्तियों ने लचीलापन प्रदर्शित किया और अनिश्चित समय में हमारा मार्गदर्शन किया। रिनचेन डोल्मा और त्सेतन कुंजेस जैसे परिवारों ने महामारी की अप्रत्याशितता और चुनौतियों का अनुभव किया, तूफान से निपटना सीखा और इस प्रक्रिया में ताकत और एकता पाई।

आप की बात

विपक्षी बयानबाजी

राजनीतिक मत-मतान्तर सत्ता व विपक्ष के बीच होना स्वाभाविक है, किन्तु ये देश के अंदर तक ही सीमित रहना चाहिए। देश के बाहर न तो सत्ता की आलोचना होनी चाहिए और न ही गंभीर विदेश-नीति या नीतिगत निर्णय के विरोध में विपक्ष को जाना चाहिए। इजराइल-हमास युद्ध के मामले में जब सरकार ने इजराइल का पक्ष लिया और उसके साथ खड़े रहने की बात की तब विपक्ष को सरकार के निर्णय के खिलाफ बयानबाजी नहीं करनी चाहिए। हमें इज़राइल से सबक लेना चाहिए जहां युद्धकाल में अलग कैबिनेट का गठन कर उसमें विपक्षी पूर्व सेनाधिकारी को शामिल किया गया है। इजराइल के पूर्व प्रधानमंत्री ने भी कहा है कि हमारे आपस में राजनीतिक मतभेद हो सकते हैं किन्तु युद्ध के मामले में हम सरकार का ही समर्थन करेंगे। आश्चर्य है कि भारत में विपक्ष सरकार की आलोचना करते-करते इतना दिशाहीन हो गया है कि उसे देश का हित-अहित भी नजर नहीं आता है। भले ही सीधे-सीधे न कहा जाए, पर विपक्ष के अनेक नेता तुष्टीकरण दृष्टिकोण से केवल अपने वोटबैंक पर ध्यान केन्द्रित कर रहे हैं। इस प्रकार वे प्रकारान्तर से चुनावी लाभ के लिए भारत में एक समुदाय को भड़काने का प्रयास भी कर रहे हैं।

- **शकुंतला महेश नेनावा,** इंदौर

गर्भपात का मुद्दा

छब्बीस सप्ताह के भ्रूण के गर्भपात की अनुमति को लेकर सुप्रीम कोर्ट में विमर्श चल रहा है। जिसमें एक और एक स्त्री का अपने शरीर पर अधिकार का तर्क है तो दूसरी तरफ अजन्मे बच्चे के हक का तर्क है जिस पर अदालत ने गौर किया है। इस मामले में विचारणीय है कि मां ने गर्भपात के लिए जो मजबूरियां बताईं। लेकिन सवाल उठता है कि शारीरिक संबंध बताते वक्त गर्भनिरोधकों का उपयोग क्यों नहीं किया? वह गर्भधारण के 6 सप्ताह के भीतर भी गर्भपात के लिए आवेदन कर सकती थी, मगर 26 हफ्ते हो जाने के बाद एक अजन्मे शिशु की हत्या कर देने का पाप कोर्ट के सर पर मढ़ना उचित नहीं है। बच्चों को जन्म लेने के बाद उसे गोद लेने वाले सैकड़ों लोग मौजूद हैं और कई संस्थाएं इसके लिए काम कर रही हैं। गर्भपात में महिला के अधिकार बनाम अजन्मे बच्चे के अधिकार को लेकर दुनिया भर में बहस चल रही है। कई बार आश्चर्य होता है कि अमेरिका व यूरोप के अनेक विकसित देशों में भी समाज का एक हिस्सा गर्भपात के पूर्ण विरोध में है, जबकि दूसरा उसके समर्थन में सड़कों पर उतरता रहा है। ऐसे में भारत में न्यायालय को फैसला सावधानी से देना होगा।

-**सुभाष बुड़ावन वाला,** रतलाम

चुनावी वादे

मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़ व मिजोरम समेत पांच राज्यों में विधानसभा चुनाव होने हैं। ऐसे में इन राज्यों में चुनावी वायदों की होड़ शुरू हो गयी है। कोई पार्टी मुफ्त बिजली दे रही है तो कोई रात-दिन सुरक्षा की बात कर रही है। लेकिन विडंबना है कि चुनाव जीतने के बाद भी पार्टियां द्वारा किए वादे अक्सर जमीन पर नहीं दिखते हैं। बिहार के अनेक क्षेत्रों में जनजातियां मौजूद हैं जो हर तरह से पिछड़ी हुई हैं। आए दिनों उनका अनेक प्रकार से शोषण होता है। किसी समुदाय की स्थिति में शिक्षा पाना बहुत अहम है लेकिन जनजातियों की शिक्षा, स्वास्थ्य व रोजगार को प्राथमिकता नहीं मिलती है। वैसे बिहार में शिक्षा व्यवस्था की बदहाली की खबरें अक्सर एलेक्ट्रानिक व प्रिंट मीडिया में स्थान पाती हैं। ऐसे में आदिवासियों की शिक्षा व्यवस्था में बदहाली की कल्पना ही की जा सकती है जो सुदूर व दुर्गम इलाकों में अक्सर मीडिया की चकाचौंध से दूर रहते हैं। वे राज्यों में हाशिये पर हैं। चुनाव के समय ऐसी बदहाली थोड़ी बहुत उजागर होती है, लेकिन इसका समाधान चुनावी वादों की चकाचौध में डूब जाता है और जनता ठगा महसूस करती है।

- **मनकेश्वर कुमार,** मधेपुरा

कोटा में आत्महत्यायें

कोटा में इस साल रिकॉर्ड संख्या में छात्रों की मौत होना मानसिक स्वास्थ्य की एक गहरी महामारी की ओर इशारा करता है। इसकी जड़ें सामाजिक-आर्थिक कारकों में हैं जो परिवारों को युवा छात्रों को जबरदस्त तनाव में धकेलने के लिए मजबूर करती हैं। इस वर्ष आठ वर्षों में सबसे अधिक मौतें होने के कारण सरकार को कई उपाय करने के लिए मजबूर होना पड़ा है। वैसे समस्या का संपूर्ण समाधान शिक्षा प्रणाली तथा परीक्षाओं की व्यवस्था में आमूल परिवर्तन करना ही है। इन दूरगामी नीतिगत परिवर्तनों के साथ ही अधिकारियों को ऐसे समाधान तैयार करने की ज़रूरत है जो परीक्षा प्रणाली में तत्काल सुधार ला सकें। इसके साथ ही कमजोर छात्रों पर खास ध्यान देना जरूरी है ताकि वे निराश होकर आत्महत्या जैसे कदम न उठा सकें। कोटा में कोचिंग कालेजों को मुनाफे के बजाय छात्रों की अंतर्निहित प्रतिभा तथा उसे बढ़ाने की ईमानदार संभावनाओं का आंकलन करना चाहिए। सभी छात्रों की क्षमता एक समान नहीं होती है और नौकरियों व रोजगार के अनेक साधन उनके लिए उपलब्ध हैं।

-**मोहम्मद तौकीर,** पश्चिमी चंपारण

पाठक अपनी प्रतिक्रिया ई-मेल से
responsemail.hindipioneer@gmail.com
पर भी भेज सकते है।

उद्यमिता और विकास की रफ्तार तेज करने को सीडी रेशियो बढ़ाएं बैंक: सीएम

● भारतीय स्टेट बैंक गोरखपुर शाखा के शताब्दी वर्ष समारोह में बोले मुख्यमंत्री

● रोजगार को विस्तार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं बैंक

लखनऊ/गोरखपुर। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने उद्यमिता और विकास कार्यों को और अधिक तीव्र गति देने के लिए बैंकों से सीडी रेशियो बढ़ाने का आह्वान किया है। भारतीय स्टेट बैंक गोरखपुर शाखा के शताब्दी वर्ष समारोह में शासन की योजनाओं को प्रशिक्षण के साथ जोड़कर उद्यमियों, व्यवसायियों, युवाओं, महिलाओं, किसानों को लोन देने से विकास की प्रक्रिया तेजी से आगे बढ़ेगी, साथ ही बैंक की जमा पूंजी में भी निरंतर बढ़ोत्तरी होगी। बैंक रोड स्थित भारतीय स्टेट बैंक की गोरखपुर शाखा के 100 साल पूरे होने के उपलक्ष्य में आयोजित समारोह में सीएम योगी ने कहा कि 15 अक्टूबर 1923 को जब यह शाखा खुली थी तब गोरखपुर महानगर की आबादी 50 हजार से भी कम थी। आज नगर निगम क्षेत्र में ही 15 से 20 लाख की आबादी निवास करती है जबकि जिले में यह संख्या 70 लाख के करीब होगी। इस दौरान गोरखपुर में तेजी से उद्योग धंधे ब?हैं खास तौर पर बीते छह सालों में। आज गोरखपुर का इंफ्रास्ट्रक्चर विश्व स्तरीय दिखाई देता है। यहां नए नए उद्योग लग रहे हैं। सीएम योगी ने कहा कि जब बैंक सहायक की भूमिका में होते हैं तो उद्यमिता की प्रक्रिया तेजी से आगे बढ़ती है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि आज भारतीय स्टेट बैंक की गोरखपुर क्षेत्र में जमा पूंजी 11500 करोड़ से अधिक है जबकि वितरित लोन 4500 करोड़ रुपये है। यदि सीडी रेशियो 60 प्रतिशत हो जाए तो यह जमा पूंजी 25000 करोड़ होगी। इससे बैंक के सामाजिक कार्यों का दायरा भी ब?ता जाएगा। उन्होंने कहा कि बैंक शासन की योजनाओं जैसे मुद्रा योजना, ओडीओपी, स्टार्टअप, स्टैंडअप, विश्वकर्मा श्रम सम्मान व पीएम विश्वकर्मा योजना में प्रशिक्षण के साथ लोन देकर रोजगार को विस्तार देने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन कर सकते हैं। सीएम योगी ने कहा कि 2014 के बाद बैंकिंग सेक्टर में क्रांतिकारी बदलाव आए हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने जनधन खातों को खुलवाकर और फिर आधार से लिंक कर भ्रष्टाचार मुक्त डीबीटी की व्यवस्था की है। यही नहीं यूपीआई जैसा बेहतरीन पेमेंट गेटवे भी भारत की देन है। यूपी में 2.62 करोड़ किसानों के खातों में पीएम किसान सम्मान निधि, 1.91 करोड़ प्राथमिक विद्यालयों के बच्चों के कॉपी किताबए गणवेश आदि के उनके अभिभावकों के खातों में 1100 रुपये भेजनेए 1 करोड़ लोगों को प्रतिमाह 1000 रुपये पेंशन भेजने में बैंकों की महत्वपूर्ण भूमिका है। यही नहीं कोरोना संकट काल में छुट्टी के दिन भी भरण पोषण भत्ता ट्रांसफर करने में बैंकों ने राष्ट्रीय प्रतिबद्धता दर्शायी।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा भारतीय स्टेट बैंक गोरखपुर शाखा के 100 साल पूर्ण होने पर शारदीय नवरात्र की प्रतिपदा का होना सिर्फ संयोग ही नहीं बल्कि ईश्वरीय कृपा है। इस सौ साल की यात्रा में यह बैंक शाखा विकास के पायदान में सहयोगी के रूप में आगे ब?ी है। मुख्यमंत्री ने भारतीय स्टेट बैंक गोरखपुर शाखा की प्रगति यात्रा की विस्तार से चर्चा करने के साथ यहां संजोये गए सभी रिकॉर्ड के लिए बैंक की सराहना की। साथ ही समारोह में मौजूद महापौर से अपील की कि वह बैंक की इस शाखा की तरह निगम के पुराने भवन को म्यूजियम के रूप में विकसित करें। समारोह को सांसद रविकिशन शुक्ल ने भी संबोधित किया। स्वागत संबोधन भारतीय स्टेट बैंक के महाप्रबंधक आनंद विक्रम ने किया। इस अवसर पर प्रमुख रूप से महापौर डॉ मंगलेश श्रीवास्तव, विधायक महेन्द्रपाल सिंह, प्रदीप शुक्ल, एमएलसी डॉ धर्मेंद्र सिंहए भारतीय स्टेट बैंक के उप महाप्रबंधक संजीव कुमारए भाजपा के महानगर अध्यक्ष राजेश गुप्ता आदि मौजूद रहे।

हेरिटेज गैलरी का अवलोकन किया सीएम नेए वितरित किए ऋण के चेक

समारोह के दौरान मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने भारतीय स्टेट बैंक गोरखपुर शाखा की हेरिटेज गैलरी का अवलोकन किया। साथ ही परिसर में पौधरोपण कर पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया। मंच से उन्होंने उद्यमी को ऋण का चेकए बैंक के सीएसआर फंड से दो पीएचसी को 8.8 लाख तथा दो प्राथमिक विद्यालयों में स्मार्ट क्लास के लिए 5.5 लाख की सहायता राशिए महिला स्वयं सहायता समूह को ऋण, स्टैंडअप योजना के तहत ऋण का चेक वितरित किया। इस अवसर पर बैंक की दो महिला कर्मियों को भी मुख्यमंत्री के हाथों सम्मान प्राप्त हुआ।

महिलाओं-बालिकाओं की आवश्यकताओं पर वार्षिक कार्ययोजना तैयार करेगी योगी सरकार

लखनऊ। नारी सुरक्षा सम्मान व स्वावलंबन के लिए कृतसंकल्पित योगी सरकार अब महिलाओं, बालिकाओं की आवश्यकताओं पर वार्षिक कार्ययोजना तैयार करेगी। मिशन शक्ति 4.0 का सीएम योगी आदित्यनाथ द्वारा शुभारंभ करने के उपरांत पंचायती राज विभाग ने ग्रामीण महिलाओं की भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए खाका तैयार किया है। वहीं महिला जनप्रतिनिधियों को उनके अधिकारोंए नेतृत्व व संचार कौशल विकसित किए जाने का भी प्रयास निरंतर जारी है। शारदीय नवरात्रि के प्रथम दिन अंतराष्ट्रीय ग्रामीण महिला दिवस है। इसके उपरांत 16 से 18 अक्टूबर तक मॉडल ग्राम पंचायत की महिला प्रधानों को सम्मानित किया जाएगा। साथ ही अक्टूबर से जनवरी 2024 के मध्य तक स्वयंसेवी संस्था के सहयोग से लगभग 17500 महिला प्रधानों को उनके अधिकारोंए नेतृत्व व संचार कौशल विकास के लिए प्रशिक्षित किया जाएगा। इस अवधि में ही राष्ट्रीय ग्राम स्वराज अभियान के अंतर्गत पंचायती राज प्रशिक्षण संस्थान ;प्रिटद्ध व जिला पंचायत रिसोर्स सेंटर के माध्यम से 115404 प्रतिभागियों को प्रशिक्षित कर महिला स्वयं सहायता समूह द्वारा तैयार गरीबी उन्मूलन कार्ययोजना को ग्राम पंचायतों की वार्षिक कार्ययोजना का भाग बनाया जाएगा। योगी सरकार की मंशानुरूप पंचायती राज विभाग भी महिलाओं के उत्थान पर विशेष कार्य कर रही है। अक्टूबर से दिसंबर के मध्य तक क्षेत्र व जिला पंचायतों द्वारा महिला सदस्यों के साथ बैठक कर उनके संबंधित विषयों का वार्षिक कार्ययोजना का भाग बनाया जाएगा। वहीं महिला सभाओं का भी आयोजन कर महिलाओं व बालिकाओं की आवश्यकताओं जीपीडीपी का भाग बनाने का निर्देश है। पंचायतों में स्थापित शासकीय प्राथमिक, अपर माध्यमिक व माध्यमिक विद्यालयों में बालिका शौचालयों की मरम्मत.जीर्णोद्धार कराया जाएगा।

गोरखनाथ मंदिर के शक्तिपीठ में सीएम योगी ने की कलश स्थापना

● मंदिर से निकाली परंपरागत भव्य कलश शोभायात्रा, पहले दिन मां शैलपुत्री की आराधना'

लखनऊ/गोरखपुर। शारदीय नवरात्र की प्रतिपदा, रविवार को शिवावतार एवं नाथपंथ के प्रणेता गुरु गोरक्षनाथ की साधनास्थली गोरक्षपीठ में लोक कल्याण की मंगलकामना के साथ आदिशक्ति की विशेष उपासना पीठ की परंपरा के अनुसार वैदिक विधि विधान से प्रारंभ हो गई। गोरक्षपीठाधीश्वर एवं मुख्यमंत्री योगी ने मठ के पहले तल पर स्थित शक्तिपीठ में वैदिक मंत्रोच्चार के बीच कलश स्थापना कर प्रथम दिन मां शैलपुत्री की विधि विधान से पूजा अर्चना की। दो घंटे तक चला पहले दिन का अनुष्ठान जगतजननी की आराधनाए देवी पाठए आरती और क्षमा प्रार्थना के साथ पूर्ण हुआ।

कलश स्थापना के पूर्व गोरखनाथ मंदिर परिसर में परंपरागत भव्य कलश शोभायात्रा श्रद्धाभाव से निकाली गई। शाम पांच बजे मंदिर के प्रधान पुजारी योगी कमलनाथ के नेतृत्व में साधु.संतों की शोभायात्रा मां दुर्गा के जयघोष के बीच पौराणिक मान्यता वाले भीम सरोवर पर पहुंची। कलश भरने और सरोवर की परिक्रमा के बाद शोभायात्रा वापस शक्तिपीठ पहुंची। मठ के भूतल पर जल भरा कलश मुख्यमंत्री ने स्वयं उठाया और शक्तिपीठ के गर्भगृह में वैदिक मंत्रोच्चार के बीच वरुण देवता का आवाहन कर कलश स्थापित किया। गोरक्षपीठाधीश्वर ने सबसे पहले मां दुर्गा, भगवान शिव और गुरु गोरखनाथ के शस्त्र त्रिशूल को प्रतिष्ठित करके गौरी.गणेश की आराधना की।

पैनिक बटन से सुरक्षित होगा बेटियों का सफर

● सेफसिटी परियोजना के तहत सिटी बसों, ओला, ऊबर में लगाए जा रहे सीसीटीवी और पैनिक बटन

लखनऊ। सेफसिटी परियोजना के तहत प्रदेश के 17 नगर निगम और गौतमबुद्धनगर में योगी सरकार की ओर से महिलाओं, बेटियों और बुजुर्गों को सुरक्षित यात्रा कराने के लिए परिवहन विभाग की सिटी बसोंए ओला.ऊबर में सीसीटीवी कैमरे संग पैनिक बटन लगाए जा रहे हैं। वहीं परिवहन विभाग की ओर से सीसीटीवी कैमरों और पैनिक बटन को यूपी 112 से इंटीग्रेट किया जा रहा है। इससे यात्रा के दौरान कोई अनहोनी होने पर यात्री पैनिक बटन दबाकर यूपी 112 से मदद मांग सकता है। वहीं सिगनल मिलने पर यूपी 112 की टीम एक्टिव हो जाएगी और तत्काल मदद पहुंचाएगी। इतना ही नहीं सीसीटीवी के जरिये यात्रियों को सुरक्षित यात्रा का सुखद अहसास होगा।

परिवहन विभाग की ओर से सिटी बसों के सीसीटीवी कैमरे और पैनिक बटन को लगाने के साथ यूपी 112 से इंटीग्रेट करने के लिए क्रिसिल कंपनी द्वारा टेस्टिंग का काम किया जा रहा है। जल्द ही सीसीटीवी कैमरों और पैनिक बटन को यूपी 112 से इंटीग्रेट कर दिया जाएगा। वहीं परिवहन विभाग की ओर से ऊबर के साथ इंटीग्रेशन के टेस्टिंग का काम पूरा कर लिया गया है। परिवहन विभाग और ऊबर की ओर से सीसीटीवी कैमरे और पैनिक बटन लगाने को लेकर एक एमओयू तैयार किया जा रहा है। इसके साथ ही सीसीटीवी और पैनिक बटन के लिए 9.912 लाख की धनराशि का प्रस्ताव बनाकर शासन को भेज दिया गया है। शासन से हरी झंडी मिलते ही ऊबर में सीसीटीवी और पैनिक बटन लगाने के साथ इंटीग्रेशन की कार्रवाई शुरू कर दी जाएगी। उधर, ओला के साथ इंटीग्रेशन को लेकर एक कंपनी से दोबारा संशोधित फेसियल रिकॉग्नाइजेशन साफ्टवेयर ;एफ्आरएसद्ध एवं टेक्नो कामर्शियल उपलब्ध कराने के निर्देश दिये गये हैं। इतना ही नहीं सेफ सिटी परियोजना के तहत यूपी.112 की ओर से प्रदेश में बेटियों से छेड़छाड़ एवं संवेदनशील 1861 हॉट स्पॉट को चिन्हित किया गया है। इनमें से 656 अति संवेदनशील स्थानों की पीआरवी द्वारा लगातार पेट्रोलिंग की जा रही है।

डेढ़ लाख से अधिक बुजुर्गों को किया गया चिन्हित

सेफसिटी परियोजना के तहत बुजुर्गों की मदद के लिए यूपी.112 की ओर से 17 नगर निगम और गौतमबुद्धनगर में विशेष अभियान ;सवेरा स्कीमद्ध चलाया गया। अभियान के माध्यम से 1ए52ए139 अकेले रह रहे बुजुर्गों और बुजुर्ग दंपत्ति को चिन्हित करते हुए सत्यापन किया गया। इनमें सबसे अधिक गाजियाबाद में 1,24,972 बुजुर्गों को चिन्हित करते हुए सत्यापित किया गया। वहीं दूसरे नंबर पर 5245 बुजुर्ग कानुपरए तीसरे नंबर पर 3864 बुजुर्ग आगरा के चिन्हित किये गये। अभियान के दौरान बीट आरक्षियों ने करीब 1,48,933 बुजुर्गों से मुलाकात की और उनकी समस्या का समाधान भी किया।

भाजपा सरकार संविधान समाप्त करने जा रही है: प्रो. बी. पांडे

लखनऊ। समाजवादी शिक्षक सभा की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक रविवार को बीकेडी उच्चतर माध्यमिक विद्यालय परिसर में राष्ट्रीय अध्यक्ष प्रो. बी. पांडे की अध्यक्षता में संपन्न हुई। बैठक को संबोधित करते हुए समाजवादी शिक्षक सभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष प्रो. बी. पांडे ने कहा कि उत्तर प्रदेश में 2024 में होने वाले लोकसभा चुनाव में हम सभी शिक्षकों का नैतिक दायित्व है कि हम शिक्षक सभा के सभी पदाधिकारी आगामी लोकसभा चुनाव में शिक्षक मित्रों के साथ जो उनका अहित किया गया है, उसका विरोध करे। स्कूल कॉलेज में जो छात्र-छात्रा 18 वर्ष के हो गए हों, उनका वोट बढवाएं। प्रो. बी. पाण्डेय ने कहा कि अखिलेश यादव की सरकार और मुलायम सिंह यादव के मुख्यमंत्रित्व काल में जो शिक्षक हित और छात्र हित में कदम उठाए गए हैं, उनके बारे में बताए। यह भी बताएं कि भाजपा सरकार भारतीय संविधान समाप्त करने जा रही है। अगर भाजपा फिर से केन्द्र पर काबिज हो जाएगी तो चुनाव ही नहीं होंगे। उन्होंने कहा कि सभी राष्ट्रीय पदाधिकारी को लोकसभावार जिम्मेदारी दी गई। प्रत्येक बूथ पर एक 'यूथ शिक्षक' तैनात होगा और प्रत्येक विधानसभा में 10 वॉलिंटियर तैनात होंगे। बैठक का संचालन समाजवादी शिक्षक सभा के राष्ट्रीय महासचिव कुलदीप यादव ने किया। बैठक में प्रमुख रूप से प्रोफेसर योगेंद्र यादव उपाध्यक्षगण फरीदुर रहमान, जनार्दन यादव समदर्शी, डॉ. सुरेश कुमार यादव, चंद्रशेखर सिंह, अभय राज यादव, डॉ. आर. के. पाठक, अंशुमान सिंह, विजय प्रताप सिंह, संतोष यादव, संगीता कुमार, अजय यादव, डॉ. अजय वीर, प्रोफेसर रुदल यादव, डा. सुरेश कुमार यादव, समेत कार्यकारिणी के सदस्य मौजूद रहे।

राज्यपाल आनंदीबेन पटेल से कृषि मंत्री सूर्य प्रताप शाही ने राजभवन में की भेंट

प्रदेश की कानून व्यवस्था ध्वस्त है: अखिलेश यादव

लखनऊ। समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव ने कहा है कि भाजपा सरकार में प्रदेश की कानून व्यवस्था ध्वस्त है। महिलाओं और बच्चियों के साथ अपराधिक घटनाएं रूकनें का नाम नहीं ले रही है। तमाम आंकड़ों में उत्तर प्रदेश महिला अपराधों के मामले में सबसे ऊपर है। लेकिन सरकार जमींनी सच्चाई न जानने और न मानने को तैयार है। अखिलेश ने कहा कि मुख्यमंत्री झूठे आंकड़ों में अपनी पीठ थपथपा रहे हैं। हर दिन प्रदेश में महिलाओं और बच्चियों के साथ दुराचारए हत्या और छे पिछले दिनों अमरोहा इलाज कराने गयी महिला के साथ सामूहिक दुष्कर्म की घटना हुई। मैनपुरी में स्कूटी से जा रही महिला पर चाकू से हमला हुआ। भाजपा सरकार प्रदेश में अपराधों को रोक पाने में विफल है। भाजपा का कानून व्यवस्था पर जीरो टॉलरेंस का दावा झूठ और कोरी लफ्फाजी है।

अखिलेश ने कहा कि भाजपा सरकार में पुलिस.प्रशासन कानून व्यवस्था ठीक करने के बजाय विरोधियों को झूठे मामलों में फंसाने और भ्रष्टाचार में संलिप्त है। पुलिस भाजपा नेताओं के इशारे पर कार्य कर रही है। आम जनता और गरीबों को न्याय नहीं मिल रहा है। जनता भाजपा के कुशासन से कराह रही है। राज्य की जनता भाजपा सरकार से बुरी तरह उकता गयी है।

सपा मुख्यालय में मनाई गई महाराजा अग्रसेन की जयंती

लखनऊ। समाजवादी पार्टी के प्रदेश मुख्यालय में रविवार को महाराजा अग्रसेन की जयंती सादगी से मनाई गई। समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने महाराजा अग्रसेन की चित्र पर माल्यार्पण कर सभी को बधाई दी है। इस मौके पर अखिलेश यादव ने कहा कि महाराजा अग्रसेन अग्रोहा राज्य के राजा थे। वे महादानी तथा समाजवाद के प्रथम प्रणेता थे। उन्होंने जिन जीवनमूल्यों को ग्रहण किया उनमें परम्परा एवं प्रयोग का संतुलित सामंजस्य अपने शासन काल में स्थापित किया और समाज के सभी वर्गों के कल्याण के लिए कार्य किया। अखिलेश यादव ने कहा कि अग्रसेन जी ने यज्ञों में पशुबलि बंद कराई थी और आर्थिक समानता पर बल दिया था। महाराजा अग्रसेन का बन्धुत्व तथा सद्भाव का संदेश आज भी प्रासंगिक है। इस अवसर पर पूर्व मंत्री राजेन्द्र चौधरी सहित महाराजा अग्रसेन जयंती कार्यक्रम की संयोजिका अपर्णा बंसल जैन और सुनील जैन, रिन्कू गुप्ता, घनश्याम अग्रवाल, आलोक अग्रवाल, विनय अग्रवाल, आकाश गोयल तथा डॉ. नीतेन्द्र भाईजी आदि ने भी महाराजा अग्रसेन को पुष्पाजंलि अर्पित कर नमन किया।

राष्ट्रीय सचिव नामित

लखनऊ। समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री श्री अखिलेश यादव के निर्देश पर समाजवादी अल्पसंख्यक सभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष मौलाना मो. इकबाल खाँ द्वारा मो. साजिद कुरैशी मुहल्ला कुरैशियान चन्दौसी जनपद सम्भल को समाजवादी अल्पसंख्यक सभा की राष्ट्रीय कार्यकारिणी में राष्ट्रीय सचिव नामित किया गया है। समाजवादी पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष नरेश उत्तम पटेल के निर्देश पर समाजवादी महिला सभा की प्रदेश अध्यक्ष रीबू श्रीवास्तव द्वारा अंजली सिंह पूर्व प्रधान निवासी शिव कालोनी जनपद लखीमपुर खीरी को समाजवादी महिला सभा की प्रदेश कार्यकारिणी में प्रदेश सचिव नामित किया गया है।

योगी सरकार चलाएगी 'स्वच्छ त्योहार, स्वस्थ त्योहार' अभियान

● मूर्तियों के विसर्जन के लिए अभी से प्रबंध करने के निर्देश

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

प्रदेश की योगी सरकार ने त्योहारों के मद्देनजर मंदिरों और आसपास के क्षेत्रों में विशेष तौर पर स्वच्छता अभियान शुरू कर दिया है। इसके लिए योगी सरकार स्वच्छ त्योहार, स्वस्थ त्योहार अभियान चला रही है। नगर विकास एवं ऊर्जा विभाग ने प्रदेश के सभी नगर निकायों में साफ सफाई के लिए 'क्लीनलीनेस इस नेक्स्ट टू गॉडलीनेस' का मूल मंत्र देते हुए नवरात्रए दशहरा व दीपावली त्योहारों को 'स्वच्छ त्यौहार, स्वस्थ्य त्यौहार' के रूप में मनाने का संदेश जारी किया है। विभाग की ओर से इसके लिए सभी निकाय अधिकारियों व कर्मचारियों को धार्मिक स्थलोंए मठ.मंदिरों और दुर्गा पूजा पांडालों के आसपास के क्षेत्रए वहां की सड़कों.गलियों की बेहतर साफसफाई की व्यवस्था सुनिश्चित करने के निर्देश दिए गये हैं।

प्रदेश सरकार में नगर विकास मंत्री एके शर्मा ने मुख्यमंत्री की मंशा के अनुरूप सभी नगरीय अधिकारियों एवं कर्मचारियों को रविवार को वर्चुअल बैठक के जरिये अवगत करा दिया है। सभी नगर निकायों को नगर विकास विभाग की ओर से निर्देशित किया गया है कि त्योहारों में श्रद्धालुओं को आने.जाने में परेशानी न होए इसके लिए स्ट्रीट लाइटें सही कराई जाएं। स्वच्छ पेयजल की आपूर्ति में भी कहीं पर भी कोई बाधा न आए। श्रद्धालुओं द्वारा अर्पित की गई पूजा सामग्री और कूड़ा.कचरा का सही से निस्तारण भी कराया जाए। लोग पूजा सामग्री और कूड़ा.कचरा इधर उधर न फेंकेए पूजा स्थलों के आसपास डस्टबिन रखवाया जाय। इसमें जनप्रतिनिधियों का भी सहयोग लिया जाए। लोगों को भी स्वच्छ और स्वस्थ्य त्यौहार मनाने के लिए जागरूक किया जाए। प्लास्टिक का प्रयोग न करने के लिए भी लोगों से कहें तथा इसके प्रयोग पर पूर्ण प्रतिबंध लगाने का भी प्रयास किया जाए।

उन्होंने त्योहारों को ध्यान में रखते हुए निकायों में साफ सफाई, स्ट्रीट लाइट, जलापूर्ति, कूड़े के निस्तारण आदि कार्यों को संपन्न कराने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा की नगरीय क्षेत्रों में स्वच्छ वातावरण मिलेए कहीं पर भी गंदगी के कारण पूजा के लिए जाने वाले श्रद्धालुओं का मन मैला न हो। साफ सफाई के पूर्ण प्रयास किए जाएं, सड़के गलियां साफ सुथरी तथा गंदगी से मुक्त हो, नाले नालियों की भी सफाई के प्रबंध किए जाएं। कहीं पर भी स्ट्रीट लाइट खराब न होए लोगों को अंधेरे रास्तों से होकर न जाना पड़े। उन्होंने जीएम जलकल को निर्देश दिया कि त्योहारों में स्वच्छ पेयजल की पर्याप्त मात्रा में आपूर्ति होए कहीं पर भी पेयजल आपूर्ति बाधित न हो।

उन्होंने अधिकारियों को निर्देशित करते हुए कहा कि स्वच्छ जनादेश सर्वेक्षण चल रहा है। ऐसे में साफसफाई में निकायों के सभी वार्डों के पार्षदों का सहयोग लिया जाए। प्रत्येक वार्ड की साफसफाई के साथ कमियों को भी दूर किया जाना चहिए। साथ ही नगरीय क्षेत्रों में स्थापित दुर्गा पूजा पंडालों के आसपास भी सफाई कराई जाए। त्योहारों में पूजा स्थलों पर श्रद्धालुओं का सुबह से देर रात तक आना.जाना होता हैए इसके लिए सुबह की नियमित साफसफाई पर विशेष ध्यान देना होगा। कूड़ा इधर.उधर न फैलेए प्रयोग के लिए डस्टबिन रखवाये। लोगों को संचारी रोगों और मच्छर जनित बीमारियों से बचाने के लिए दवाओं का छिड़कावए फॉगिंग कराते रहें। जहां कहीं पर भी इसके केस आएंए वहां पर विशेष ध्यान दें। जल जमाव कहीं पर हो रहा होए तो इसके निकास का भी प्रबंध करें। सभी निकायों में मूर्तियों के पर्यावरण अनुकूल विसर्जन के लिए अभी से प्रबंध किये जाएंए जिससे कि हमारी वाटर बॉडीज का पानी प्रदूषित न होने पाए। शिकायतों के तुरंत समाधान के लिए टोल फ्री नंबर 1533 को भी व्यापक रूप से संचालित करने के निर्देश दिए गये हैं।

इंडो नेपाल बॉर्डर पर विद्यालयों को अपग्रेड करेगी योगी सरकार

● प्रस्ताव को अमलीजामा पहनाने के लिए करीब 8.5 करोड़ रुपए खर्च करेगी सरकार

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

उत्तर प्रदेश की योगी सरकार अंतर्राज्यीय और अंतर्राष्ट्रीय मार्गों एवं बहुउद्देशीय हब के करीब अवस्थित विद्यालयों को अपग्रेड करने की योजना पर कार्य कर रही है। इसके अंतर्गत बहुउद्देशीय हब के करीब स्थित विद्यालयों के साथ ही इंडो.नेपाल बॉर्डर के मुख्य मार्गों पर स्थित विद्यालयों को भी अपग्रेड किया जाएगा। इस तरह के कुल 16 विद्यालयों को अपग्रेड किए जाने का प्रस्ताव हैए जिसे सीएम योगी की मंजूरी मिल गई है। उल्लेखनीय है कि सीएम योगी ने बेसिक शिक्षा विभाग की समीक्षा बैठक में विभाग के कई प्रस्तावों के लिए तैयार की गई कार्ययोजना को देखने के बाद अपनी सहमति दी है। इस प्रस्ताव को अमलीजामा पहनाने के लिए बेसिक शिक्षा विभाग की ओर से करीब 8ण्5 करोड़ रुपए के बजट का प्रस्ताव है। इसी बैठक में सीएम योगी ने 57 जनपदों में अत्याधुनिक सुविधायुक्त मुख्यमंत्री मॉडल कंपोजिट विद्यालय की शुरुआत करने के निर्देश दिए थे।

छात्रों को मिलेंगी स्मार्ट फैसिलिटीज

बेसिक शिक्षा विभाग द्वारा मुख्यमंत्री के समक्ष रखे गए इस प्रस्ताव के तहत अंतर्राज्यीय मार्ग पर कुल 9 विद्यालयों को अपग्रेड किए जाने की योजना है। इस पर 3ण्71 करोड़ रुपए के खर्च की संभावना जताई गई है। इसी तरह अंतर्राष्ट्रीय मार्ग (इंडो.नेपाल बॉर्डर) पर स्थित 7 विद्यालयों को भी अपग्रेड किए जाने का प्रस्ताव है। इस पर सरकार 4.73 करोड़ रुपए खर्च करेगी। इन विद्यालयों को इस तरह अपग्रेड किया जाएगा, जिसमें छात्रों को स्मार्ट तरीके से शैक्षिक सामग्री प्राप्त हो सके। इन विद्यालयों में लैंग्वेज लैब के साथ कंप्यूटर लैब, स्मार्ट क्लास, मॉड्यूलर साइंस लैब, रोबोटिक्स एवं मशीन लर्निंग लैब्स, वाई फाई इनेबल्ड कैंपस जैसी सुविधाओं का लाभ मिल सकेगा। इसके अलावा 24 घंटे सुरक्षा व्यवस्था के लिए सुरक्षा कर्मी एवं सफाई कर्मी तैनात किया जाएगा। इसके लिए बेसिक शिक्षा विभाग के आवर्तक बजट से इसकी व्यवस्था की जाएगी।

जिलाधिकारी की देखरेख में होगा निर्माण कार्य

मुख्यमंत्री के समक्ष प्रस्तुत प्रस्तावों में कार्ययोजना का भी ब्यौरा है जिसमे क्रियान्वयन प्रक्रिया का जिक्र करते हुए बताया गया है की इस पूरे प्रोजेक्ट में डीएम की प्रमुख भूमिका होगी। प्रस्ताव के अनुसारए जिन जनपदों में ऐसे विद्यालयों को अपग्रेड किया जाएगा, वहां डीएम की अध्यक्षता में इस योजना का क्रियान्वयन संपन्न होगा एवं डीएम इसकी निगरानी भी करेंगे। निर्माण कार्यों के लिए जिलाधिकारी द्वारा शासकीय संस्थाओं का चयन और निगरानी की जाएगी। डीएम की अध्यक्षता की कमेटी द्वारा जेम पोर्टल से कंप्यूटर, फर्नीचर आदि उपकरणों की खरीद की जाएगी।

घर की चौखट पर लटकता मिला छात्रा का शव

संवाददाता। बरेली

नवाबगंज तहसील के हाफिज़गंज थाना क्षेत्र के गांव गोटिया लाडपुर गौटिया में 11 साल की कक्षा 5 की छात्रा का शव घर में चौखट से फांसी के फंदे पर लटका मिलने से हड़कंप मच गया । बताया गया कि घटना के वक्त घर में कोई परिजन नहीं था। जब परिजन घर पर वापस आये तो घटना का पता चला। इसी दौरान चीख पुकार सुनकर पड़ोसी भी घटना स्थल पर पहुंच गए । घटना की पुलिस को सूचना दी गई। मामले की जानकारी होते ही आलाधिकारी भी मौके पर पहुंच गए।लड़की की मां कमलेश ने पुलिस अधिकारियों को बताया कि मेरा बेटा बेटा पवन पंतनगर में नौकरी करता है। छोटी बेटी थी। पवन ने अपने ही गांव की लड़की प्रियंका से कुछ समय पहले लव मैरिज की थी। लड़की के भाई पवन और पत्नी प्रियंका की एक ही बिरादरी है। दोनों के घर में करीब 300 मीटर का फासला है। जिसके बाद पवन अपनी पत्नी के साथ पंतनगर में किराए पर रहने लगा। बेटी रिद्धिमा अपनी मां पिता के साथ रह रही थी। मृतका के पिता धर्मेन्द्र कुमार का कहना है कि रिद्धिमा की परीक्षा चल रही थी परीक्षा देकर घर वापस आई मैं और मेरी पत्नी कमलेश आशा कार्यकत्री है। में कमलेश के साथ गांव लावाखेड़ा गया हुआ था घर मे कोई नही था रिद्धिमा घर मे अकेली थी बहु के पिता गंगादेव भाई विकास ने अपने अन्य साथियों के साथ मिलकर रिद्धिमा की हत्या करके चौखट से फांसी के फंदे पर लटका दिया रिद्धिमा के हाथ पर पीठ पर और पैरों में चोट के निशान है ।एसपी देहात मुकेश चंद्र मिश्रा ने बताया कि शव का पोस्टमार्टम कराया जा रहा है। लड़की की मां कमलेश की तरफसे गंगादेव और उसके परिवार पर हत्या का आरोप लगाया है। तहरीर के आधार पर केस दर्ज कर कार्रवाई की जा रही है।

बाइक सवार बदमाशों ने टीचर से की लूटपाट: बरेली । कॉलेज से लौट रही एक शिक्षिका से बाइक सवार बदमाशों ने मोबाइल फोन और सोने की चेन लूट ली और फरार हो गए पुलिस ने रिपोर्ट दर्ज कर बदमाशों को तलाशने की कोशिश शुरू कर दी ।नवाबगंज थाना क्षेत्र के गांव ज्योरा मकदरपुर निवासी सुनैना सक्सेना ने बताया कि वह बच्चों को पढानेके साथ ही प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी भी कर रही है वह बुधवार को दिन में 2रू35 बजे महाराजा अग्रसेन कॉलेज से इंवर्टिज यूनिवर्सिटी की ओर पैदल जा रही थी इसी दौरान पीछे से एक तेज रफ्तार काले रंग की बाइक पर सवार दो बदमाशों ने झपट्टा मारकर उससे सोने की चेन लूट ली बचाव के लिए जब उसने अपने हाथ आगे किए तो बदमाशों ने मोबाइल हाथ से लूट लिया और धक्का देकर फरार हो गए ।लूट की घटना के बाद मौके पर भीड़ लग गई सूचना मिलने पर पहुंची पुलिस ने जांच-पड़ताल की शिक्षिका ने आशंका जताई कि बदमाश उसका मोबाइल फोन किसी अपराध के लिए प्रयोग कर सकते है उन्होंने तहरीर देकर रिपोर्ट दर्ज कराने की मांग की पुलिस ने बदमाशों के विरुद्ध रिपोर्ट दर्ज कर बदमाशों की तलाश शुरू कर दी।

सड़क दुर्घटना में होमगार्ड जवान की मौत: बरेली । शाम को ड्यूटी पूरी होने के बाद घर वापस लौट रहे होमगार्ड के जवान कि रास्ते में हुई सड़क दुर्घटना में मौत हो गई लाश को पुलिस ने पोस्टमार्टम के लिए भेजा। फतेहगंज पश्चिमी थाना क्षेत्र के गांव धनेटा निवासी 50 वर्षीय किशन पाल पुत्र नत्थू लाल की कल शाम मीरगंज थाना क्षेत्र में नल नगरिया गांव के पास हुई सड़क दुर्घटना में मौत हो गई मृतक के घर वालों ने बताया किशन पाल मीरगंज थाने में होमगार्ड के पद पर तैनात थे और कल शाम लगभग 6बजे ड्यूटी समाप्त होने के बाद मोटरसाइकिल से अपने घर वापस लौट रहे थे लेकिन नल नगरिया गांव के पास तेजी से आ रही ट्रैक्टर ट्राली में उनकी बाइक को टक्कर मार दी इससे वह गंभीर रूप से घायल हो गया स्थानीय लोगों ने ट्रैक्टर ट्राली को रोकने की कोशिश की लेकिन उसका चालक वाहन छोड़कर फरार हो गया सूचना मिलने पर पहुंची पुलिस में घायल को इलाज के लिए जिला अस्पताल भेजा लेकिन उसकी रास्ते में ही मौत हो चुकी थी और अस्पताल पूछते ही डॉक्टर ने उसे मृत्यु घोषित कर दिया पुलिस ने लाश को पोस्टमार्टम के लिए भेज।

गर्लफ्रेंड के पिता ने धमकाया तो युवक ने कर ली आत्महत्या

बरेली । रुद्रपुर में प्रेम प्रसंग का पता चलने पर लड़की के पिता ने जान से मारने की धमकी दी डरे सहमे प्रेमी ने अपने घर आकर फंदा लगाकर आत्महत्या कर ली पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजा और मामले की जांच शुरू कर दी ।भोजीपुरा थाना क्षेत्र के मल्लपुर निवासी छेदालाल अपनी पत्नी मुन्नी देवी और बेटे अजय समेत पूरे परिवार के साथ रुद्रपुर की एक फैक्ट्री में काम करते है इस दौरान अजय का प्रेम प्रसंग एक एक व्यक्ति से हो गया पोस्टमार्टम हाउस पर मौजूद अजय के चाचा भगवानदास ने बताया कि जब यह बात लड़की के पिता को पता चली तो उसने अजय को जान से मारने की धमकी दी डर के कारण अजय अपने भाई राजीव के साथ अपने गांव आ गया ।यहां उसने कोटे की दुकान से राशन लिया और फिर अपने कमरे में छत से लेकर पंखे से रस्सी बांधकर फांसी लगा ली छोटे भाई राजीव की सूचना पर चाचा भगवानदास और पुलिस मौके पर पहुंची परिजनों के रुद्रपुर से आने के बाद शव को पुलिस ने पोस्टमार्टम के लिए भेजा ।

विवाहिता ने फांसी लगाकर दी जान

बरेली । पति से हुए विवाद के बाद के बाद विवाहिता ने फांसी लगाकर आत्महत्या कर दी पुलिस ने लाश को पोस्टमार्टम के लिए भेजकर जांच शुरू कर दी ।शीशगढ़ थाना क्षेत्र के गांव बंजरिया निवासी रामकिशोर की पत्नी शीतल ने बीती रात घर में ही छत से लगे कुंड से साड़ी बांधकर फांसी लगा ली पोस्टमार्टम हाउस पर मौजूद मृतका के घर वालों ने बताया कि शीतल का कल दिन में अपने पति से किसी बात को लेकर विवाद हो गया जिससे नाराज शीतल में देर रात घर में ही एक कमरे में फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली सुबह होने पर घर वालों ने उसकी लाश को फांसी पर लटके देखा।

मिशन शक्ति अभियान के तहत छात्राओं को किया जागरूक

नगर पंचायत चेयरमैन नें हरी झण्डी दिखाकर रैली को रवाना किया

गुरसहायगंज (कन्नौज)। उत्तर प्रदेश सरकार के मिशन शक्ति अभियान को सफल बनाने के उद्देश्य से महिलाओं एवं बालिकाओं की सुरक्षा, सम्मान एवं स्वावलम्बन के लिए मिशन शक्ति अभियान के अन्तर्गत शनिवार को कन्या उच्च प्राथमिक विद्यालय समधन में जागरूकता रैली का आयोजन किया गया। मिशन शक्ति जागरूकता रैली को चैयरमेन आसमां बेगम ने हरी झंड़ी दिखाकर रवाना किया।आयोजित मिशन शक्ति जागरूकता रैली में मुख्यमंत्री सक्षम सुपोषण योजना, महिला हेल्प डेस्क, मुख्यमंत्री कन्या सुमन्गला योजना, उत्तर प्रदेश रानी लक्ष्मी बाई महिला एवं बाल सम्मान कोष, निराश्रित महिला पेंशन योजना आदि के बारे में विस्तार पूर्ण चर्चा की गई। नारी सुरक्षा, सम्मान एवं स्वावलम्बन महिलाओं के जीवन के तीन मूल मंत्र हैं। साथ ही हमें बेटे-बेटी में एक समान व्यवहार करना चाहिये। नोडल शिक्षक संकुल संजीव राजपूत ने बालिकाओं व ग्रामीण महिलाओं व बच्चियों को मिशन शक्ति अभियान के बारे में जानकारी देते हुए सुरक्षा एवं आत्मनिर्भरता के लिए बनाए गए कानून एवं नियमों के संबंध में जागरूक किया। मंजुलता ने मौजूद महिलाओं को हेल्पलाइन नंबरों के बारे में जानकारी दी बताया कि यदि किसी प्रकार की समस्या होती है या कहीं आने-जाने पर कोई परेशान करता है तो हेल्पलाइन नंबर पर फोन कर सहायता प्राप्त की जा सकती है। इस दौरान स्कूल की लड़कियां अपने हाथो में स्लोगन शिक्षा को बना हथियार, नारी करेगी अब शोषण पर वार, प्रथम शिक्षक माँ को मान, बच्चे बने तभी महान की तख्ती लेकर नगर में घूमी। इस दौरान मो जमाल, अभिषेक कुमार, असीस कुमार, अर्शी, शाहीन बेगम, जावेद अख्तर, सत्यवती सहित कई अभिभावक मौजूद रहे।

पूर्व प्रधानमंत्री की मूर्ति का किया गया अनावरण

सिंगाही . खीरी। रविवार को कस्बे अटल में लगी भारत रत्न स्वण् अटल बिहारी बाजपेयी की मूर्ति का अनावरण केंद्रीय गृह राज्य मंत्री अजय मिश्र ष् टेनी ष् के द्वारा फीता काटकर किया।जिसका आयोजन नगर पंचायत की ओर से भव्य तौर किया गया। इस दौरान नगर चेयरमैन मोण् कय्यूम व सभी सभासदों द्वारा बस स्टैंड पर केंद्रीय मंत्री का स्वागत किया गया। जहां से गाजे बाजे के साथ मंत्री को काफिले के साथ अटल पार्क ले जाया गया जहां पर सर्व प्रथम पूजन के बाद मूर्ति का अनावरण हुआ। तत्पश्चात नगर में बने प्रधानमंत्री आवास के लाभार्थियों को केंद्रीय मंत्री द्वारा चाबियां वितरित की गईं इसके बाद उनके द्वारा नगर की एक कूड़ा गाड़ी को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया या। इस मौके पर संबोधन में केंद्रीय मंत्री अजय मिश्र ष् टेनी ष् ने अटल बिहारी बाजपेयी की जीवन पर विस्तार से चर्चा की।

फर्जी रजिस्ट्री कराने के आरोप में सब रजिस्ट्रार और लेखपाल समेत 14 पर मुकदमा दर्ज

बरेली । फर्जी बैनामा कराने के मामले में एक महिला ने सब रजिस्ट्रार प्रभारी, लेखपाल और कातिब समेत 14 लोगो पर एसएसपी के निर्देश पर रिपोर्ट दर्ज कर ली ।बारादरी थाना क्षेत्र के मॉडल टाउन निवासी विम्मी मदान ने बताया कि ग्राम मोहनपुर में उनकी जमीन है जमीन के फर्जी दस्तावजे बनाकर बैनामा कराने के मामले में उन्होंने कैंट थाने में रिपोर्ट दर्ज कराई थी पुलिस ने आरोपी हरिओम को गिरफ्तार कर जेल भेजा था प्रदीप कुमार व पल्लव की तलाश की जा रही है कुछ दिन पहले उन्हें जानकारी हुई कि शाहजहांपुर के पल्लव ने फर्जी दस्तावेजों के आधार पर अपने और प्रदीप कुमार के नाम से 17 मार्च 2023 को कराए गए फर्जी बैनामे के आधार पर जमीन अलग-अलग लोगों को बेच दी ।विम्मी ने पल्लव, अजय प्रताप सिंह के खिलाफरिपोर्ट दर्ज कराई इसकी जांच चल रही है विम्मी ने आरोप लगाया कि यह फर्जी बैनामे रजिस्ट्री ऑफिस के उप निबन्धक रवि प्रकाश वर्मा, प्रभारी सब रजिस्ट्रार तोषक राजन राजपूत, कातिब प्रदीप सक्सेना, बैनामा लिपिक शिवम मिश्रा, रचित व चकबन्दी ऑफिस के क्षेत्रीय लेखपाल सावन कुमार व अन्य के सहयोग से षडयंत्र के तहत किए जा रहे है 28 अगस्त को एक और फर्जी रजिस्ट्री व एक इकरार नामा आवासीय प्लाट दिखाकर रजिस्ट्रीकृत किया गया।

आतंकी संगठन के लिए चंदा मांग रहे सिपाही की शिकायत डीजीपी से

बरेली। हमास-इस्राइल के बीच चल रहे युद्ध को लेकर फलस्तीनी आतंकी संगठन के लिए बरेली का एक कांस्टेबल चंदा मांग रहा है जिसकी शिकायत एक्स (ट्वीटर) पर की गई तब बरेली साइबर सेल को मामले की जांचकर कार्रवाई करने के निर्देश दिए गए ।एक युवक ने उत्तर प्रदेश सरकार, यूपी पुलिस और डीजीपी को एक्स पर (ट्वीट) कर दो फोटो टैग किए गए जिसमें एक फोटो में बरेली के एक सिपाही सुहेल अंसारी की फेसबुक प्रोफाइल का स्क्रीनशाट है इसके अलावा फेसबुक की स्टोरी पर लगाया गया दूसरा स्क्रीनशाट है जिसमें फिलिस्तीनी को सुरक्षित करने की बात कही जा रही है रुपये सीधे आतंकी संगठन को भेजने की बात लिखी गई ।ट्वीट करने वाले युवक ने लिखा कि भारत आज इस्राइल के साथ खड़ा है वहीं उत्तर प्रदेश के बरेली जिले के एक कांस्टेबल फिलीस्तीन के लिए चंदा मांग रहा है उन्हें भरोसा है कि उत्तर प्रदेश का पुलिस प्रशासन उचित कार्रवाई करेगा इस मामले में ट्वीट होने के बाद से अफसरों में हड़कंप मच गया इस संबंध में साइबर सेल बरेली को जांचकर के बाद कार्रवाई के लिए निर्देशित किया गया है।

युवक ने कहा-फिलस्तीन आई लव यू

बरेली । इजरायल-फलस्तीन के बीच चल रहे युद्ध में भारत सरकार इजरायल के साथ है लखीमपुर खीरी के सिपाही, फतेहगंज पूर्वी के युवक के बाद अब कैंट के युवक ने फलस्तीन की सपोर्ट में सोशल मीडिया पर आई लव फलस्तीन लिखकर भड़काऊ स्टेटस डाला इस मामले की शिकायत एक्स (ट्वीटर) पर की गई है कैंट इंस्पेक्टर को जांच कर कार्रवाई के निर्देश दिए गए है ।एक्स (ट्वीटर) पर आजाद हिंदू सेना ने ट्वीट कर यूपी, एडीजी, डीएम, बरेली पुलिस को टैग किया है ट्वीट में कहा गया है कि हमारा देश इस्राइल के साथ है इसके बाद भी कैंट के नबी नगर निवासी नवाब मुजाइद खान फलस्तीन की सपोर्ट में भड़काऊ पोस्ट डालकर माहौल खराब करने की कोशिश कर रहा है उन्होंने आरोपी के खिलाफकार्रवाई की मांग की इस मामले में प्रभारी निरीक्षक कैंट को जांचकर कार्रवाई करने के निर्देश दिए गए है।

दलित युवक से मारपीट कर किया घायल: गुरसहायगंज (कन्नौज)। मामूली एक्सीडेंट के विवाद को लेकर दलित युवक के साथ दो दर्जन से अधिक लोगों ने धारदार हथियार व लाठी डंडा से हमला कर घायल कर दिया। पीड़ित ने कोतवाली पुलिस को तहरीर दी।

केन्द्रीय गृहराज्य मंत्री ने अग्नि पीड़ितों को दिया स्वीकृति पत्र

निघासन खीरी। नगर कग्राम पंचायत बौधिया कला के मजरा रामपुर मे दो सप्ताह पूर्व 23 सितम्बर को आग लगने से सेलेन्डर फटने पर पांच घर जल गये थे जिनके लिए मुख्य मंत्री आवास स्वीकृति पत्र माननीय गृह राज्य मंत्री जी आज पी डब्लू डी गेस्ट हाउस मे सभी लाभार्थियों को स्वीकृति पत्र वितरण कियाए। खंड विकास अधिकारी के के त्वरित कार्रवाई से खंड विकास अधिकारी की सराहना की और इस कार्यक्रम में कई फरियादियों की समस्याओं का निस्तारण आला अधिकारियों को निर्देशित कर निस्तारण हेतु कहा।

किया गय इस मौके पर सांसद प्रतिनिधि अरविंद सिंह संजयए कनक पाल सिंह राना मोनू दीक्षितएके के तिवारी वीरेंद्र मिश्राए कमलेश गुप्ताएखण्ड विकास अधिकारी जयेश कुमार सिंह व ग्राम प्रधान सैय्यद मकसूद अली उर्फ गुड्डू एउपदेश वर्मा ग्राम पंचायत अधिकारीएदिग्विजय जिला पंचायत सदस्यएएव सभी लाभार्थी सुमिताएसूरज कुमारएअंकित कुमारएसुमित कुमारएविजय कुमार सहित लोग मौजूद रहे।

रामलीला की शुरूआत से पहले निकली शोभायात्रा

मोहम्मदी खीरी। नवरात्रि के पहले दिन से ही श्री रामलीला की शुरुआत से पहले बाजार खुर्द मंदिर से शोभा यात्रा निकाली गईएजो बरबर चौराहे होते हुऐ श्री रामलीला पहुचीए जहां गणेश पूजन करएस्थापना कर श्री रामलीला की शुरुआत की गयीएशोभायात्रा मे अनेको रग के बाजेए सुंदर झाकियां गरबा करती बच्चियों शामिल हुई इस शोभा यात्रा में प्रमुख रूप से अध्यक्ष संदीप मल्होत्रा पूर्व अध्यक्ष दुर्गा मेहरोत्रा अधिशासी अधिकारी गुंजन गुप्ताए वरिष्ठ सभासद सुशीला वर्मा एराकेश कटियारए शिवम राठौर ए शिवनंदन रस्तोगी सुशील वर्मा प्रदीप वर्मा अतुल रस्तोगी सहित नगर पालिका के सभासद सहित सुरक्षा के दृष्टिकोण पुलिस बल मौजूद रहा।

मनाई गई मिसाइल मैन की जयंती

गोला गोकरननाथस भारत के पूर्व राष्ट्रपति मिसाइल मैन वैज्ञानिक भारत रत्न डॉक्टर एपीजे अब्दुल कलाम आजाद की जयंती वारिस अली अन्सारी जिला पंचायत सदस्य के आवास पर मनाई गई। एपीजे अब्दुल कलाम आजाद मिसाइल मैन के नाम से जाने जाते हैं। भारतीय गणतंत्र के ग्यारहवें निर्वाचित राष्ट्रपति थेस वह भारत के पूर्व राष्ट्रपति जानेमन वैज्ञानिक के रूप में विख्यात थेस आज ही के दिन 15 अक्टूबर 1931 को इनका जन्म तमिलनाडु के रामेश्वरम में एक मध्यम वर्ग मुस्लिम परिवार में हुआ था । भारत सरकार द्वारा उन्हें 1981 में पद्म भूषण और 1990 में पद्म विभूषण का सम्मान प्रदान किया गया जो उनके द्वारा इसरो और डी आर डी ओ में कार्यों के दौरान वैज्ञानिक उपलब्धियों के लिये तथा भारत सरकार के वैज्ञानिक सलाहकार के रूप में कार्य हेतु प्रदान किया गया थास इस अवसर पर रियासत एडवोकेटएसानू वर्मा एमुन्ना अंसारी एफैजान एशादाब आलम एमुजम्मिल अंसारी एसलमान अंसारी और बहुत से लोग उपस्थित रहे ।

निःशुल्क सर्विस कैंप का आयोजन

कानपुर। बीएसएच होम एप्लायंसेस प्राइवेट लिमिटेड ग्राहकों के लिए अपनी प्रतिबद्धता को प्रखर रखते हुए बॉश और सीमेंस एप्लायंसेस के लिए निःशुल्क सर्विस कैंप का आयोजन किया। सर्विस कैंप की शुरुआत 9 अक्टूबर से हुई जो कि 14 अक्टूबर को संपन्न हो गया। सत्यनारायणन विश्वनाथन हेड. बिज़नेस ने कहाए बीएसएच होम एप्लायंसेस मेंए हम ग्राहक.प्रथम दृष्टिकोण का पालन करते हैं और हमारे तमाम प्रोडक्ट्स और सर्विसेस ग्राहकों को खुश करने के लिए अतिरिक्त प्रयास करने पर ध्यान केन्द्रित करते हैं।

पूजन कर किया रामलीला का शुभारम्भ

गुरसहायगंज (कन्नौज)। करीब सत्तर वर्ष पुरानी श्री आदर्श रामलीला समिति पुरानी गल्ला मंडी के पदाधिकारियों के तत्वाधान में पूर्व चेयरमैन प्रतिनिधि नें श्रद्धालुओं के साथ आदर्श रामलीला मंचन का शुभारंभ प्रथम पूज्य भगवान गणेश पूजन के साथ किया गया। पंडित राकेश चन्द्र शास्त्री ने विधि विधान के साथ पूजन कराया। इस दौरान उन्होनें नागरिकों से आदर्श रामलीला मंचन स्थल पर पहुंचने की अपील की।बीती शाम नगर की पुरानी गल्ला मण्डी में पूर्व चेयरमैन प्रतिनिधि इन्द्र कुमार गुप्ता, भाजपा क्षेत्रीय मंत्री देवेन्द्र देव, संजीव गुप्ता उर्फसंजू सहित समिति के पदाधिकारियों को प्राचीन श्रीराम मंदिर के महंत पंडित राकेश चन्द्र शास्त्री ने विधि विधान के साथ प्रथम पूज्य भगवान गणेश पूजा के बाद रामलीला महोत्सव का शुभारम्भ किया।

सनातन तत्वज्ञान यज्ञ 19 अक्टूबर से

गाजीपुर। सर्वे भवंतु सुखिनःए सर्वे संतु निरामयारू सर्वे भद्राणि पश्यंतुए मां कश्चिदः दुःख भागभवेत्ए भारत मेरा देश महान, विश्व को देता आत्मज्ञान, की परिकल्पना को लेकर सनातन तत्व ज्ञान यज्ञ 19 अक्टूबर से 22 अक्टूबर तक श्री हंस योग आश्रम कचहरी रोड महुआबाग में आयोजित है। इस कार्यक्रम के संयोजक महात्मा शरणानंद जी ने बताया की नगर मे चार दिवसीय सद्भावना समारोह का आयोजन किया जा रहा है जिसमें अनेक तीर्थो से आये विद्वान संत महात्मा और साध्वीजन का शुभागमन होगा। जिनके मुखारबिंद से श्रीमद् भागवत गीताए श्री रामचरितमानस एवं अन्य धार्मिक ग्रंथो का सार सत्संग प्रवचन के रूप में श्रवण करने का सौभाग्य प्राप्त होगा संतो के आत्म कल्याणकारी विचारों का अवश्य लाभ उठाये। जिसके लिए 19 अक्टूबर को गुरु सत्संग प्रवचन सायं 6 बजे से 9 तकए 20 अक्टूबर प्रभात फेरी प्रातः 7 बजे से 9रू30 बजे तकए अपराह्न सत्संग प्रवचन 1 बजे से 4 बजे तकए सायं 6 से 9 बजे तकए 21 अक्टूबर को आरती पूजन साधना शिविर प्रातः 6 बजे से 9 तकए अपरान्ह सत्संग प्रवचन 1 बजे से 4 तकए 6रू30 से 9 तकए 22 अक्टूबर सुमिरन साधना प्रातः 6 बजे से 9 तक व सत्संग प्रवचन 12 बजे से 3 बजे तक चार दिवस कार्यक्रम में राज्यए मंडलए जनपद से आए साधु संत अपने.अपने विचार प्रकट करेंगे। कार्यक्रम में भजन गायक मधु जायसवाल एवं उनके साथी कलाकार द्वारा भजन गायन एवं वंदना प्रस्तुत की जाएगी।

धान से भरी ट्रैक्टर ट्राली लूट का पांच घंटे में ही कर दिया खुलासा

लखीमपुर खीरी। गोला पुलिस द्वाराए लूट की घटना का 24 घंटे के अन्दर सफल अनावरण करते हुए अभियुक्त गुरमीत सिंह को लूट के ट्रेक्टर.ट्राली ;धान लदा हुआद्धए मोबाइल फोन ;कीमत लगभग 13 लाख रुपयेद्ध व घटना में प्रयुक्त क्रेटा कार बरामद कर गिरफ्तार किया गया। गोला गोकर्ण नाथ रू. पूर्व दो दिन पहले गोला के अलीगंज मार्ग बड़ी नहर कृषि विश्व विद्यालय के पास अवैध असलह कि नोक पर एक के साथ धान भरी दो ट्राली ट्रेक्टर सहित लूट को अंजाम दिया थाए जिसका गोला थाना ने पांच घंटो मे ट्रेक्टर ट्राली सहित एक अभियुक्त को गिरफ्तार कर लियाएजिसकी सुचना थाना गोला पर जसपाल सिंह पुत्र सुरजीत सिंह ने दी कि उनका ड्राइवर व लेबर ट्रेक्टर व ट्राली में धान भरकर बेचने जा रहे थेए जब वह थाना गोला क्षेत्र के कृषि महाविद्यालय अलीगंज के सामने पहुँचें तो दो अज्ञात क्रेटा कार सवार व्यक्तियों ने तमंचे के बल पर उनके ड्राइवर व लेबर से ट्रेक्टर.ट्राली व मोबाइल फोन को लूट लिया। सूचना पा कर थाना गोला पुलिस द्वारा तत्काल घटनास्थल पर पहुँचकर निरीक्षण किया गया एवं थाना गोला पर मुकदमा संख्या 611ध्23 धारा 392 भादवि पंजीकृत किया गया था। पुलिस अधीक्षक खीरीएगणेश प्रसाद साहा द्वारा घटना के शीघ्र अनावरण हेतु क्षेत्राधिकारी गोला के पर्यवेक्षण में पुलिस टीमों का गठन भी कर दिया गया था। पुलिस टीमों द्वारा कल सुरागरसीध्पतारसी व ह्युमन इंटीलीजेन्स की मदद से घटना में संलिप्त गुरमीत सिंह पुत्र दिलीप सिंह को कस्बा अलीगंज से आगे फरधान जाने वाले कच्चे.पक्के मार्ग से गिरफ्तार कर लिया गया। गिरफ्तार अभियुक्त के कब्जे से लूट के ट्रेक्टर मय दो ट्राली ;धान से भरी हुईद्धए घटना में प्रयुक्त क्रेटा कारए लूट का मोबाइल फोन व आधार कार्ड बरामद किया गया। गिरफ्तार अभियुक्त के कब्जे से एक अवैध तमंचा.कारतूस भी बरामद किया गया हैए जिसके संबंध में थाना गोला पर आर्म्स एक्ट की सुसंगत धाराओं में भी अभियोग पंजीकृत किया गया । गिरफ्तार अभियुक्त का एक अन्य साथी परिस्थितियों को भाप कर भाग गयाए जिसकी गिरफ्तारी हेतु सार्थक प्रयास किए जा रहे है।

मिनी ट्रामा सेन्टर में मिल रही बेहतर स्वास्थ्य सेवा

तथाकथित महानुभाव लगा रहे बदनुमा दाग

ओयल खीरी। जी हां मुस्कुराइए आप ओयल में है जहां बेहतर चिकित्सा स्वास्थ्य सेवाए मिल रही है लेकिन तब भी यहां कुछ तथाकथित महानुभाव चिकित्सको को परेशान करने में लगे है। मान लीजिए अगर स्वास्थ्य सेवाए मौजूद हो तब मरीजों को इसका लाभ न मिले तो शिकायत करना बनता है लेकिन ओयल कस्बे में उल्टी गंगा बहा कर कुछ तथा कथित महानुभाव चिकित्सको एवम उनके स्टाफको परेशान करने में लगे हुए है जी हां ऐसा ही एक मामला ओयल कस्बे क्षेत्र का सामने आया है जहां एच पी पेट्रोल पंप के निकट मिनी ट्रामा सेंटर एवम प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र स्थित है जहां मिनी ट्रामा सेंटर में सात दिन और 24 घंटे बेहतर चिकित्सा सेवा चिकित्सको द्वारा प्रदान की जा रही है यथा संभव इलाज किया जा रहा है लेकिन कुछ तथा कथित महानुभाव मिनी ट्रामा सेंटर एवम प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र पर बेबुनियाद सवालिया प्रश्न चिन्ह लगाकर बदनाम करने में लगे हुए है इसलिए हम सभी ने सत्यता जानने के लिए आज पूर्व की भांति आयोजित जन आरोग्य मेले में चिकित्सा सेवा हेतु आए मरीजों से पूछताछ की गई तो वहां पता चला कि आए हुए मरीजों को अस्पताल द्वारा सरकारी दवा जो कि निशुल्क है वो उन्हें निशुल्क प्रदान की जाती है इस संबंध में कस्बे के सुशांत सिंह से पूछा गया तो उन्होंने बताया कि ओयल प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र हो या मिनी ट्रामा सेंटर जहां चिकित्सक द्वारा तत्काल उपचार किया जाता है और सरकारी निशुल्क दवाईया दी जाती है बाहर की दवा कोई भी चिकित्सक नही लिखता है।उधर दूसरी तरफ कस्बे में 58 वर्षीय रानी निवासी मोहल्ला कोतवाली से जानकारी की गई तो उन्होंने बताया कि ट्रामा सेंटर अस्पताल में बेहतर स्वास्थ्य सेवाए चिकित्सको द्वारा निशुल्क प्रदान की जा रही है मुझे भी बुखार और दर्द की समस्या थी जो कि निशुल्क इलाज एवम दवाइया दी गई थीं जिससे मैं ठीक भी हो गईं हूं।

नई तकनीक से अब बेहतर उपचार संभव

बरेली। मैक्स इंस्टिट्यूट ऑफ कैंसर केयर वैशाली (गाजियाबाद) ने गैस्ट्रोइंटेस्टाइनल ऑन्कोलोजिकल (जीआई) सर्जरी के क्षेत्र में हुई तरक्की के बारे में जानकारी दी. तकनीक के फायदे बताने के लिए जीआई कैंसर से पीड़ित रहे बरेली के कुछ मरीजों के बारे में बताया गया कि कैसे उनका मैक्स टीम ने सफल इलाज किया।मैक्स सुपर स्पेशलिटी हॉस्पिटल वैशाली में जीआई एंड एचपीबी सर्जिकल ऑन्कोलॉजी के सीनियर डायरेक्टर डॉक्टर विवेक मंगला इस मौके पर मौजूद रहे. साथ ही बरेली की 32 वर्षीय आरती, 65 वर्षीय सीमा और 29 वर्षीय अनिता भी यहां मौजूद रहीं. डॉक्टर विवेक ने इन मरीजों का उदाहरण देते हुए समय पर रोग के डायग्नोज होने और लेप्रोस्कोपिक जैसे

गैस्ट्रोइंटेस्टाइनल कैंसर

एडवांस इलाज मेथड्स के फायदों के बारे में बताया।इन मामलों के बारे में जानकारी देते हुए मैक्स सुपर स्पेशलिटी हॉस्पिटल वैशाली में जीआई एंड एचपीबी सर्जिकल ऑन्कोलॉजी के सीनियर डायरेक्टर डॉक्टर विवेक मंगला ने कहा, श्श्32 वर्षीय आरती देवी को मलाशय में ब्लीडिंग, शौच के वक्त दर्द की शिकायत थी और उनका वजन घट रहा था. टेस्ट के बाद मलाशय के कैंसर का पता चला. ट्यूमर बोर्ड में इस मामले पर चर्चा की गई और उसके बाद कीमोथेरेपी व रेडियोथेरेपी दी गई. जिसके बाद उनकी सर्जरी की गई. मरीज की रेक्टल कैंसर हटाने के लिए लेप्रोस्कोपिक सर्जरी की गई. इस तकनीक की मदद से ट्यूमर पूरी तरह से हटा दिया जाता है।इन मामलों की जानकारी देने के साथ ही डॉक्टर विवेक ने आगे कहा, श्श्ये असाधारण मामले मैक्स इंस्टीट्यूट ऑफ कैंसर केयर, वैशाली में समय पर डायग्नोज, एडवांस इलाज और टीमों की विशेषज्ञता के महत्व को दर्शाते हैं।

कैकई के राजा दशरथ से वरदान मांगने और श्रीराम के वनजाने का हुआ मंचन

गाजीपुर। जनपद की लगभग 400 सालों से चली आ रही अति प्राचीन श्रीराम लीला कमेटी हरिशंकरी के तत्वाधान में वन्दे वाणी विनायक आदर्श श्रीराम लीला मण्डल द्वारा स्थानीय मुहल्ला हरिशंकरीए स्थित श्रीराम चबूतरा पर लीला के पांचवे दिन लीला के माध्यम से श्री महाराज दशरथ कैकेयी संवाद श्रीराम संवाद तथा विदायी मांगने से सम्बन्धित लीला का मंचन किया गया। लीला के दौरान दर्शाया गया कि जिस समय महाराज दशरथ दासियों के सूचना पाते ही संध्या के समय खुश होकर कैकेयी के महल में गये ऐसा मालूम हो रहा था कि साक्षात स्नेह ही शरीर धारण कर निष्ठुरता के पास गया हो जब सुनते है कि महारानी कोप भवन में जाकर जमीन पर लेटी है तो वह कोप भवन का नाम सुनते ही सहम जाते है। उनका पैर आगे नही बढता है जैसे स्वंय देवराज इन्द्र जिनकी भुजाओ के बल पर बसते है और सम्पूर्ण राजा लोग जिनका रूख देखते रहते है वही राजा दशरथ अपने स्त्री का क्रोध सुनकर सहम गयेए राजा डरते हुए अपनी पत्नी महारानी कैकयी के पास जाकर उनके दशा को देखकर महाराज दशरथ दुखित होते है उन्होंने चारों ओर अपनी निगाहे दौड़ायी तो देखा कि सारे वस्त्राभूषण महारानी कैकयी उतारकर कोप भवन के जमीन पर बिखेर दिया। वे महारानी के रूष्ट होने का कारण पूछते है कि बार.बार कह राउ सुमुखि सुलोचनि पिकबचनि कारण मोहि सुनाउ गजगामिनी निज काम कर। राजा दशरथ बार.बार कह रहे थे हे सुलोचनी अपने क्रोध का कारण बताओए राजा दशरथ के बातों को सुनकर महारानी कैकेयी हंसती हुई सारे गहने कपड़ो को पहनकर राजा दशरथ से कहती है महाराज आपने देवासुर संग्राम में मुझे दो वरदान देने का वचन दिया था आज वह समय आ गया है।

सरकार ने स्वच्छता अभियान को दिया जनांदोलन का रूप: चित्रकूट सांसद

●सांसद ने गांवों में किया ठोस अपशिष्ट प्रबंधन केंद्रों का लोकार्पण

संवाददाता। चित्रकूट

स्वच्छ भारत मिशन ग्रामीण योजना अंतर्गत विकासखंड कर्वी के परसौंजा ग्राम पंचायत व विकासखंड पहाड़ी के सरधुवा ग्राम पंचायत में ठोस अपशिष्ट प्रबंधन केंद्रों का लोकार्पण बांदा-चित्रकूट सांसद आर के सिंह पटेल ने किया। इन केंद्रों में ग्राम पंचायत से सूखा तथा गीला कचरा ई-रिक्शा के माध्यम से एकत्रित किया जाएगा। इस कचरे से खाद का भी निर्माण होगा। सांसद ने कहा कि केंद्र और प्रदेश की डबल इंजन की सरकार ने स्वच्छता कार्यक्रम को जनांदोलन का रूप दिया है। जिससे आज स्वच्छ और स्वस्थ्य भारत के निर्माण का सपना साकार हो रहा है। कार्यक्रम में ग्राम वासियों को संबोधित करते हुए सांसद श्री पटेल ने कहा कि देश के यशस्वी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी व प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी द्वारा शुरू किया गया स्वच्छता अभियान आज पूरे भारत में जनांदोलन का रूप ले चुका है।

आज पूरा भारत स्वच्छता के महत्व का समझ चुका है। लोग सूखे और गीले कचरे का अलग-अलग निर्धारित जगह पर फेंक रहे है। अब शहर से लेकर गांव तक की सड़के साफ-सुथरी नजर आ रहीं है। स्वच्छता के प्रति जागरूकता से संक्रामक बीमारियों पर अंकुश लगा है। उन्होने कहा कि सरकार द्वारा एकल व सामूहिक शौचालय निर्माण तथा कचरा प्रबंधन सहित स्वच्छता भारत के निर्माण के लिए आवश्यक प्रयास किया जा रहा है। इसके अलावा अभियान चलाकर गांव से शहरों तक नदियों की स्वच्छता तथा पर्यावरण संरक्षण के लिए वृहद वृक्षारोपण सरकार द्वारा कराया जा रहा है। प्रत्येक ग्राम पंचायत में में ठोस अपशिष्ट प्रबंधन केंद्रों की स्थापना की जा रही है।

सड़क हादसों में दो सब इंस्पेक्टरों समेत तीन की मौत, सात घायल

संवाददाता। घाटमपुर

रविवार को घाटमपुर में सड़क हादसे की तीन घटनायें हुई जिसमें दो प्रमोटेड दारोगा सहित तीन लोगों की मौत हो गयी जब कि मासूम सहित 7 लोग घायल हो गये। जिन्हे प्राथमिक उपचार के बाद हैलट कानपुर रिफर कर दिया गया गया। हादसे की पहली घटना आज सबेरे कानपुर-सागर हाइवे पर नगर के कानपुर रोड पर कुष्मॉण्डा देवी मंदिर के सामने हुई जिसमे वाइक सवार दारोगा व गांव का ही मजदूर को ट्राला ट्रक ने कुचल दिया जिससे दोनो की मौके पर ही मौत हो गयी। मृतक दारोगा फर्रुखाबाद जिले के कापिल थाने में तैनात बताया जाता है।

परिजनों ने बताया कि दारोगा संन्तोष कुमार(52) का बड़ा बेटा आयूष कानपुर में रहता है और कम्पटीशन की तैयारी कर रहा है, छोटे बेटे अभय ने बताया कि वो आयूष से मिलने के बाद गांव के ही सिद्दन (46) के साथ लौट रहे थे, कस्बा चौकी प्रभारी रबि दीक्षित ने बताया कि मृतक दारोगा बर्तमान में घाटमपुर के मुहल्ला जवाहर नगर पश्चिमी में सपरिवार रहते थे और कानपुर से घाटमपुर आ रहा था। पुलिस ने शवों का पंचनामा कर पोस्ट मार्टम के लिये भेजा है। उधर स्टेट हाइवे 46 भोगनीपुर-चौडगरा पर स्थित गांव परास के सामने व नगरीय सीमा पर रेलवे क्रासिंग पर हुए हादसों में मासूम सहित 7 लोग घायल हो गये जिन्हे प्राथमिक उपचार के बाद हैलट कानपुर रिफर किया गया है।

जहां इलाज दौरान बांदा जनपद के नरैनी थाना में तैनात दारोगा शिवपाल सिंह यादव की मौत हो गयी, शिवपाल घाटमपुर क्षेत्र के ओरिया गांव का रहने वाले थे तथा रेलवे क्रासिंग पर आटो रिक्शा व बाइक की टक्कर में गंभीर रूप से घायल हो गये थे।

रामलीला में धनुष यज्ञ व परशुराम-लक्ष्मण संवाद का मंचन देखकर दर्शक हुए मंत्रमुग्ध

●पूर्व सांसद भैरों प्रसाद व नगर पालिका अध्यक्ष ने किया लीला का शुभारंभ

संवाददाता। चित्रकूट

रामलीला समाज नया बाजार द्वारा आयोजित रामलीला में शनिवार रात को धनुष यज्ञ एवं परशुराम लक्ष्मण संवाद का मंचन किया गया। लीला में भगवान श्रीराम व लक्ष्मण मुनि विश्वामित्र के साथ जनकपुर में आयोजित स्वयंवर में पहुंचते हैं। राजा जनक विश्वामित्र सहित श्रीराम, लक्ष्मण को आसन पर विराजमान कराते हैं।

कार्यक्रम का शुभारंभ पूर्व सांसद भैरों प्रसाद मिश्रा, नगर पालिका अध्यक्ष नरेंद्र गुप्ता, जिला सहकारी बैंक के अध्यक्ष पंकज अग्रवाल, व्यापार मंडल के प्रदेश मंत्री राजीव अग्रवाल, आदि ने भगवान श्रीराम व लक्ष्मण के स्वरूपों की आरती कर किया। इसके बाद धनुष यज्ञ लीला का मंचन हुआ तथा धनुष टूटने के बाद परशुराम-लक्ष्मण संवाद ने दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया।

शारदीय नवरात्र प्रारंभ, पंडालों में आसीन हुईं देवी

चित्रकूट। जिले में शारदीय नवरात्र का पर्व शुरू हो गया है। जिला मुख्यालय समेत आसपास के कस्बों के पंडालों में मां दुर्गा की प्रतिमाएं स्थापित हो गई हैं। मूर्तिकार प्रतिमाओं को अन्तिम रुप देने में तेजी से जुटे हैं। मूर्तिकार बाबूलाल पाल ने बताया कि गंगा की मिट्टी लाकर प्रतिमा बनाते हैं। मिट्टी में धान की घास और बांस व सुतली का प्रयोग होता है। प्रतिमा पूरी मिट्टी की होती है। ज्यादातर दुर्गा मां की प्रतिमायें शेर पर बैठी हुई एवं शिवजी को जल चढ़ाती हैं। प्रतिमाओं को ले जाने का सिलसिला शुरु हो चुका है। देवी-मन्दिरों में श्रद्धालुओं की भीड उमड़ना शुरु हो गई है। पहले दिन जिला मुख्यालय के देवी-मन्दिरों में महिलाओं व पुरुषों ने दुर्गा प्रतिमा की पूजन-अर्चन किया। शारदीय नवरात्र को लेकर श्रद्धालुओं में दिनभर उत्साह रहा। दिनभर बाजारों में खरीददारी करने को महिला व पुरुषों की भीड़ लगी रही।

नवरात्रि के प्रथम दिन माता शैलपुत्री की आराधना में उमड़ी आस्था की भीड़

उरई, जालौन। शारदीय नवरात्रि के प्रथम दिन आज सुबह से ही आस्थावान भक्तों का उत्साह देखते ही बनता था नगर के हॉकी माता मंदिर सहित विभिन्न शक्तिपीठों में माता के जयकारे गुंजन शुरू हुए तो वही नगर सहित जनपद के विभिन्न ग्रामीण अंचलों में भी देवी भक्तों ने माता की झांकियां सजाकर उनमें माता रानी की स्थापना की सुबह से देर शाम तक कलश यात्रा और विभिन्न पूजा का दौर प्रारंभ हुआ प्रथम दिन मां शैलपुत्री को श्वेत पुष्प श्वेत वस्त्र आदि भेंट करके उनका अर्चन वंदन किया गया।

रविवार से शेयर्ड नवरात्रि प्रारंभ होते ही चारों ओर भक्ति मय माहौल सुबह से ही नजर आने लगा जब प्रातः सूर्योदय के साथ ही बड़ी संख्या में श्रद्धालु माता रानी की पूजा अर्चना करने के लिए नगर के विभिन्न मंदिरों की ओर प्रस्थान करते नजर आए फुलकी माता मंदिर रथ रोड स्थित संकट मंदिर शीतला मंदिर के अलावा काली माता मंदिर तथा अन्य शक्तिपीठों में देवी माता के प्रथम स्वरूप शैलपुत्री के पूजा अर्चन की विधि विधान के साथ रश्म प्रारंभ की गई जो कि पूरे 9 दिन तक जारी रहेगी।

महाराज अग्रसेन जयंती पर धूमधाम से निकली शोभा यात्रा

कोंच, जालौन। महाराजा अग्रसेन की जयंती रविवार को धूमधाम से मनाई गई। महाराजा अग्रसेन की शोभायात्रा भी निकाली गई जिसमें कई झांकियां सजाई गयीं थीं। महाराजा अग्रसेन की जयंती पर अग्रवाल भवन से शोभायात्रा प्रारंभ होकर नगर के भुंजरया चौराहा, लवली चौराहा, मानिक चौक, सर्राफा बाजार, रामगंज बाजार, नगर पालिका, चौकी तिराहा होकर पुनरू अग्रवाल भवन पर जाकर समाप्त हो गई जहां अग्रवाल समिति के तत्वाधान में कई सांस्कृतिक मंचीय कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। शोभायात्रा मार्ग में जगह जगह स्वागत के इंतजाम किए गए थे। बीसा अग्रवाल समिति के तत्वाधान में आयोजित इस कार्यक्रम में भारी संख्या में महिलाएं सिरों पर कलश लेकर चल रहीं थीं। सुरक्षा व्यवस्था में सीओ रामसिंह, कोतवाल नागेंद्र कुमार पाठक, अतिरिक्त निरीक्षक वीरेंद्र सिंह, खेड़ा चौकी इंचार्ज अश्विनी तिवारी, दरोगा मंसूर अंसारी आदि पुलिस बल के साथ रहे।

नगर की ऐतिहासिक रामलीला के मंचन का दर्शकों ने लिया आनंद

संवाददाता। जालौन, उरई

नगर की ऐतिहासिक रामलीला के 175 वें मंचन में शिवजी का पिनाक धनुष तोड़कर प्रभु श्रीराम सीता के वर हुए। इस दृश्य को देखकर दर्शक भाव विभोर हो उठे। उधर, धनुष यज्ञ के बाद घंटों तक लक्ष्मण और परशुराम के बीच चुटीले संवाद चलते रहे। जिसका दर्शकों ने जमकर आनंद लिया।

मंचन के पांचवे दिन धनुष यज्ञ से परशुराम, लक्ष्मण संवाद तक की लीला का मंचन किया गया। जनकपुर में होने वाले स्वयंवर की खबर सुनकर देश विदेश के राजा व राजकुमार आए। धनुष पर प्रत्यंचा चढ़ाने से पूर्व रावण जब जनक के दरबार में पहुंचा, तो उसे भगवान राम के दर्शन हुए। श्रीराम के दर्शन होने के बाद रावण ने उनका परिचय लिया और बिना धनुष तोड़े ही लंका लौट गया। इसके बाद सभी राजाओं ने धनुष हिलाने की कोशिश की, लेकिन असफल रहे। इस पर राजा जनक ने जब शोक प्रकट किया तो गुरु विश्वामित्र ने श्रीराम को धनुष तोड़ने की आज्ञा दी, जिस पर श्रीराम ने शिवजी का धनुष जरा सी कोशिश में ही तोड़ दिया। प्रभु श्रीराम ने जैसे ही भगवान शिवजी का धनुष तोड़ा, जनकदुलारी सीता ने वरमाला श्रीराम के गले में डाल दी।

उधर कोंच में भी रामलीला रंगमंच पर शनिवार रात धनुष भंग लीला का मनोहारी मंचन किया गया। इस लीला का आनंद लेने के लिये ग्राउंड में भारी भीड़ उमड़ी थी। दृश्य खुलता है, राजा जनक का दरबार सजा है, रंगभूमि में शिव धनुष पिनाक रखा है। राजा जनक के निमंत्रण पर ब्रह्मांड की अद्वितीय सुंदरी सीता का वरण करने की इच्छा मन में लिए देश देशांतर के राजा, राजकुमार रंगभूमि में प्रस्तुत होते हैं।

क्विक न्यूज

विशाल कलश यात्रा के साथ वार्षिक उत्सव आरंभ

रसूलाबाद, कानपुर देहात। नवम दिवसीय वार्षिक उत्सव का शुभारंभ भव्य विशाल कलश यात्रा के साथ हुआ। जहां बड़ी संख्या में भक्त विशाल कलश यात्रा में शामिल हुए। धर्मगढ़ बाबा मंदिर से शुरू हुई कलश यात्रा रतनपुर रजबहे लाला निवादा पहुंची। जहां से जल भरने के बाद भागवत कथा प्रांगण में घटों को विधि विधान से मन्त्रोच्चारण के साथ स्थापित किया गया। रविवार को रसूलाबाद कस्बे के धर्मगढ़ बाबा मंदिर से पैदल घट यात्रा निकाली गई जो रसूलाबाद कस्बे के मुख्य चौराहा आजाद नगर लहरापुर रोड से होते हुए लालानिवादा पहुंचे। जहां रतनपुर रजबहे से विधि विधान से मंत्रोच्चारण के साथ घटों को भरा गया। यज्ञाचार्य डॉ रामनरेश त्रिपाठी ने मंत्रोच्चारण और पूजन के साथ घटों को भराया और भागवत कथा पांडाल में उन घटों को स्थापित कराया। इस दौरान भागवत कथा प्रवक्ता पंडित अंकुश तिवारी ने गणेश पूजन के साथ भागवत कथा का आरंभ किया।

वृद्ध की ईटों से कुचल कर निर्मम हत्या

फर्रुखाबाद। दावत खाने गए बृद्ध की ईटों से कुचल कर व गला कसकर अज्ञात लोगो ने हत्या कर दी। वृद्ध का शव सूखी नहर में पड़ा मिला। थाना मऊदरबाजा क्षेत्र के ग्राम अदिउली निवासी बृद्ध चन्द्रपाल बरसी संस्कार की दावत खाने गया था। देर रात घर न लौटने पर परिजन खोजबीन करते रहेद्य सुबह बृद्ध का शव नहर में पड़ा देख ग्रामीणों ने शव मिलने की सूचना परिजनों को दी जिससे परिवार में कोहराम मच गया। वृद्ध का उसी की सैंडो बनियान से गला कसकर व ईटों से कुचल कर हत्या किए जाने की बात पुलिस कह रही है। घटना की सूचना पर अपर पुलिस अधीक्षक डॉ संजय सिंह, सीओ सिटी प्रदीप कुमार सिंह ने पुलिस बल के साथ मौके पर पहुंचकर जांच पड़ताल की। बाद मे पुलिस ने शव का पंचनामा भरकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया।

सात उपनिरीक्षक इधर से उधर

फतेहपुर। पुलिस अधीक्षक के प्रवक्ता ने बताया कि पुलिस लाइन में तैनात रहे उपनिरीक्षक धनंजय कुमार सरोज को आबूनगर चौकी इंचार्ज, यदुराज सिंह को मानीटरिंग सेल, अपर पुलिस अधीक्षक कार्यालय में तैनात रहे दरोगा संतोष कुमार सिंह को देवमई चौकी प्रभारी, कल्यानपुर थाने में तैनात रहे उपनिरीक्षक रीतेश कुमार राय का थाना हथगांव में किया गया स्थानांतरण निरस्त करके खागा कस्बा चौकी प्रभारी बनाया गया है। इसी तरह खागा कोतवाली में तैनात उपनिरीक्षक उत्कर्ष मिश्रा का जहानाबाद थाने के लिए किया गया स्थानांतरण निरस्त करके सदर कोतवाली भेजा गया। बिंदकी कोतवाली में तैनात उपनिरीक्षक सरनाम सिंह को सरकंडी चौकी प्रभारी व राधानगर थाने के उपनिरीक्षक कन्हैया लाल गौतम को राधानगर चौकी प्रभारी बनाया गया।

फतेहपुर में मां-बेटी समेत तीन की जलकर मौत

फतेहपुर। ललौली थाना क्षेत्र के खटौली गांव में रविवार की सुबह उस वक्त दिल को दहला देने वाला हादसा हो गया जब खाना बनाते समय आग लग जाने से मां-बेटी व बेटा बुरी तरह झुलसा गये। तीनों को उपचार के लिए जिला चिकित्सालय लाया गया। जिनकी हालत गंभीर देखते हुए कानपुर के लिए रेफर कर दिया। कानपुर पहुंचते ही तीनों ने दम तोड़ दिया। जानकारी के अनुसार थाना क्षेत्र के खटौली गांव निवासी उमेश कुमार विश्वकर्मा की पत्नी अलका (32) गैस-चूल्हे पर खाना बना रही थी। वहीं पास में पुत्री परी (3) व पुत्र गौरव (5) खेल रहे थे। तभी अचानक आग लग गई। जिसकी चपेट में मां-बेटी व बेटा आ गये। जिससे तीनों बुरी तरह झुलस गये। शोर-शराबा सुनकर पड़ोसी इंद्रजीत साहू तत्काल मौके पर पहुंचा और हादसा देखकर उसकी रूह कांप गई।

मरघट की जमीन खाली कराने में जुटा प्रशासन

फतेहपुर। गाजीपुर थाना क्षेत्र में मरघट की जमीन में कब्जा किये अवैध कब्जेदारों के खिलाफ कोर्ट के आदेश पर बेदखली की कार्रवाई की गई। प्रशासन की मौजूदगी में जमीन पर बने मकानों को बुलडोजर से ढहा दिया गया। गाजीपुर कस्बा से सिमौर रोड पर मौजूद मरघट की जमीन पर पिछले कई सालों से लोगों ने कब्जा कर रखा था। कई कब्जेदारों ने जमीन पर आलीशान मकान बना कर खड़ा कर दिया था तो कई कब्जेदार जमीन पर खेती करते थे। राजस्व विभाग ने दो हजार तेरह में मुकदमा दायर किया था। कोर्ट ने बेदखली का आदेश दिया। मामले पर नायब तहसीलदार रजनीश श्रीवास्तव ने बताया कि 26 दिन पूर्व कब्जेदारों के खिलाफ अभियान चलाकर तीन घर गिराए गए थे और बाकी कब्जादरो को नोटिस दी गई थी, लेकिन नोटिस देने के बाद भी अवैध कब्जादारों ने मकान नहीं खाली किया था। आज रविवार को एसडीएम प्रभाकर त्रिपाठी के नेतृत्व में राजस्व टीम और भारी पुलिस बल के साथ बुलडोजर लेकर मौके पर पहुंचे, जहां कब्जादारों के अंदर अफरा तफरी का माहौल बन गया। प्रशासन ने अंतिम चेतावनी देते हुए सभी घरों को खाली करवा दिया। इसके बाद प्रशासन ने बुलडोजर से लाखों कीमत से तैयार कराये गये आलीशान मकानों को ध्वस्त करा दिया।

महाराज अग्रसेन की मनाई 5147 वीं जयंती

संवाददाता। फतेहपुर

रविवार को भगवान श्रीराम के पुत्र कुश के वंश की 33वीं पीढ़ी द्वापर युग में जन्मे शिरोमणि महापुरुष महाराजा अग्रसेन महाराज की 5147वीं जयंती अंतर्राष्ट्रीय वैश्य महासम्मेलन के बैनर तले मनाई गई। जिसमें समाज के समस्त संगठन एवं व्यापार मंडल के समस्त संगठनों ने मिलजुल कर भाग लिया। कार्यक्रम की अध्यक्षता जिलाध्यक्ष महेंद्र गुप्ता ने की। आयाह शाह विधायक विकास गुप्ता बब्लू, नगर पालिका अध्यक्ष राजकुमार मौर्य ने कार्यक्रम में हिस्सा लिया।

अतिथियों समेत समाज के लोगों ने जेल रोड स्थित महाराजा अग्रसेन चौराहा पहुंचकर उनकी प्रतिमा पर माल्यार्पण कर श्रद्धासुमन अर्पित किए। तत्पश्चात वक्ताओं ने उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर विस्तार से चर्चा कर उनकी सामाजिक समरसता से सीख लेकर समाज हित के कार्य करने व समाज को एक सूत्र में पिरोने का संदेश दिया जिससे संपूर्ण मानव जाति का कल्याण हो सके। ऐसे सामाजिक कार्य संपूर्ण मानवता के लिए हितकारी होंगे। इस मौके पर वरि. महामंत्री अजय कुमार गुप्ता, महामंत्री चंद्रप्रकाश गुप्ता, महिला जिलाध्यक्ष सुनीता गुप्ता, प्रेमचंद गुप्ता, संजय गुप्ता, नारायण गुप्ता, विनोद गुप्ता, बृजेश सोनी, आदि उपस्थिति रहे।

नवरात्र के प्रथम दिन दुर्गा पंडालों में गूंजे जयकारे

फतेहपुर। शारदीय नवरात्र के प्रथम दिन मां शैलपुत्री के दर्शन पूजन को मंदिरों एवं दुर्गा पंडालो में भक्तों की भीड उमड़ी। पंडालों में प्रतिमांओ की स्थापना की गयी। देर शाम तक मां के जयकारों से वातावरण गुंजाएमान रहा। आरती के बाद आये हुये श्रद्धालुओं को प्रसाद का वितरण किया गया। पूजा-अर्चना से पहले पंडालों में मां शेरावली की प्राण प्रतिष्ठा व हवन-पूजन भी किया गया। शारदीय नवरात्र के प्रथम दिन मां दुर्गा की प्रथम शक्तियों का स्वरूप शैलपुत्री है। पर्वतराज हिमालय के यहा जन्म लेने से भगवती को शैलपुत्री कहा गया। भगवती का वाहन बैल है दाहिने हाथ में त्रिशूल और बाये हाथ में कमल है। मां के इसी स्वरूप का पूजन किया जाता है। दुर्गा पंडालो एवं घरों में मृतिका से बेदी बनकर उसमें जौ, गेहू व कलश की स्थापना की गयी। शैलपुत्री के पूजन करने से मूलाधार चक्र जागृत होता है। जिससे अनेक प्रकार की उपलब्धियां प्राप्त होती है। मां के इस स्वरूप के पूजन से मूलाधार चक्र जागृत होता है। जिले के 1848 स्थानों में पंडाल सजाये गये हैं।

कलर बेल्ट प्रमोशन टेस्ट में बच्चों का शानदार प्रदर्शन

फतेहपुर। ताईक्वांडो एसोसिएशन ऑफ फतेहपुर के तत्वाधान में कलर बेल्ट प्रमोशन टेस्ट का आयोजन सेंट जेवियर्स हाईस्कूल में किया गया। जिसमें जिले के सेंट जेवियर्स हाईस्कूल, मदर सुहाग एजुकेशन सेंटर, ग्लोबल पब्लिक स्कूल, बचपन प्ले स्कूल, आरजी चिल्ड्रेन, राज ताईक्वांडो अकादमी, ओम ताइक्वांडो अकादमी, बचपन ताइक्वांडो क्लब के करीब एक सैकडा से ज्यादा खिलाड़ियों ने प्रतिभाग किया। जिसमे सेंट जेवियर्स स्कूल की राध्या सिंह पटेल और श्रेया वर्मा ने शानदार प्रदर्शन किया। यलो बेल्ट पाने वाले खिलाड़ी आर्या केशरवानी, परी अग्रवाल, अस्मा सेराज, काविश कुमार, मुस्तफा, आराध्या सिंह, मो. अली, रुद्र त्रिपाठी आदि रहे।

धूमधाम से मनाया पूर्व राष्ट्रपति डॉ अब्दुल कलाम का जन्म दिन

फर्रुखाबाद। पूर्व राष्ट्रपति डा.ए पी जे अब्दुल कलाम का जन्मदिन धूमधाम से मनाया गया पूर्व राष्ट्रपति भारत रत्न से सम्मानित डा. ए पी जे अब्दुल कलाम का जन्मदिन पूरे धूमधाम के साथ फतेहगढ़ स्थित मोहम्मद यूनुस अंसारी के आवास मछली टोला में आयोजित किया गया। इस मौके पर जाने माने शायर तारिक बशीर ने कहा कि देश की परमाणु शक्ति देने वाले महान वैज्ञानिक को आज राष्ट्र नमन कर रहा है।

मुहम्मद मोहिसिन शमशी एड.ने शेर पढ़ते हुए श्रद्धाजली पेश की कि मानवीय मूल्य को आत्मसात करने वाले मिसाइल मैन को राष्ट्र सदैव याद रखेगा।

रिजवान ताज ने कहा कि एकता के प्रतीक महान वैज्ञानिक ,दार्शनिक का जन्म रामेश्वरम ,तमिलनाडू में हुआ था।पर उनके जीवन का प्रकाश पूरे विश्व में चमकता रहेगा। शिक्षक मजहर मोहम्मद खा ने बताया कि पूर्व राष्ट्रपति का जन्म 15 अक्टूबर 1931 को तमिलनाडू के एक गांव धनकोडी में हुआ,इस महान वैज्ञानिक ने भारत का पहला उपग्रह प्रक्षेपण यान एस एल बी विकसित किया था जिसके सिद्धांत पर चलकर हम चंद्रयान तीन तक की सफलता प्राप्त कर सके।

पेज एक का शेष

बर्बादी के...

की दृढ़ प्रतिबद्धता और इस युद्ध को बढ़ाने की कोशिश करने वाले किसी भी देश या गैर देश को रोकने के हमारे संकल्प का संकेत देती है। ऑस्टिन ने एक दिन पहले अपनी इज़राइल यात्रा के बाद, हमास के हमलों पर इज़राइल की प्रतिक्रिया पर परामर्श जारी रखने के लिए इज़राइली रक्षा मंत्री योव गैलेंट से बात की। कॉल के दौरान, उन्होंने इज़राइल की सुरक्षा के प्रति संयुक्त राज्य अमेरिका की अटूट प्रतिबद्धता को रेखांकित किया। कॉल के दौरान, उन्होंने नागरिक सुरक्षा दायित्वों सहित युद्ध के कानून का पालन करने और गाजा में बिगड़ते मानवीय संकट को संबोधित करने के महत्व पर चर्चा की, जबकि इज़राइल ने सुरक्षा बहाल करने के लिए अपने अभियान जारी रखे हैं। अंत में उन्होंने हमास द्वारा नागरिकों को बंधक बनाने के घृणित कदम पर चर्चा की। विदेश मंत्री ब्लिंकन, जो इस समय मध्य पूर्व में हैं, ने शनिवार को रियाद में सऊदी विदेश मंत्री प्रिंस फैसल बिन फरहान से मुलाकात की। बाद में उन्होंने इजराइल पर आतंकवादी हमलों पर चर्चा करने के लिए अबू धाबी में संयुक्त अरब अमीरात के राष्ट्रपति शेख मोहम्मद बिन जायद अल नाहयान से भी मुलाकात की। ब्लिंकिन ने इजरायली नागरिकों पर हमास के जघन्य हमलों की संयुक्त अरब अमीरात की स्पष्ट निंदा और संघर्ष के प्रसार को रोकने के लिए राजनयिक प्रतिबद्धता जारी रखने के लिए सराहना व्यक्त की। ब्लिंकन और शेख मोहम्मद ने अधिक एकीकृत, सुरक्षित और समृद्ध क्षेत्र के निर्माण के लिए अपनी साझा प्रतिबद्धता पर भी चर्चा की और संयुक्त राज्य अमेरिका और संयुक्त अरब अमीरात के बीच रणनीतिक साझेदारी के महत्व की पुष्टि की। इस बीच, हमास और इजराइल के बीच जारी मौजूदा संघर्ष में 2,329 फलस्तीनियों की मौत हो चुकी है और यह पांच गाजा युद्धों में से फलस्तीनियों के लिए सबसे घातक युद्ध बन गया है। गाजा के स्वास्थ्य मंत्रालय ने यह जानकारी दी। संयुक्त राष्ट्र के आंकड़ों के अनुसार, इजराइल और हमास के बीच 2014 में हुए युद्ध में 2,251 फलस्तीनियों की मौत हुई थी, जिनमें से 1,462 आम नागरिक थे। मौजूदा युद्ध में मृतक संख्या रविवार को 2014 में हुए युद्ध की मृतक संख्या को पार कर गई। वर्ष 2014 में हुआ युद्ध छह सप्ताह चला था और इसमें इजराइली पक्ष के 74 लोगों की मौत हो गई थी, जिनमें छह आम नागरिक शामिल थे। मौजूदा युद्ध लगभग एक सप्ताह पहले उस समय शुरू हुआ था, जब हमास के आतंकवादियों ने अचानक दक्षिणी इजराइल में हमला कर दिया था। इन हमलों में 1,300 से अधिक इजराइली मारे गए हैं, जिनमें बड़ी संख्या में आम नागरिक शामिल हैं। इजराइल के लिए यह मिस्र और सीरिया के साथ 1973 में हुए युद्ध के बाद से अब तक का सबसे घातक युद्ध साबित हो रहा है।

ऑनलाइन खतरों...

की हैकिंग की घटनाओं के बाद आया। पिछले साल आधिकारिक आंकड़ों के अनुसार भारत में सरकारी संस्थानों को साइबर हमले के 82 मामलों का सामना करना पड़ा, जो 2021 की तुलना में आठ गुना अधिक है। जिलों में नई साइबर इकाई शत्रु देशों के हैकरों की गतिविधियों पर नजर रखेगी और रैंसमवेयर खतरों की भी निगरानी करेगी। अधिकारियों ने कहा कि यूनिट को कानूनी और प्रशासनिक समर्थन मिलेगा। पांच अक्टूबर के एमएचए पत्र में कहा गया है, 'जनवरी, 2023 के महीने में आयोजित डीजीपी/आईजीपी सम्मेलन के दौरान प्रधानमंत्री ने सिफारिश की थी कि साइबर सुरक्षा के खतरों का मुकाबला करने, सूचना प्रौद्योगिकी नेटवर्क की रक्षा करने, जांच करने के लिए उपयुक्त रूप से प्रशिक्षित 'साइबर कमांडो' की एक विशेष विंग स्थापित की जानी चाहिए। साइबर स्पेस और पुलिस और सरकारी संगठनों की साइबर सुरक्षा आवश्यकताओं का 'निरंतर आधार' पर ध्यान रखना।' पत्र में प्रस्तावित साइबर कमांडो विंग को पुलिस संगठन का अभिन्न अंग बताया गया है। गृह मंत्रालय के पत्र में कहा गया है, 'यह राज्यों/केंद्रशासित प्रदेशों और केंद्रीय पुलिस संगठनों/सीएपीएफ से लिए गए पुलिस कर्मियों के उपयुक्त रूप से प्रशिक्षित और सुसज्जित सेवारत सदस्यों द्वारा संचालित किया जाएगा। यदि आवश्यक समझा जाए तो उनके प्रयासों को किराए के पेशेवरों द्वारा पूरक किया जा सकता है। 'साइबर कमांडो' को आईटी सुरक्षा और डिजिटल फोरेंसिक के क्षेत्र में उनके मौजूदा ज्ञान और योग्यता के आधार पर सभी रैंक के सेवारत कर्मियों में से चुना जाएगा और एक विशेष रूप से डिजाइन किए गए आवासीय प्रशिक्षण कार्यक्रम से गुजरना होगा। गृह मंत्रालय के अधिकारियों के अनुसार प्रशिक्षण 142 (भारतीय साइबर अपराध समन्वय केंद्र), गृह मंत्रालय के साथ-साथ अन्य शीर्ष संस्थानों द्वारा आयोजित किया जाएगा। ये 'कमांडो' अपने मूल संगठनों के लिए काम करना जारी रखेंगे और केवल अत्यावश्यक मामलों में ही उन्हें राष्ट्रीय कर्तव्यों के लिए नियुक्त किया जाएगा। एमएचए के पत्र में कहा गया, हमें कंप्यूटर नेटवर्क और ऑपरेटिंग सिस्टम का बुनियादी ज्ञान रखने वाले विभिन्न पुलिस संगठनों में उपयुक्त सेवारत कर्मियों (किसी भी रैंक) की पहचान करने की आवश्यकता है। इसलिए, आपसे अनुरोध है कि अपने संगठन में कम से कम 10 ऐसे उम्मीदवारों की पहचान करें।

पाक, बांग्लादेश...

ने कहा कि संदिग्ध वस्तु होने की स्थिति में आरडीई अलार्म बजने और वीडियो फ्रेम तैयार करने से सुसज्जित है। इसमें विशेष परमाणु सामग्री और उर्वरक में प्राकृतिक रूप से होने वाले विकिरण के बीच अंतर करने की क्षमता भी होगी। माना जाता है कि सरकार ने इसे स्थापित करने में अमेरिका सहित कुछ विदेशी एजेंसियों से तकनीकी मदद ली है।

शहरी विकास...

इस संयंत्र से नगर निगम 25 वर्षों में 600 करोड़ रुपए की बचत कर सकेगा। इस धनराशि का इस्तेमाल विकास के कार्यों में होगा। उन्होंने कहा कि 500 टन प्रतिदिन कूड़े की जरूरत वाले इस संयंत्र से नगर निगम के साथ ही जिले की तमाम नगर पंचायतों के कूड़े का भी समुचित निस्तारण हो जाएगा। योगी ने सभी नागरिकों को नवरात्रि की शुभकामनाएं दीं और विकास की सोच के साथ आगे बढ़ने का आह्वान किया। समारोह में उन्होंने नारी शक्ति का भी सम्मान किया। मिशन शक्ति के तहत मुख्यमंत्री के हाथों सम्मानित होने वाली 10 महिलाओं ने स्वच्छता समेत अन्य क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्य किया है। कार्यक्रम स्थल पर योगी ने नन्हे-मुन्ने बच्चों का अन्नप्राशन कराया। उन्होंने बच्चों को खूब दुलारा और आशीर्वाद देकर उनके स्वस्थ एवं उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

निशिकांत व...

दिन जांच कमेटी का गठन कर दिया था। साथ ही 23 दिसंबर 2005 को 10 सांसदों को 23 दिन के लिए निलंबित कर दिया गया था। दुबे ने कहा- इसी सदन ने 'प्रश्न के लिए नकदी' मामले में 11 सांसदों की सदस्यता रद्द कर दी थी। आज भी यह चोरी नहीं चलेगी। एक बिजनेसमैन हमारे लिए खराब है, लेकिन दूसरे से 35 जोड़ी जूते लेने में उन्हें कोई गुरेज नहीं है। मिसेस (इमेल्डा) मार्कोस की तरह हर्मीस, गुच्ची बैग, पर्स, कपड़े और हवाला का पैसा काम नहीं करेगा। सदस्यता चली जाएगी, कृपया प्रतीक्षा करें।

बाल विवाह मुक्त यूपी अभियान 16 से, अफसरों को नहीं है जानकारी

हमीरपुर। उत्तर प्रदेश सरकार ने पूरे प्रदेश में पहली मर्तवा आगामी 16 अक्ट्बर को बाल विवाह मुक्त उत्तर प्रदेश अभियान संचालति करने को कहा है इसमे सभी शिक्षण संस्थाओं, ग्राम पंचायतों, पुलिस, बाल विकास परियोजना, राष्ट्रीय आजीविका मिशन कार्यक्रम के संबंधित अधिकारियों को जिम्मेदारी दी गयी है इस अभियान में सोमवार को संबंधित बालिकाओं महिलाओं व अभिभावकों को जागरुकर शपथ पत्र भरवाया जायेगा। संबंधित अधिकारियों को इस मामले की जानकारी नहीं है। शासन के संयुक्त सचिव महाबीर प्रसाद गौतम ने करीब आधा दर्जन विभागों को भेजे गये पत्र में कहा है कि पूरे प्रदेश में बाल विवाह एक समस्या बनी हुई है। जिसमे लोगो की अज्ञानता के चलते बाल विवाह कर मासूम बच्चों की जिंदगी से खिलवाड़ किया जा रहा है। इस मामले में शासन ने चिंता जाहिर करते हुये वाल विवाह रोकने के लिये कार्यवाही करने का फैसला किया है। इसका मीडिया व अन्य माध्यमों से प्रचार किया जाये ताकि लोगो में जागरुकता आ सके। आगामी 16 अकटूबर सोमवार को सभी परिषदीय विदयालयों से लेकर उच्च शिक्षण संस्थाओं में प्रतिज्ञा प्रारुप पर शपथ लिया जायेगा। महिला एवं बाल विकास में वन स्टाप सेंटर में जागरुकता कार्यक्रम संचालित किया जायेगा। सभी ग्राम पंचायतों में शपथ ग्रहण कार्यक्रम आयोजित किया जायेगा। शासन के संयुक्त सचिव महाबीर प्रसाद गौतम ने महिला कल्यण,स्कूल शिक्षा, बाल विकास एवं पुष्टाहार पंचायती राज, नगर विकास,एनआलएलएम विभाग के संबंधित अधिकारियों को इस मामले की जानकारी के लिये पत्र लिखा है।

पायनियर
नई दिल्ली, सोमवार,16 अक्टूबर, 2023

हमास हमला में मारी गई भारतीय मूल की दो इजराइली महिला सुरक्षा अधिकारी

भाषा। यरुशलम

हमास द्वारा सात अक्टूबर को इजराइल के दक्षिणी इलाके में किए गए भयावह हमले में भारतीय मूल की कम से कम दो इजराइली महिला सुरक्षा अधिकारी मारी गई हैं। आधिकारिक सूत्रों और समुदाय के लोगों ने रविवार को इसकी पुष्टि की। आधिकारिक सूत्रों ने पुष्टि की कि सात अक्टूबर को हमास की ओर से किए गए हमले में अशदोद के होम फ्रंट कमान की कमांडर 22 वर्षीय लेफ्टिनेंट ऑर मोसेस तथा पुलिस के सेंट्रल डिस्ट्रिक्ट की सीमा पुलिस अधिकारी निरीक्षक किम डोकरकर मारी गई हैं। ऐसा कहा जा रहा है कि इन दोनों महिला अधिकारियों की मौत संघर्ष के दौरान लड़ते हुए हुई है। सेना के अधिकारियों के मुताबिक, युद्ध में अब तक सेना के 286 जवान और 51 पुलिस अधिकारी मारे गए हैं। समुदाय के कई सदस्यों ने पीटीआई–भाषा को बताया कि और भी पीड़ित हो सकते हैं, क्योंकि इजराइल मृतकों की पहचान की पुष्टि कर रहा है और लापता या संभवत: अपहृत लोगों की तलाश कर रहा है। समुदाय की 24 वर्षीय महिला शहाफ टॉकर अपने दोस्त के साथ बच हमले में बाल–बाल गई थी। उन्होंने अपने दादा के माध्यम से पीटीआई–भाषा को अपनी आपबीती बताई। शहाफ के दादा याकोव 1963 में 11 साल की उम्र में मुंबई से जाकर इजराइल में बस गए थे। उन्होंने बताया कि उनकी पोती अब भी सदमे में है और मानसिक पीड़ा के कारण बोलने में असमर्थ है, इसलिए उसने सोचा कि लिखित में बताने से उसका तनाव कुछ कम हो जाएगा। याकोव उत्तरी इजराइल के पेताह टिकवा में रहते हैं। उन्होंने बताया, आज तड़के शहाफ अपने कुछ दोस्तों के अंतिम संस्कार में शामिल हुई, जो रेव म्यूजिक पार्टी में हुए नरसंहार में मारे गए थे। पार्टी में हमास के हमले में 270 युवा मारे गए थे। शहाफ ने बताया कि वह अपने मित्र यानिर के साथ पार्टी में थी तभी उसने रॉकेटों को अपने सिर के ऊपर से जाते देखा।

नेपाल के एक छात्र को हमास ने बंधक बनाया : सउद

काठमांडू। इजराइल के एक फार्म पर हमास के हमले के बाद लापता हुए एक नेपाली छात्र को इस फलस्तीनी चरमपंथी समूह द्वारा बंधक बना लिया गया है और अंतरराष्ट्रीय संगठनो की मदद से उसे ढूंढने के प्रयास जारी है। नेपाल सरकार ने रविवार को यह जानकारी दी।हमास ने पिछले शनिवार को दक्षिणी इजराइल मे ताबड़तोड़ हवाई हमले किए थे, जिसमे 10 नेपाली छात्रो की मौत हो गई थी। छह छात्रो को सुरक्षित निकाल लिया गया था, जबकिएकछात्र लापता है। ए 17 नेपाली छात्र लर्न एंड अर्न योजना के अंतर्गत फार्म मे प्रशिक्षु के रूप मे कार्य कर रहे थे।

इजराइल पर हमास के हमले के बाद पश्चिम एशिया में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने के चीन के प्रयासों को लगा झटका

वाशिंगटन। चीन के राष्ट्रपति शी चिनफिंग ने जून में बीजिंग में फलस्तीन के राष्ट्रपति से मुलाकात की थी और इजराइली प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू को चीन की आधिकारिक यात्रा के लिए आमंत्रित किया था। नेतन्याहू ने निमंत्रण स्वीकार कर लिया था और चीन पश्चिम एशिया में एक बड़ी भूमिका निभाने की राह पर था। हालांकि सात अक्टूबर को हमास ने इजराइल पर हमला कर दिया, जिससे चीन की कोशिशों को झटका लगा है। इजराइल पर हमास के हमले के बाद नेतन्याहू की इस महीने के अंत में होने वाली चीन यात्रा को लेकर अनिश्चितता पैदा हो गई है। विशेषज्ञों का कहना है कि इजराइल–हमास युद्ध को लेकर चीन की तटस्थता से इजराइल निराश है, लेकिन अरब देशों के साथ करीबी संबंध बनाकर चीन को लंबे समय में फायदा हो सकता है। चीन में स्थित रेनमिन यूनिवर्सिटी ऑफ चाइना में अंतरराष्ट्रीय संबंधों के प्रोफेसर शी यिनहोंग ने कहा, युद्ध के चलते कुछ समय के लिए ही सही, चीन की पश्चिम एशिया योजना खटाई में पड़ गई है। इजराइल का पक्का समर्थक अमेरिका प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से शामिल है। चीन की सुनने वाला कौन है? पश्चिम एशिया में चीन के दूत झाई जून ने पिछले सप्ताह फलस्तीन और मिस्र के अधिकारियों से फोन पर बात कर तत्काल संघर्ष विराम तथा फलस्तीनी लोगों के लिए मानवीय समर्थन का आह्वान किया था झाई ने इजराइली अधिकारियों को यह भी कहा कि चीन का फलस्तीनी मुद्दे पर कोई स्वार्थ नहीं है, लेकिन वह हमेशा शांति, निष्पक्षता और न्याय के पक्ष में खड़ा रहा है। उन्होंने कहा,चीन शांति को बढ़ावा देने और बातचीत को प्रोत्साहित करने के लिए अंतरराष्ट्रीय समुदाय के साथ काम करने को इच्छुक है। चीनी विदेश मंत्री वांग ई ने अधिक दृढ़ता से फलस्तीन का समर्थन करते हुए कहा कि मामले की जड़ यह है कि फलस्तीनी लोगों के साथ न्याय नहीं किया गया है। इस संघर्ष ने एक बार फिर साबित कर दिया कि फलस्तीन मुद्दे को हल करने का रास्ता जल्द से जल्द वास्तविक शांति वार्ता फिर से शुरू करने और फलस्तीनी राष्ट्र के वैध अधिकारों को साकार करने में निहित है।

क्विक न्यूज

बाइडन ने गाजा में बढ़ते तनाव के बीच इजराइल के प्रधानमंत्री नेतन्याहू, फलस्तीन के राष्ट्रपति अब्बास से बात की

वाशिंगटन। अमेरिका के राष्ट्रपति जो बाइडन ने फलस्तीन के आतंकवादी संगठन हमास की ओर से इजराइल पर हमला किए जाने के बाद जारी युद्ध के बीच इजराइल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू और फलस्तीनी प्राधिकरण के राष्ट्रपति महमूद अब्बास से बात की। अमेरिका ने यूएसएस ड्वाइट डी आइजनहोवर कैरियर स्ट्राइक ग्रुप (सीएसजी) को पूर्वी भूमध्य सागर की ओर भेजना भी शुरू कर दिया है। व्हाइट हाउस के मुताबिक, बाइडन ने अब्बास के साथ बातचीत में इजराइल पर हमास के क्रूर हमलों की निंदा की और कहा कि आतंकवादी समूह फलस्तीन के लोगों के सम्मान और आत्मनिर्णय के अधिकार के लिए खड़ा नहीं है। व्हाइट हाउस ने बताया कि बाइडन ने नेतन्याहू के साथ बातचीत में उन्हें अमेरिकी सैन्य सहयोग के बारे में अद्यतन जानकारी दी। उन्होंने संघर्ष को बढ़ावा देने की मंशा रखने वालों को भी चेतावनी दी। इसमें कहा गया कि बाइडन ने पानी, भोजन और चिकित्सा देखभाल तक निर्दोष नागरिकों की पहुंच सुनिश्चित करने के लिए संयुक्त राष्ट्र, मिस्र, जॉर्डन, इजराइल और क्षेत्र के अन्य सहयोगियों के साथ अमेरिका के समन्वय पर नेतन्याहू के साथ चर्चा की। बाइडन ने अब्बास से बात की और इजराइल पर हमास के हमलों की निंदा की। व्हाइट हाउस ने कहा, अब्बास ने बाइडन को क्षेत्र में अपनी भागीदारी और फलस्तीनी लोगों, विशेषकर गाजा में तत्काल आवश्यक मानवीय सहायता पहुंचाने के अपने प्रयासों के बारे में जानकारी दी। बाइडन ने अब्बास और फलस्तीनी प्राधिकरण को इन प्रयासों में अपना पूरा समर्थन देने की बात कही। गाजा में अपने सैनिकों को भेजने की इजराइल की संभावित योजना के बीच अमेरिका ने दुनिया भर के देशों से बातचीत तेज कर दी है। अमेरिकी विदेश मंत्री एंटनी ब्लिंकन ने शनिवार को अपने चीनी समकक्ष वांग ई से बात की थी।

हमास के हमले में घायल इजराइलियों का जान की परवाह किए बिना इलाज करता रहा अरब पैरामेडिकल कर्मी

यरुशलम। हमास ने सात अक्टूबर को दक्षिणी इजराइल में आयोजित एक संगीत समारोह में शामिल हजारो यहूदियो पर जब हमला किया तब अरब मूल के एक इजराइली पैरामेडिकल कर्मी ने अपनी जान की परवाह किए बिना लोगो का इलाज करना जारी रखा। हालांकि बाद में वह भी हमास की गोलियो से मारा गया। अवद दरावशे (23) अविवाहित, सुन्दर नौजवान था लेकिन वह ट्राइब ऑफ़ नोवा उत्सव मे नृत्य करने के लिए नही आया था। वह योसी एम्बुलेंस के लिए काम करता था और आयोजन स्थल के पास एक तंबू मे उत्सव मे काम करने के लिए नियुक्त पैरामेडिकल कर्मियों की टीम में से एक था।दरावशे तब मारा गया जब हमास के आतंकवादी गाजा पट्टी से इजराइल मे चुपके से घुस गए और जश्न मे शामिल लोगो और आसपास के गांवों, बस्तियों और किबुतजिम मे लोगो को निशाना बनाया।सात अक्टूबर को तड़के रॉकेट से इजराइल के इलाको को निशाना बनाया गया। साथ ही हर तरफ हथगोले फटने और गोलियो की तड़तड़ाहट की आवाजे आने लगी। घायल लोग पैरामेडिकल कर्मियो के पास पहुंचे लेकिन जल्द ही अफरा तफरी बढ़ गई। यह पता चलने के बाद कि यह हमला हमास द्वारा किया गया है, पैरामेडिकल स्टेशन के प्रमुख ने वहां तैनात पैरामेडिकल कर्मियो से वहां से निकल जाने को कहा। हालांकि दरावशे ने वहां से जाने से इनकार कर दिया। उसकी उस समय गोली लगने से मौत हो गई जब वह एक घायल की मरहम पट्टी कर रहा था। कुछ दिनों बाद, उसके शव की पहचान होने के बाद, जीवित बचे पैरामेडिकल कर्मियों ने दरावशे के परिवार को बताया कि उसने रुकने का विकल्प क्यों चुना। पैरामेडिकल कर्मियो ने बताया कि दरावशे को लगा कि एक अरब होने के चलते वह हमलावरों के साथ किसी तरह मध्यस्थता कर सकता है।दरावशे के के चचेरे भाई मोहम्मद दरावशे ने उत्तरी इजराइल स्थित अपने घर से फोन पर कहा, उसने (अवद दरावशे) ने कहा कि नही, मै नही जा रहा हूं। मै अरबी बोलता हूं, मुझे लगता है कि मै चीजो को संभाल सकता हूं।

पाकिस्तान के उत्तर पश्चिमी हिस्से में सुरक्षाबलों के साथ मुठभेड़ में छह आतंकवादी मारे गए

पेशावर। पाकिस्तान के उत्तर-पश्चिमी हिस्से मे रातभर चले छापे के दौरान सुरक्षाबलो ने मुठभेड़ मे छह आतंकवादियो को मार गिराया जबकि आठ अन्य को घायल कर दिया। सेना ने रविवार को यह जानकारी दी। सेना ने बताया कि खुफिया सूचना के आधार पर उत्तरी वजीरिस्तान जिले के मीर अली इलाके मे सुरक्षाबलो ने अभियान चलाया जिस दौरान आतंकवादियो के साथ उनकी मुठभेड़ हुई। उसने बताया कि इस मुठभेड़ मे एक सैनिक भी मारा गया तथा आतंकवादियो के ठिकानो से हथियार एवं गोलाबारूद बरामद किए गए। उत्तरी वजीरिस्तान आतंकवादियो के लिए दशको से हाल तक पनाहगाह था। पेशावर मे सेना द्वारा संचालित एक विद्यालय पर आतंकी हमले मे 150 से अधिक लोग मारे गए थे जिनमे ज्यादातर बच्चे थे। उसी के बाद सेना ने इस क्षेत्र मे बड़ा अभियान चलाया था। सालभर चले अभियान के बाद सेना ने घोषणा की थी कि उसने इस क्षेत्र से स्थानीय एवं विदेशी आतंकवादियो को खदेड़ दिया है। लेकिन बीच -बीच मे हमले होते रहे जिससे यह चिंता पैदा हुई कि तहरीक ए-तालिबान पाकिस्तान नाम से चर्चित स्थानीय तालिबानो ने अफगानिस्तान मे शरण ले ली और वे फिर उस क्षेत्र मे एकजुट हो रहे है। पाकिस्तानी तालिबान अलग समूह है लेकिन वह अफगान तालिबान का ही सहयोगी है जिसने 2021 मे अफगानिस्तान मे सत्ता कब्जा कर लिया था।

ब्रिटेन के प्रधानमंत्री सुनक ने हमास के भयावह और बर्बर हमलों की निंदा की

लंदन। ब्रिटेन के प्रधानमंत्री ऋषि सुनक ने इजराइल पर फलस्तीन के आतंकवादी संगठन हमास के भयावह और बर्बर हमलो की निंदा की और सुरक्षा बहाल करने के लिए इजराइल का सतत सहयोग करने का संकल्प किया। इजराइल और हमास के बीच युद्ध का एक सप्ताह बीत चुका है। प्रधानमंत्री कार्यालय 10 डाउनिंग स्ट्रीट और सोशल मीडिया पर शनिवार को जारी एक बयान मे सुनक ने देश मे यहूदी समुदाय के प्रति अपनी प्रतिबद्धता दोहराई और कहा कि सभी सुरक्षात्मक उपाय किए जाएंगे। सुनक की ओर से यह बयान उस वक्त आया है जब फलस्तीन समर्थक हजारो प्रदर्शनकारियो ने इजराइल विरोधी नारे लगाते हुए लंदन की सड़को पर मार्च किया। इस संबंध मे 15 लोगो को गिरफ्तार किया गया। बयान मे कहा गया, इजराइल मे एक सप्ताह पहले जो क्रूरता और बर्बरता की गई उसे बयां करने के लिए शब्द नही है। बेटियां, बेटे ,माताएं, पिता,पति,पत्नी आदि लोगो को बेरहमी से अलग किया गया। उन्होंने कहा, मै जानता हूं कि आने वाले दिन और सप्ताह बहुत कठिन होने वाले है। इजराइल के लोगो से मै कहना चाहता हूं कि ब्रिटेन आपके साथ है। जो कुछ हुआ वह पूरी तरह से क्रूर कृत्य था और इजराइल को अपनी रक्षा करने का पूरा अधिकार है। हम इजराइल को सुरक्षा बहाल करने मे सहयोग देने का हर संभव प्रयास करेंगे।

ईरान के जाने-माने फिल्म निर्देशक और उनकी पत्नी की चाकू घोंपकर हत्या : सरकारी मीडिया

तेहरान। एक अज्ञात हमलावर ने ईरान के जाने-माने फिल्म निर्देशक दारियुश मेहरजुई के घर मे घुसकर उनकी और उनकी पत्नी की कथित रूप से चाकू घोंपकर हत्या कर दी। सरकारी मीडिया ने रविवार को यह जानकारी दी। सरकारी समाचार एजेंसी इस्लामिक रिपब्लिक न्यूज एजेंसी (आईआरएनए) ने न्यायिक अधिकारी हुसैन फैजेली के हवाले से बताया कि दारियुश मेहरजुई और उनकी पत्नी वाहिदेह मोहम्मदिफर अपने घर पर मृत पाए गए है तथा दोनो की गर्दन पर चाकू से हमला किए जाने के निशान हैं। फैजेली के मुताबिक, निर्देशक की बेटी मोना मेहरजुई शनिवार रात राजधानी तेहरान से 30 किलोमीटर पश्चिम में स्थित अपने पिता के घर गई थी, जहां उन्हे दारियुश मेहरजुई और उनकी पत्नी के शव मिले। अधिकारियो ने बताया कि प्राधिकारी मामले की जांच कर रहे है। उन्होने यह नही बताया कि हमले के पीछे का मकसद क्या है, लेकिन वाहिदेह ने कुछ सप्ताह पहले सोशल मीडिया पर शिकायत की थी कि उन्हें चाकू से हमला किए जाने की धमकी मिली है। दारियुश मेहरजुई (83) को 1970 के दशक की शुरुआत मे ईरानी फिल्म की न्यू वेव मुहिम के सह-संस्थापक के रूप मे जाना जाता था, जो मुख्य रूप से यथार्थवाद पर केंद्रित थी। दारियुश मेहरजुई को 1998 मे शिकागो इंटरनेशनल फिल्म फेस्टिवल मे सिल्वर ह्यूगो और 1993 मे सैन सेबेस्टियन इंटरनेशनल फिल्म फेस्टिवल मे गोल्डन सीशेल पुरस्कार समेत कई पुरस्कारो से नवाजा गया था। उन्होंने 1960 के दशक की शुरुआत मे लॉस एंजिलिस स्थित कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय से सिनेमा की पढ़ाई थी।

नवाज की पार्टी पीएमएल-एन को 21 अक्टूबर को रैली करने की अनुमति मिली

लाहौर। लाहौर जिला प्रशासन ने पाकिस्तान मुस्लिम लीग-नवाज (पीएमएल-एन) पार्टी को 21 अक्टूबर को लाहौर के मीनार-ए-पाकिस्तान में एक रैली करने की अनुमति दे दी है, जहां पूर्व प्रधानमंत्री नवाज शरीफ लंदन से चार साल बाद स्वदेश लौटने पर अपने समर्थकों को संबोधित करेंगे। नवाज (73) तीन बार पाकिस्तान के प्रधानमंत्री रह चुके है और ब्रिटेन मे अपने स्वनिर्वासन से लौटेंगे। अगले वर्ष जनवरी में होने वाले आम चुनावो मे उनके पीएमएल-एन का नेतृत्व करने की संभावना है।डॉन समाचार पत्र ने रविवार को बताया कि लाहौर के जिला प्रशासन ने पीएमएल-एन को रैली करने की अनुमति दे दी है।

अजरबैजान के राष्ट्रपति ने काराबाख की राजधानी में फहराया झंडा

बाकू। अजरबैजान के राष्ट्रपति इल्हाम अलीएव ने काराबाख की राजधानी में अपने देश का झंडा फहराया।राष्ट्रपति कार्यालय ने रविवार को बताया कि विवादित क्षेत्र में बाकू के नियंत्रण की पुष्टि करने वाले समारोह मे अजरबैजान के नेता ने भाषण दिया और राष्ट्रध्वज फहराया। अजरबैजान उसे खानकेंडी कहता है जबकि अर्मेनियाई उसे स्टेपानाकर्ट कहते है।काराबाक को पहले नागोर्नो-काराबाख नाम से जाना जाता था और आर्मेनियाई उसे अर्तसख के नाम से पुकारते थे। इस क्षेत्र को अजरबैजानी क्षेत्र के रूप मे अंतरराष्ट्रीय रूप से मान्यता दी गई लेकिन छह सालो के संघर्ष के बाद 1994 मे जातीय आर्मेनियाई बलो के नियंत्रण मे वह पृथक राज्य बन गया।बाद मे 2020 मे लड़ाई से उसका काफी हिस्सा अजरबैजान के नियंत्रण मे आ गया।

श्रीलंका के जलक्षेत्र में मछली पकड़ने के आरोप में 27 भारतीय मछुआरे गिरफ्तार

कोलंबो। श्रीलंका के जलक्षेत्र मे मछली पकड़ने के आरोप मे 27 भारतीय मछुआरों को गिरफ्तार किया गया है। श्रीलंकाई नौसेना ने रविवार को यह जानकारी दी। नौसेना ने कहा कि मछुआरो को शनिवार को मन्नार तट और डेल्फ्ट एवं कच्चातिवु द्वीपो के पास गिरफ्तार किया गया। अधिकारियो ने कहा कि श्रीलंकाई नौसेना ने मन्नार तट के पास श्रीलंका के जलक्षेत्र में दो नौकाएं पकड़ी, जिनपर 15 भारतीय मछुआरे सवार थे। वही, तीन भारतीय नौकाएं डेल्फ्ट और कच्चातिवु द्वीपो के पास पकड़ी गईं, जिनपर 12 मछुआरे सवार थे। उन्होने बताया कि गिरफ्तार मछुआरो को आगे की कानूनी कार्वाई के लिए अधिकारियो को सौंप दिया गया है। इससे पहले, सितंबर मे 17 भारतीय मछुआरो को जाफना के काकरथिवु द्वीप के तट से गिरफ्तार किया गया था।

मशहूर अभिनेत्री पाइपर लॉरी का 91 वर्ष की उम्र में निधन

वाशिंगटन। मशहूर अभिनेत्री पाइपर लॉरी का लॉस एंजिलिस मे उनके आवास पर शनिवार तड़के निधन हो गया। वह 91 वर्ष की थी।लॉरी एक मजबूत इच्छाशक्ति वाली अभिनेत्री थी, जिन्हे उनके दमदार अभिनय के लिए तीन बार ऑस्कर के लिए भी नामांकित किया गया था।लॉरी की प्रबंधक ने ईमेल के माध्यम से द एसोसिएटेड प्रेस को बताया कि उनका (लॉरी) निधन बढ़ती उम्र संबंधी समस्या की वजह से हुआ। उन्होने कहा कि लॉरी प्रतिभाशाली अभिनेत्री होने के साथ ही एक अच्छी इंसान भी थी।लॉरी ने 1949 मे रोसेटा जैकब्स के रूप मे हॉलीवुड मे कदम रखा था और उन्हे जल्द ही यूनिवर्सल इंटरनेशनल के साथ काम करने का मौका मिल गया। उन्होने रोनाल्ड रीगन, रॉक हडसन और टोनी कर्टिस के साथ फिल्म मे अहम भूमिकाएं निभाईं थी।लॉरी को तीन शानदार फिल्मो के कारण ऑस्कर अवॉर्ड के लिए नामांकित किया गया था।

गाजाः संरा आश्रय स्थलों में पानी खत्म, हमले की आशंका से मरीजों की सुरक्षा को लेकर चिंतित चिकित्सक

भाषा। (गाजा सिटी)

समूचे गाजा में संयुक्त राष्ट्र के आश्रय स्थलों में पानी खत्म हो गया है, क्योंकि हजारों लोग इजराइल के हमले से बचने के लिए क्षेत्र के सबसे बड़े अस्पताल के प्रांगण में शरण लिए हुए हैं और चिकित्सक मरीजों की देखभाल में संघर्ष कर रहे हैं, क्योंकि उन्हें डर है कि जेनरेटर में ईंधन खत्म होने के बाद मरीजों की जान खतरे में पड़ जाएगी। सात अक्टूबर को चरमपंथी हमास द्वारा इजराइल पर किए गए हमले के जवाब में अभूतपूर्व इजराइली अभियान के परिणामस्वरूप फलस्तीनी नागरिक रविवार को अस्तित्व के लिए संघर्ष करते दिखे। हमास के हमले में ।,300 इजराइली मारे गए थे, जिनमें से अधिकांश आम नागरिक थे। इजराइल ने गाजा में भोजन, दवा, पानी और बिजली की आपूर्ति बाधित कर दी है और आसपास हवाई हमले किए हैं तथा उत्तरी गाजा के अनुमानित 10 लाख निवासियों को अपने पूर्वनियोजित हमले से पहले दक्षिणी इलाके की ओर पलायन करने की सलाह दी है। गाजा के स्वास्थ्य मंत्रालय ने कहा कि पिछले सप्ताहांत शुरू हुई लड़ाई के बाद से 2,300 से अधिक फलस्तीनी मारे गए हैं। अमेरिका के राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार जेक सुलिवन ने रविवार को सीएनएन से कहा कि इजराइली अधिकारियों ने उन्हें बताया है कि उन्होंने दक्षिणी गाजा में पानी की आपूर्ति बहाल कर दी है। लेकिन इजराइली ऊर्जा एवं जल मंत्रालय के प्रवक्ता आदिर दहान ने कहा कि इजराइल दक्षिण गाजा में मात्र एक स्थान पर पानी की आपूर्ति कर रहा है।

कृपया गाजा को बचा लें, मैं आपसे विनती करती हूं : संयुक्त राष्ट्र एजेंसी की कर्मचारी

संयुक्त राष्ट्र। गाजा पट्टी मे इजराइल की बमबारी के बीच फलस्तीनी शरणार्थियो के लिए संयुक्त राष्ट्र की एजेंसी के लिए काम करने वाले कर्मचारियों ने रविवार को कहा कि वहां पर हालात बेहद खराब है। उन्होने बच्चो, गर्भवती महिलाओ तथा बुजुर्गो के लिए खाद्यान्न, पानी और दवाओ की तत्काल आपूर्ति करने की अपील की। यूएन रिलीफ एंड वर्क्स एजेंसी फॉर पेलेस्टाइन रिफ्यूजीस इन नियर ईस्ट (यूएनआरडब्ल्यूए) ने गाजा मे फलस्तीनी शरणार्थियो के समर्थन मे आपात अपील जारी कर कहा कि गाजा पट्टी मे हिंसा मे भारी वृद्धि का खामियाजा लाखो फलस्तीनी शरणार्थी भुगत रहे है। गाजा के खान युनिस मे यूएनआरडब्ल्यूए आश्रय गृह की प्रमुख राविया हलास ने एक वीडियो मे कहा, कृपया गाजा को बचा लें। मै आपसे विनती करती हूं, गाजा को बचाएं। यह मर रहा है। यूएनआरडब्ल्यूए ने रविवार को सोशल मीडिया मंच एक्स पर यह वीडियो साझा किया है। चरमपंथी समूह हमास ने पिछले शनिवार को इजराइल पर हमला कर दिया था और इसके बाद जवाबी कार्वाई करते हुए इजराइल ने गाजा पर हवाई हमले शुरू कर दिए। इजराइली सेना ने उत्तरी गाजा मे रह रहे 11 लाख फलस्तीनियो को दक्षिणी हिस्से मे जाने को कहा है और हजारो परिवार गाड़ियो से जा रहे है या पैदल ही जा रहे है। हलास ने कहा, ऐसे बच्चे, बुजुर्ग और वयस्क है जिनकी मै मदद नही कर सकती हूं। मै आश्रय गृह की प्रमुख हूं और मै उन्हें कुछ भी नही दे सकती हूं, न भोजन और न ही पानी।

फलस्तीन में मृतक संख्या 2,300 के पार पहुंची

दीर अल बलाह (गाजा पट्टी)। हमास और इजराइल के बीच जारी मौजूदा संघर्ष में 2,329 फलस्तीनियो की मौत हो चुकी है और यह पांच गाजा युद्धो मे से फलस्तीनियो के लिए सबसे घातक युद्ध बन गया है। गाजा के स्वास्थ्य मंत्रालय ने यह जानकारी दी। संयुक्त राष्ट्र के आंकड़ो के अनुसार, इजराइल और हमास के बीच 2014 मे हुए युद्ध मे 2,251 फलस्तीनियो की मौत हुई थी, जिनमे से।,462 आम नागरिक थे। मौजूदा युद्ध मे मृतक संख्या रविवार को 2014 मे हुए युद्ध की मृतक संख्या को पार कर गई। वर्ष 2014 मे हुआ युद्ध छह सप्ताह चला था और इसमे इजराइली पक्ष के 74 लोगो की मौत हो गई थी, जिनमें छह आम नागरिक शामिल थे।

यूक्रेन में रूसी हमले में छह लोगों की मौत

कीव। यूक्रेन में पिछले 24 घंटे में रूस के हमले में छह लोगों की मौत हो गई। स्थानीय अधिकारियों ने रविवार को यह जानकारी दी।खेरसान के गवर्नर ओलेकसांद्र प्रोकुडिन ने सोशल मीडिया पर बताया कि सप्ताहांत में इस क्षेत्र में 100 से अधिक गोले दागे गए जिससे दो लोगों की मौत हो गई जबकि तीन अन्य घायल हो गए।खेरसान शहर के सैन्य प्रशासन के प्रमुख रोमन मरोचको ने बताया कि खेरसान में बाद में दो निर्देशित बमों के जरिए एक अहम बुनियादी ढांचे को निशाना बनाया गया जिससे क्षेत्र में बिजली गुल हो गई तथा जलापूर्ति बाधित हो गया। स्थानीय अधिकारियों ने बताया कि डोनेत्स्क क्षेत्र में और दो लोगों की जान चली गई जबकि खारकीव क्षेत्र में 57 वर्षीय एक व्यक्ति तथा 54 वर्षीय एक महिला की मौत हो गई। खारकीव में इन दोनों का मकान हवाई हमले की चपेट में आया था।इस बीच, रूसी रक्षा मंत्रालय ने रविवार को घोषणा की कि यूक्रेन ने रातभर में पश्चिम रूस में 27 ड्रोन दागे। अधिकारियों ने बताया कि इनमें से 18 ड्रोन को कुर्स्क क्षेत्र में मार गिराया गया।

अरब देशों की यात्रा के बाद दोबारा इजराइल जाएंगे अमेरिकी विदेश मंत्री ब्लिंकन

भाषा। काहिरा

अमेरिकी विदेश मंत्री एंटनी ब्लिंकन इजराइल–हमास युद्ध के एक व्यापक क्षेत्रीय संघर्ष में तब्दील होने से रोकने के उद्देश्य से छह अरब देशों की यात्रा पूरी करने के बाद इस सप्ताह दोबारा इजराइल जाएंगे। अमेरिकी विदेश विभाग ने ब्लिंकन की सोमवार को इजराइल यात्रा की योजना की घोषणा की, पिछले पांच दिनों में यह उनकी दूसरी यात्रा होगी। ब्लिंकन मिस्र के राष्ट्रपति अब्देल फतह अल–सीसी के साथ वार्ता के लिए रविवार को काहिरा पहुंचे।गाजा में इजराइल के आसन्न जमीनी हमले के विनाशकारी मानवीय परिणाम उत्पन्न करने वाले एक व्यापक युद्ध छिड़ने की बढ़ती आशंकाओं के बीच अरब नेताओं के साथ ब्लिंकन की बैठकों में यह आखिरी बैठक है। अमेरिकी विदेश विभाग के प्रवक्ता मैथ्यू मिलर ने ब्लिंकन के साथ यात्रा कर रहे संवाददाताओं से कहा कि अमेरिकी विदेश मंत्री ब्लिंकन इजराइली अधिकारियों के साथ आगे के परामर्श के लिऐ तेल अवीव जा रहे हैं। मिलर ने इस बारे में कुछ भी विस्तार से नहीं बताया। मिस्र आने से पहले, ब्लिंकन ने रविवार सुबह रियाद में सऊदी अरब के शहजादे मोहम्मद बिन सलमान से मुलाकात की। यह बैठक पिछले तीन दिनों के दौरान संयुक्त अरब अमीरात, बहरीन, कतर, जॉर्डन और फलस्तीन के नेताओं के साथ बातचीत के बाद हुई।ब्लिंकन ने अपनी यात्रा की शुरुआत बृहस्पतिवार को इजराइल से की थी। उन्होंने इजराइल के लिए समर्थन और एकजुटता की प्रतिबद्धता जताई जो पिछले सप्ताह हमास के औचक हमलों के खिलाफ जवाबी कार्वाई कर रहा है। अमेरिकी विदेश मंत्री ने दूसरों को इसमें शामिल किया।

पश्चिमी अफगानिस्तान में एक हफ्ते बाद फिर आया भूकंप, 6.3 मापी गई तीव्रता

इस्लामाबाद। पश्चिमी अफगानिस्तान में रविवार को 6.3 तीव्रता का भूकंप आया। इससे करीब एक सप्ताह पहले देश के इसी क्षेत्र में आए भूकंप और इसके बाद के झटकों में हजारों लोगों की मौत हो गई थी तथा क्षेत्र में तमाम गांव तबाह हो गए थे। अमेरिकी भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण (यूएसजीएस) ने बताया कि रविवार को आए भूकंप का केंद्र प्रांतीय राजधानी हेरात से लगभग 34 किलोमीटर दूर और सतह से आठ किलोमीटर की गहराई में था। सेव द चिल्ड्रेन ने कहा कि चार लोगों की मौत हो गई है और हेरात क्षेत्रीय अस्पताल में 153 घायल लोगों को लाया गया है।सहायता समूह के अनुसार, रबात सांगी जिले के बलूच इलाके में सारे मकान ध्वस्त हो गए और कई गांव तबाह हो गए। प्राधिकारियों ने हताहतों की संख्या कम बताई है।हेरात शहर के एक निवासी सैयद काजिम रफीकी (42) ने कहा कि उन्होंने ऐसी तबाही पहले कभी नहीं देखी थी क्योंकि अधिकांश मकान क्षतिग्रस्त हो गए हैं और लोग भयभीत हैं। रफीकी और अन्य लोग रक्त दान करने अस्पताल गए। उन्होंने कहा, हमें हर संभव तरीके से मदद करनी होगी। हेरात में सात अक्टूबर को आए भूकंप के कारण इलाके में तमाम गांव तबाह हो गए थे। यह देश के हालिया इतिहास में आए सबसे विनाशकारी भूकंप में से एक था। संयुक्त राष्ट्र के अधिकारियों ने बृहस्पतिवार को बताया था कि इस भूकंप में मारे गए लोगों में 90 फीसदी से अधिक महिलाएं और बच्चे थे। तालिबान अधिकारियों ने कहा था कि पहले आए भूकंप में हेरात प्रांत में दो हजार से अधिक लोगों की मौत हुई। भूकंप का केंद्र जेंदा जान जिले में था। शुरुआत में आए भूकंप, इसके बाद के झटकों और इसके बाद बुधवार को फिर से आए 6.3 तीव्रता वाले भूकंप के कारण

जयशंकर ने वियतनाम में रवींद्रनाथ टैगोर की आवक्ष प्रतिमा का अनावरण किया

भाषा। हनोई

विदेश मंत्री एस जयशंकर ने नोबेल पुरस्कार से सम्मानित लेखक–कवि रवींद्रनाथ टैगोर की आवक्ष प्रतिमा का बाक निन्ह शहर में अनावरण करते हुए रविवार को कहा कि भारत और वियतनाम के बीच गहरे ऐतिहासिक संबंध लगभग 2,000 साल पुराने हैं, जो बौद्ध धर्म की विरासत से जुड़े हैं। जयशंकर ने टैगोर की प्रतिमा स्थापित करने में मदद करने के लिए हनोई के पूर्व में स्थित बाक निन्ह प्रांत के नेतृत्व के प्रति आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा, भारत और वियतनाम के ऐतिहासिक संबंध करीब दो हजार साल पुराने हैं, जो बौद्ध धर्म की विरासत से जुड़े हैं। बाक निन्ह प्रांत भी इसी प्राचीन परंपरा का हिस्सा है। ऐतिहासिक अभिलेख इस बात की पुष्टि करते हैं कि भारतीय बौद्ध भिक्षुओं ने वियतनाम में बौद्ध धर्म की शुरुआत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने उद्घाटन समारोह में कहा, आज एक असाधारण भारतीय व्यक्तित्व गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर के सम्मान में एक और उल्लेखनीय स्मारक की स्थापना की गई है। टैगोर एक प्रसिद्ध चित्रकार, शिक्षक, मानवतावादी, संगीतकार और एक बहुत ही गहन विचारक थे। जयशंकर ने कहा कि उन्हें यह जानकर खुशी हुई कि टैगोर के कार्यों को पूरे वियतनाम में व्यापक रूप से पहचाना, पढ़ा और सराहा जाता है तथा उन्हें वियतनामी पाठ्यपुस्तकों में शामिल किया गया है। विदेश मंत्री चार दिन की आधिकारिक यात्रा पर वियतनाम आए हैं।उन्होंने कहा, यह जानकर वाकई खुशी हुई कि टैगोर की गीतांजलि का वियतनामी में अनुवाद किया गया और इसे 2001 में प्रकाशित किया गया। ऐतिहासिक रिकॉर्ड बताते हैं कि टैगोर ने 1929 में हो ची मिन्ह सिटी की तीन दिवसीय यात्रा की थी, जिसका वियतनाम पर एक स्थाई बौद्धिक और सामाजिक–सांस्कृतिक प्रभाव पड़ा। कविता संग्रह गीतांजलि टैगोर की सबसे प्रसिद्ध कृति है, जो 1910 में भारत में प्रकाशित हुई थी। टैगोर को इसके अंग्रेजी अनुवाद सॉन्ग ऑफरिंग्स के लिए साहित्य के नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया था और वह 1913 में यह सम्मान पाने वाले पहले गैर–यूरोपीय बने थे।

पोप फ्रांसिस ने एक बार फिर इजराइली बंधकों को रिहा करने की अपील की

रोम। पोप फ्रांसिस ने रविवार को एक बार फिर गाजा में हमास के आतंकवादियों द्वारा बंधक बनाए गए इजराइली नागरिकों को रिहा करने की अपील की। साथ ही उन्होंने गाजा में संकट में घिरे लोगों की मदद करने का भी अनुरोध किया। उन्होंने रविवार के सेंट पीटर्स स्क्वायर में रविवारीय प्रार्थना के दौरान कहा, इजराइल और फलस्तीन में जो कुछ हो रहा है, मैं उसके बारे में जानकारी ले रहा हूं। मैं अनेक लोगों विशेषकर छोटे बच्चों और बुजुर्गों के बारे में सोच रहा हूं। पोप ने पिछले सप्ताह दक्षिण इजराइल पर हमास के घातक हमले के बाद बंधक बनाए गए इजराइली लोगों को रिहा करने की अपील दोहराई। उन्होंने कहा, मैं दृढ़तापूर्वक अनुरोध करता हूं कि बच्चे, बुजुर्ग, महिलाएं और सभी नागरिक संघर्ष का शिकार न बनें। पोप फ्रांसिस ने कहा कि मानवीय कानून का सम्मान किया जाना चाहिए।

पोलैंड में संसदीय चुनाव के लिए मतदान

वारसा (पोलैंड)। पोलैंड मे रविवार को संसदीय चुनाव के लिए मतदान हुआ। इस चुनाव मे सत्तारूढ़ दक्षिणपंथी लॉ एंड जस्टिस पार्टी का प्रमुख मुकाबला विपक्षी गठबंधन सिविक कोअलिशन से है, जो वर्तमान सरकार पर देश की लोकतांत्रिक प्रणाली की बुनियादो को कमजोर करने का आरोप लगाता रहा है। लॉ एंड जस्टिस पार्टी का 3.8 करोड़ की आबादी वाले देश पोलैंड मे व्यापक समर्थक आधार रहा है। पार्टी के समर्थक कैथोलिक परंपराओ की रक्षा करने और पेंशनधारियों तथा परिवार कल्याण योजनाओं को लेकर इसकी प्रशंसा करते रहे हैं।

सार्वजनिक सूचना

यहाँ पर सूचित किया गया है कि मैं हरमीत सिंह पुत्र लेट. सरदार जोगिंदर सिंह आर/ओ. 2 पेल फार्म रोड न्यू सैडल रिवर न्यू जर्सी USA-07458, भारत का पता:–37–डी सुजान सिंह पार्क नई दिल्ली–110003 फोन:–91-9811348837, +1-201-270-8609

खो गया/छूट गया मूल हस्तांतरण विलेख। फ्लैट नंबर 30-A, पोकेट–बी एंड सी अलकनंदा नई दिल्ली पंजीकरण नं. 9225 पंजीकरण की तिथि:–27/01/2004 पृ. 106-107 खंड–1065 पुस्तक–1 पहला पक्ष–पीओआई दूसरा पक्ष–हरमीत सिंह

मैंने एलआर नंबर 960833/2023 दिनांक:–02/10/2023 के जरिए दिल्ली पुलिस थाना क्राइम ब्रांच में एफआईआर दर्ज कराई है।

यदि किसी को उपरोक्त दस्तावेज मिले तो मुझे उपरोक्त पते और फोन नंबर पर सूचित करें। यदि उक्त संपत्ति पर किसी अन्य दावेदार का अधिकार है तो उसे इस सूचना के जारी होने के 15 दिनों के भीतर प्राथमिकी दर्ज कराते हुए उप/ सहायक निदेशक, आवास, डी०डी०ए०, विकास सदन, आईएनए, नई दिल्ली को सूचित करें।

महाराष्ट्र में मिनी बस ने कंटेनर को टक्कर मारी, 12 मरे

भाषा। छत्रपति संभाजीनगर

दर्दनाक हादसा : 23 घायल

महाराष्ट्र के छत्रपति संभाजीनगर जिले में समृद्धि एक्सप्रेसवे पर शनिवार देर रात तेज गति से आ रही एक मिनी बस ने एक कंटेनर को टक्कर मार दी, जिसमें कम से कम 12 लोगों की मौत हो गई तथा 23 अन्य घायल हो गए। पुलिस के एक अधिकारी ने बताया कि निजी बस में 35 यात्री सवार थे जो बुलढाणा जिले में सैलानी बाबा दरगाह से नासिक लौट रहे थे। महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे ने इस हादसे की जांच के आदेश दिए हैं। उन्होंने कहा कि प्रत्एक मृतक के परिजन को राज्य सरकार की ओर से पांच लाख रुपए का मुआवजा दिया जाएगा। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने हादसे में लोगों की मौत पर दुख जताया है। प्रधानमंत्री कार्यालय (पीएमओ) ने सोशल मीडिया मंच एक्स (पूर्व में ट्विटर) पर एक पोस्ट में कहा कि मृतकों के परिजनों को प्रधानमंत्री राष्ट्रीय राहत कोष (पीएमएनआरएफ) से दो-दो लाख रुपए तथा घायलों को पचास-पचास हजार रुपए की अनुग्रह राशि दी जाएगी। अधिकारियों के अनुसार, यह हादसा जिले में एक्सप्रेसवे के वैजापुर इलाके में आधी रात के बाद हुआ। यह स्थान जिला मुख्यालय से करीब 80 किलोमीटर और राजधानी मुंबई से करीब 350 किलोमीटर दूर है। पुलिस अधिकारियों ने बताया कि बस चालक ने वाहन से नियंत्रण खो दिया, जिसके परिणामस्वरूप बस ने जांबरगांव टोल प्लाजा के पास खड़े एक कंटेनर को पीछे से टक्कर मार दी। वैजापुर थाने के एक अधिकारी ने पीटीआई-भाषा को बताया कि प्रथम दृष्टया मिनी बस में क्षमता से अधिक यात्री सवार थे। उन्होंने कहा कि इसमें 17 यात्रियों के बैठने की क्षमता थी लेकिन इसमें करीब 35 यात्री सफर कर रहे थे। थाना निरीक्षक श्यामसुंदर काव्थले ने बताया कि 12 यात्रियों की मौत हो गई जिनमें पांच पुरुष, छह महिलाएं और एक बच्ची शामिल है। उन्होंने बताया कि 23 अन्य यात्री घायल हो गए जिन्हें एक सरकारी अस्पताल में भर्ती कराया गया है। उन्होंने कहा कि घायलों में बस चालक भी शामिल है जिसके सिर में चोट आई है। समृद्धि एक्सप्रेसवे के नियंत्रण कक्ष के एक अधिकारी ने पीटीआई-भाषा को बताया कि समृद्धि एक्सप्रेसवे के नियंत्रण कक्ष को देर रात 12 बजकर सात मिनट पर दुर्घटना की सूचना मिली। उन्होंने कहा कि एक सहायता दल और एक एम्बुलेंस कुछ मिनटों में दुर्घटनास्थल पर पहुंच गई। अधिकारी के अनुसार, बस चालक ने दावा किया उसने दुर्घटना से पहले अचानक अपनी बस के सामने ट्रक को देखा। ट्रक चालक को हिरासत में ले लिया गया है। कुछ स्थानीय लोगों ने घटना की सूचना पुलिस को दी। एक्सप्रेसवे नियंत्रण कक्ष के एक अधिकारी ने कहा, यह दुर्घटना सड़क किनारे बने अवरोधक से जुड़ी पहली लेन में हुई जहां वाहन 80 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से दौड़ सकते हैं। मिनी बस की पहली लेन में सड़क किनारे ट्रक के साथ टक्कर हुई। हमें मिनी बस से लोगों को निकालने के लिए चालक की तरफ वाले बस के एक हिस्से को काटना पड़ा। पुलिस ने बताया कि मृतकों की पहचान नासिक की तनुश्री सोल्से (5), संगीत अस्वाले (40), पंजाबी जगताप (38), काजल सोल्से (32), रजनी तापसे (32), हौसाबाई शिरसत (70), जुम्बार गांगुर्डे (58), अमोल गांगुर्डे (18), सारिका गांगुर्डे (40), मिलिंद पगारे (50), दीपक केकाने (47) तथा छत्रपति संभाजीनगर में वैजापुर के रतन जमदाडे (45) के रूप में हुई है।पीएमओ ने प्रधानमंत्री के हवाले से एक्स पर एक पोस्ट में कहा, छत्रपति संभाजीनगर जिले में दुर्घटना में लोगों की मौत से दुखी हूं। अपने प्रियजनों को खोने वाले लोगों के प्रति मेरी संवेदनाएं। मैं घायलों के शीघ्र स्वस्थ होने की कामना करता हूं। पीएमएनआरएफ से मृतकों के

भारत किसी भी रूप में आतंकवाद का समर्थन नहीं करता: बिरला

भाषा। नई दिल्ली

लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने रविवार को कहा कि उन्होंने जी20 देशों के अपने समकक्षों को अवगत करा दिया है कि भारत किसी भी रूप में आतंकवाद या आतंकवादी गतिविधियों का समर्थन नहीं करता है। बिरला ने शनिवार को यहां संपन्न जी20 संसदीय अध्यक्षों के शिखर सम्मेलन (पी20) के दौरान जी20 देशों के संसदीय अध्यक्षों के साथ हुई द्विपक्षीय बैठकों को लेकर सवालों के जवाब में कहा, इस संबंध में सरकार का रुख बिल्कुल स्पष्ट है। प्रधानमंत्री ने भी अपने बयान में यह बात कही है। सरकार ने स्पष्ट कर दिया है कि भारत में आतंकवाद और आतंकवादी गतिविधियों के लिए कोई स्थान नहीं है। वह उस सवाल का जवाब दे रहे थे, जिसमें उनसे पूछा गया था कि क्या किसी जी20 देश के स्पीकर ने भारत में ऐसे लोगों की मौजूदगी का मुद्दा उठाया था, जो विदेश में अलगाववादी गतिविधि में शामिल हैं। उन्होंने कहा, सरकार की यह स्पष्ट नीति है... आतंकवाद, चाहे वह जाति या धर्म के आधार पर हो... आतंकवाद तो आतंकवाद है और आतंकवाद के किसी भी रूप को भारत में कोई समर्थन नहीं मिलेगा। लोकसभा अध्यक्ष ने पी20 सम्मेलन के संबंध में पत्रकारों को बताया कि यहां यशोभूमि में आयोजित दो दिवसीय शिखर सम्मेलन में 27 देशों के पीठासीन अधिकारियों और 49 संसद सदस्यों सहित 436 प्रतिनिधियों ने भाग लिया। उन्होंने कहा कि यह अब तक किसी भी पी20 शिखर सम्मेलन में अधिकतम मौजूदगी थी और संयुक्त बयान पर सर्वसम्मति विचार-विमर्श का मुख्य केंद्र थी। भारत ने पी20 शिखर सम्मेलन के नौवें संस्करण की मेजबानी की थी। बिरला ने कहा कि भारत ने विधाई मसौदा तैयार करने पर एक विशेषज्ञ समूह का गठन किए जाने की भी पेशकश की है और यह एक ऐसा क्षेत्र है, जहां भारतीय संसद के पास काफी विशेषज्ञता है और उसने कई देशों की संसदों के लिए प्रशिक्षण सत्र आयोजित किए हैं। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता में जी-20 नेताओं के शिखर सम्मेलन की सफलता पी20 शिखर सम्मेलन में हुए विचार-विमर्श में भी परिलक्षित हुई और इस सम्मेलन के बाद एक संयुक्त बयान भी सामने आया। बिरला ने कहा कि इंडोनेशिया की मेजबानी में आयोजित पिछले पी20 सम्मेलन में एक संयुक्त बयान जारी नहीं हो पाया था।

क्विक न्यूज

ईडी ने पूर्व राकांपा सांसद के खिलाफ जांच के क्रम में 315 करोड़ रुपए से अधिक की संपत्ति कुर्क की

नई दिल्ली। प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने रविवार को कहा कि उसने महाराष्ट्र से राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (राकांपा) के एक पूर्व सांसद, उनके परिवार तथा कारोबारी प्रतिष्ठानों के खिलाफ धनशोधन से जुड़ी कथित बैंक धोखाधड़ी की जांच के क्रम में 315 करोड़ रुपए से अधिक की संपत्ति कुर्क की है। राकांपा के पूर्व राज्यसभा सदस्य ईश्वरलाल शंकरलाल जैन ललवानी (77) राजमल लखीचंद ज्वेलर्स प्राइवेट लिमिटेड, आर एल गोल्ड प्राइवेट लिमिटेड और मनराज ज्वेलर्स के प्रवर्तक हैं। संघीय एजेंसी ने एक बयान में कहा कि उसने कंपनियों के बैंक धोखाधड़ी मामले में कुल 315.60 करोड़ रुपए मूल्य की कुछ पवनचक्की, चांदी तथा हीरे के आभूषण, ईंट और भारतीय मुद्रा के अलावा जलगांव, मुंबई, ठाणे, सिलोड (महाराष्ट्र के औरंगाबाद जिले में) और कच्छ (गुजरात) में 70 अचल संपत्तियां कुर्क करने के लिए शुक्रवार को धन शोधन रोकथाम कानून के तहत एक अस्थाई आदेश जारी किया था। ईडी ने आरोप लगाया, कुर्क की गईं संपत्तियों में प्रवर्तक ईश्वरलाल शंकरलाल जैन ललवानी, मनीष ईश्वरलाल जैन ललवानी और अन्य द्वारा खरीदी गई बेनामी संपत्ति भी शामिल है। पीएमएलए का यह मामला केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो (सीबीआई) द्वारा दर्ज तीन प्राथमिकियों से संबंधित है जिसमें आरोप लगाया गया है कि इन कंपनियों और उसके निदेशकाप्रवर्तक ने भारतीय स्टेट बैंक को गलत तरीके से 352.49 करोड़ रुपए से अधिक का नुकसान पहुंचाया। ईडी ने आरोप लगाया कि प्रवर्तकों ने ऐसा कर्ज लेने के लिए फर्जी वित्तीय जानकारियां दीं। इसने इस मामले में अगस्त में छापेमारी की थी। ईडी ने तब दावा किया था कि मुख्य होल्डिंग कंपनी राजमल लखीचंद जलगांव पार्टनरशिप कंपनी के बहीखातों में फर्जी बिक्री-खरीद लेनदेन जैसी कई विसंगतियां पाई गई हैं।

कर्नाटक में ठेकेदार, अन्य के खिलाफ आयकर विभाग के छापे में 50 करोड़ रुपए से अधिक नकदी बरामद

बेंगलुरु। आयकर विभाग के अधिकारियों ने कर्नाटक में एक ठेकेदार, उसके बेटे, एक जिम प्रशिक्षक और एक वास्तुकार सहित कई लोगों पर छापे के दौरान 50 करोड़ रुपए से अधिक नकदी बरामद की है। आयकर विभाग के एक उच्च पदस्थ अधिकारी ने रविवार को यह जानकारी दी। अधिकारी ने पहचान जाहिर नहीं करने की शर्त पर पीटीआई-भाषा को बताया कि दो प्रमुख बुनियादी ढांचा कंपनियों से संबंधित 25 स्थानों पर बृहस्पतिवार को छापेमारी के बाद कई अन्य स्थानों पर छापेमारी की गई। आरोपियों के खिलाफ कर चोरी का आरोप लगाते हुए आयकर विभाग के अधिकारियों ने सहकारनगर और संजयनगर सहित विभिन्न स्थानों पर उनके कार्यालयों पर छापा मारा। इस दौरान कई दस्तावेज जब्त किए गए। इन दोनों कंपनियों से प्राप्त सुराग के बाद, आयकर विभाग के अधिकारियों ने ठेकेदारों और कई अन्य लोगों के घरों और अन्य स्थानों की तलाशी ली। अधिकारी ने कहा, शुक्रवार तक कुल 45 स्थानों पर तलाशी ली गई, जबकि शनिवार को 10 और स्थानों पर छापेमारी की गई। अधिकारी ने कहा, अभियान के तीसरे दिन शनिवार को एक वास्तुकार और एक जिम मालिक के घर पर छापा मारा गया, जहां से आठ करोड़ रुपए नकद जब्त किए गए। इसके साथ ही जब्त की गई कुल नकद राशि 50 करोड़ रुपए से अधिक हो गई है। उन्होंने बताया कि छापेमारी अब भी जारी है। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के सूत्रों के मुताबिक, जिस ठेकेदार के घर पर छापा मारा गया, वह पिछली भाजपा नीत सरकार पर लगे 40 फीसदी कमीशन के आरोपों का सबसे बड़ा चेहरा था। भाजपा ने कांग्रेस सरकार पर तीखा हमला बोलते हुए आरोप लगाया कि बिल्डरों को ब्लैकमेल किया जा रहा है। भाजपा नेता और पूर्व मंत्री सी.टी. रवि ने कहा कि ऐसे मामले हैं जहां मकान बना रही एक प्रमुख बुनियादी ढांचा कंपनी को पानी के कनेक्शन से इनकार कर दिया गया क्योंकि उसने रिश्वत देने से इनकार कर दिया था। उन्होंने दावा किया कि बिल्डरों से 100 रुपए प्रति वर्ग फुट की दर से रिश्वत ंगी जाती है। रवि ने आरोप लगाया, यह एक अनसुनी घटना है। ऐसा पहले कभी नहीं हुआ था...।

पाक पर जीत के लिए भारतीय टीम को बधाई नहीं देने को लेकर हिमंत ने राहुल पर निशाना साधा

गुवाहाटी। असम के मुख्यमंत्री हिमंत विश्व शर्मा ने क्रिकेट विश्व कप में पाकिस्तान पर जीत के लिए भारतीय टीम को बधाई नहीं देने को लेकर कांग्रेस सांसद राहुल गांधी पर रविवार को निशाना साधा। शर्मा ने एक्स (पूर्व में ट्विटर) पर लिखा, कल क्रिकेट विश्व कप में भारत ने पाकिस्तान को हरा दिया। पूरा देश खुशी से झूम उठा और जीत का जश्न मनाया। लेकिन मोहब्बत की दुकान से एक शब्द भी नहीं निकला। भारतीय टीम ने रविवार को अहमदाबाद में हुए विश्वकप के ग्रुप मैच में पाकिस्तान की टीम को सात विकेट से हरा दिया। मोहब्बत की दुकान से हिमंत का इशारा राहुल गांधी की ओर था, जो अपने भाषणों में इस शब्द का इस्तेमाल करते रहे हैं। इससे पहले शर्मा ने कांग्रेस पर निशाना साधते हुए कहा था कि उसे अफगानिस्तान और पाकिस्तान में गठबंधन सरकार बनानी चाहिए क्योंकि इजराइल और हमास के बीच जारी संघर्ष को लेकर पार्टी का रुख इन दो पड़ोसी देशों से मिलता-जुलता है। उन्होंने पत्रकारों से कहा था, यदि आप मुझसे पूछें, तो कांग्रेस को अफगानिस्तान में तालिबान के साथ या पाकिस्तान में इमरान खान या शहबाज शरीफ के साथ मिलकर गठबंधन सरकार बना लेनी चाहिए।

नवरात्रि में सात्विक भोजन देते हैं पोषण

नोएडा। कुछ लोग नवरात्रि के दौरान विशेष डाइट जिसे सात्विक आहार कहा जाता है का सेवन करते हैं। इस उपवास के दौरान खाने योग्य चीजें बड़ी ही खास होती हैं। सात्विक आहार शाकाहारी तो होता ही ह उपवास के नियम भी ज्यादा कठोर हो जाते हैं। रितिका समद्दर रीजनल डायटेटिक्स मैक्स हेल्थकेयर. दिल्ली ने कहा उपवास के दौरान बादाम भी पसंद की जाती हैं। अपनेआप में या किसी व्यंजन में मिलाने पर वे पौष्टिक होने के साथ ही लगातार ऊर्जा भी देती हैबादाम में संतोष देने वाले गुण होते हैं, जो इन्हें उपवास के लिये आदर्श बनाते हैं। अगर आप नवरात्रि के दौरान उपवास रखने की सोच रहे हैं तो आइये इस पर थोड़ा ज्यादा ध्यान देते हैं कि आप क्या खा सकते हैं और क्या नहीं। सेहतमंद स्नैकिंग खुद को बादाम जैसे नट्स से पोषित करें। उन्हें कच्चा खाया जा सकता है या व्यंजनों में मिलाया जा सकता है। बादाम से संतुष्टि मिलती है और लंबे समय के लिये भूख को रोक सकती हैं। बादाम खाने से वजन कम करने में भी मदद मिलती हैए जिस पर कई लोगों का ध्यान रहता है।

चंद्रयान-3 को देखकर अमेरिकी विशेषज्ञ चाहते थे कि भारत उनसे प्रौद्योगिकी साझा करे: इसरो प्रमुख

भाषा। रामेश्वरम(तमिलनाडु)

पहले परीक्षण उड़ान के बाद इसरो गगनयान वाहन के और मिशन को अंजाम देगा: एस सोमनाथ

मदुरै (तमिलनाडु)। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) के अध्यक्ष एस सोमनाथ ने शनिवार को कहा कि 21 अक्टूबर को होने वाली पहली टीवी-डी। परीक्षण उड़ान के बाद अंतरिक्ष एजेंसी महत्वाकांक्षी गगनयान कार्यक्रम के तीन और परीक्षण उड़ान मिशन को अंजाम देगी। गगनयान अभियान मे मानव दल को अंतरिक्ष मे भेजा जाएगा और उन्हे सुरक्षित हिद महासागर मे उतारा जाएगा। परीक्षण वाहन विकास उड़ान (टीवी-डी1) का परीक्षण आंध्र प्रदेश के श्रीहरिकोटा मे सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र मे किया जाएगा। अंतरिक्ष विभाग के सचिव की भी जिम्मेदारी संभाल रहे सोमनाथ ने कहा, गगनयान मिशन का पहला परीक्षण वाहन उड़ान 21 अक्टूबर को अंजाम दिया जाएगा। इसके बाद हम तीन और परिक्षण मिशन डी2, डी3, डी4 को अंजाम देगे।

भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) के अध्यक्ष एस.सोमनाथ ने रविवार को कहा कि अमेरिका में जटिल रॉकेट मिशन में शामिल विशेषज्ञों ने जब चंद्रयान-3 अंतरिक्षयान को विकसित करने की गतिविधियों को देखा तो भारत को सुझाव दिया कि वे उनसे अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी साझा करें। उन्होंने यहां आयोजित एक कार्यक्रम में कहा कि वक्त बदल गया है और भारत बेहतरीन उपकरण और रॉकेट बनाने में सक्षम है, यही कारण है कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अंतरिक्ष क्षेत्र को निजी क्षेत्र के लिए खोला है। सोमनाथ रविवार को दिवंगत पूर्व राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे.अब्दुल कलाम आजाद की 92वीं जयंती के उपलक्ष्य में डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम फाउंडेशन द्वारा आयोजित एक कार्यक्रम में छात्रों को संबोधित कर रहे थे।उन्होंने कहा, हमारा देश बहुत शक्तिशाली राष्ट्र है। आप समझ गए? ज्ञान और बुद्धिमत्ता के स्तर के लिहाज से हमारा देश दुनिया के सर्वश्रेष्ठ देशों में से एक है। इसरो प्रमुख ने कहा, चंद्रयान-3 मिशन के लिए जब हमने अंतरिक्ष यान को डिजाइन और विकसित किया, तो हमने जेट प्रोपल्शन प्रयोगशाला, नासा-जेपीएल के विशेषज्ञों को आमंत्रित किया, जो सभी रॉकेट और सबसे कठिन मिशन पर काम करते हैं। उन्होंने कहा, नासा-जेपीएल से लगभग पांच-छह लोग (इसरो मुख्यालय में) आए और हमने उन्हें चंद्रयान-3 के बारे में समझाया। यह सॉफ्ट लैंडिंग (23 अगस्त को) होने से पहले की बात है। हमने बताया कि हमने इसे कैसे डिजाइन किया और हमारे अभियंताओं ने इसे कैसे बनाया... और हम चंद्रमा की सतह पर कैसे उतरेंगे, और उन्होंने बस इतना कहा, कोई टिप्पणी नहीं। सब कुछ अच्छा होने वाला है। जेपीएल एक अनुसंधान और विकास प्रयोगशाला है जो नेशनल एरोनॉटिक्स एंड स्पेस एडमिनिस्ट्रेशन (नासा) द्वारा वित्त पोषित है और अमेरिका में कैलिफोर्निया इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी (कैलटेक) द्वारा प्रबंधित है। सोमनाथ ने कहा, उन्होंने (अमेरिकी अंतरिक्ष विशेषज्ञों ने) एक बात यह भी कही, वैज्ञानिक उपकरणों को देखो, वे बहुत सस्ते हैं। इन्हें बनाना बहुत आसान है और ए उच्च तकनीक वाले हैं। आपने इसे कैसे बनाया? वे पूछ रहे थे, आप इसे अमेरिका को क्यों नहीं बेच देते?। उन्होंने कहा, तो आप (छात्र) समझ सकते हैं कि समय कितना बदल गया है।

फलस्तीनियों की चिंता करने वाले अपने घर के बगल हो रही गलतियों पर ध्यान दें : तस्लीमा

कोलकाता। जिंदगी भर बगावती तेवर अपनाने वाली बांग्लादेशी कवयित्री तस्लीमा नसरीन का मानना है कि उनके जिन देशवासियों को फलस्तीनियों के खिलाफ अत्याचार की चिंता है उन्हें अपने ही देश में अल्पसंख्यकों की दुर्दशा की उतनी ही फिक्र करनी चाहिए। तस्लीमा नसरीन के अंदर विद्रोह की चिंगारी अब भी खत्म नहीं हुई है और उनका दृढ़ मत है कि जब और जहां कहीं भी उन्हें नाइंसाफी नजर आएगी, उसके खिलाफ संघर्ष करते रहना ही उनका कर्तव्य है। विद्रोह की इस चिंगारी की वजह से उन्होंने परंपराओं को चुनौती दी और अपने समाज के पाखंड और स्त्रीद्वेष को सामने लाने के लिए लेखनी उठाई। उन्होंने रविवार को पीटीआई-भाषा को दिए साक्षात्कार में कहा, मैं सुनती हूं कि मेरे साथी बांग्लादेशी नागरिक फलस्तीनियों पर अत्याचार से कुपित हैं और उनमें से कुछ तो उनकी मदद के लिए फलस्तीन जाना भी चाहते हैं। इजराइलियों और फलस्तीनियों समेत दुनिया में कहीं भी किसी पर अत्याचार की मैं व्यक्तिगत रूप से निंदा करती हूं। लेकिन मैं कहना चाहूंगी कि यदि मेरे देशवासी फलस्तीन में अत्याचार और हमलों के फलस्वरूप आई शरणार्थियों की बाढ़ से इतने चिंतित हैं , तो, जब आज भी बांग्लादेश में अल्पसंख्यकों पर हमला किया जाता है और उनमें से कई अपनी जमीन छोड़कर अन्यत्र शरणार्थी बनने के लिए बाध्य किए जाते हैं, तब भी उनकी अन्तश्चेतना आहत होनी चाहिए।

भागवत ने नवरात्र के पहले दिन जम्मू के बावे वाली मंदिर में पूजा की

भाषा। जम्मू

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) प्रमुख मोहन भागवत ने रविवार को नवरात्रि के पहले दिन यहां बावे वाली मंदिर में पूजा-अर्चना की। तीन दिवसीय दौरे पर जम्मू पहुंचे भागवत रविवार को कठुआ जिले में आरएसएस के स्वयंसेवकों को संबोधित करेंगे। आरएसएस प्रमुख कड़ी सुरक्षा के बीच सुबह बाहु किला क्षेत्र में देवी काली को समर्पित मंदिर पहुंचे और वहां पूजा-अर्चना की। उन्होंने जम्मू के लोगों को नवरात्र की शुभकामनाएं भी दीं।

भारत में नौ वर्षों में मेडिकल कॉलेजों की संख्या दोगुनी हुई: मांडविया

भाषा। शिलांग

स्वास्थ्य प्रणालियों को लगातार मजबूत बनाने की जरूरत

नई दिल्ली। केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री मनसुख मांडविया ने रविवार को कहा कि महामारी की स्थिति मे लचीलापन सुनिश्चित करने के लिए स्वास्थ्य प्रणालियो को लगातार मजबूत बनाने की जरूरत है। स्वास्थ्य मंत्री ने देश के दूरस्थ इलाको मे स्वास्थ्य सेवाओ को पहुंचाने पर भी जोर दिया। मांडविया ने रविवार को असम मे प्रधानमंत्री-आयुष्मान भारत स्वास्थ्य अवसंरचना मिशन (पीएम-एबीएचआईएम), राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन (एनएचएम) और 15वे वित्त आयोग स्वास्थ्य अनुदान के तहत विभिन्न स्वास्थ्य बुनियादी ढांचा परियोजनाओ की आधारशिला रखी और उद्घाटन किया। उन्होने अमृतकाल विमर्श विकसित भारत ए2047 विकास संवाद की अध्यक्षता करते हुए अमृत काल मे स्वास्थ्य सेवा का कायाकल्प विषय पर मुख्य भाषण भी दिया। मांडविया ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के दृष्टिकोण को दोहराते हुए कहा कि एक स्वस्थ समाज एक स्वस्थ राष्ट्र का निर्माण करता है, जो एक समृद्ध देश की नीव रखता है। उन्होने कहा, भारत एक महत्वपूर्ण पारिस्थितिकी तंत्र विकसित करने का प्रयास कर रहा है, जिससे उत्कृष्टता आत्मसात हो और किसी भी स्वास्थ्य आपात स्थिति से निपटने के लिए स्वास्थ्य देखभाल प्रणालियो के निर्माण के लिए अपनी जनशक्ति की क्षमता का उपयोग किया जा सके। मांडविया ने कहा, भारत के पास स्वास्थ्य का अपना मॉडल है जो उसकी जरूरतो, ताकत और क्षमताओ के अनुरूप है।

केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री मनसुख मांडविया ने शनिवार को कहा कि पिछले नौ वर्षों में देश में मेडिकल कॉलेजों की संख्या दोगुनी हो गई है और सरकार देश के हर जिले में एक गहन चिकित्सा इकाई का निर्माण कर रही है।

यहां पूर्वोत्तर इंदिरा गांधी क्षेत्रीय स्वास्थ्य एवं चिकित्सा विज्ञान स ं स ् थ ा न (एनईआईजीआरआईएचएमएस) में एक क्षेत्रीय कैंसर केंद्र का उद्घाटन करते हुए उन्होंने कहा कि देश में एमबीबीएस सीटों की संख्या 2014 में 50,000 से बढ़कर अब1,07,000 हो गई है। मंत्री ने एक नए स्नातक मेडिकल कॉलेज, एक नर्सिंग कॉलेज की नई इमारत, आठ मॉड्यूलर ऑपरेशन थिएटर और अन्य सुविधाओं का भी उद्घाटन किया। उन्होंने कार्यक्रम में मौजूद लोगों को संबोधित करते हुए कहा, पिछले नौ वर्षों में देश में मेडिकल कॉलेजों की संख्या दोगुनी हो गई है। पूरे भारत में कुल 1,70,000 स्वास्थ्य और आरोग्य केंद्र बनाए गए हैं। हम देश के हर जिले में एक गहन चिकित्सा इकाई भी बना रहे हैं। उन्होंने एनईआईजीआरआईएचएमएस में 150 बिस्तरों वाले गहन चिकित्सा खंड की आधारशिला भी रखी।

मैसुरु में भव्य शाही दशहरा उत्सव की शुरुआत हुई

भाषा। मैसूरु

प्रसिद्ध संगीतकार हम्सलेखा ने रविवार को ऐतिहासिक मैसूरु दशहरा उत्सव का उद्घाटन किया।

कर्नाटक के मुख्यमंत्री सिद्धरमैया, उपमुख्यमंत्री डी.के. शिवकुमार व मंत्रिमंडल के अन्य सहयोगियों के अलावा, सांसद प्रताप सिम्हा और अन्य विधायक उद्घाटन समारोह के दौरान मौजूद रहे।इस मौके पर सिद्धरमैया ने कहा कि कर्नाटक सरकार इस साल राज्य में सूखे की वजह से सरल तरीके से लेकिन परंपरा को ध्यान में रखते हुए दशहरा उत्सव का आयोजन कर रही है।उन्होंने कहा, हमने देवी चामुंडेश्वरी से प्रार्थना की है कि कम से कम मानसून के दौरान यहां अच्छी बारिश हो। मैसुरु दशहरा के महत्व का उल्लेख करते हुए सिद्धरमैया ने कहा कि दुनिया भर के लोग यहां इस उत्सव को देखने आते हैं।मैसुरु दशहरा को नाडा हब्बा (राज्य उत्सव) के रूप में मनाया जाता है।उन्होंने कहा कि इस उत्सव के माध्यम से कर्नाटक अपने लोगों को परंपरा, संस्कृति, भाषा और राज्य द्वारा हासिल किए गए विकास से अवगत कराता है।उन्होंने कहा, हमारा राज्य कला, संस्कृति और संगीत में समृद्ध है। कर्नाटक के लोग सभ्य हैं। कर्नाटक में रहने वाले हर एक व्यक्ति के लिए यह जरूरी है फिर चाहे वह किसी भी जाति या धर्म का ही क्यों न हो, प्रेम और सम्मान के साथ रहे। हमें स्वीकार करना होगा कि यह देश और राज्य दोनों के लिए बहुत जरूरी है। संविधान की प्रस्तावना का संकेत देते हुए सिद्धरमैया ने कहा कि कानून की नजर में हर कोई बराबर है और सभी को समान अवसर मिलने चाहिए।मुख्यमंत्री ने कहा, प्रस्तावना के उद्देश्यों को हासिल करना हर सरकार की जिम्मेदारी है। संसाधनों और अधिकारों को लोगों के बीच समान रूप से वितरण किया जाना चाहिए। इसे ही हम सामाजिक न्याय कहते हैं। दस दिवसीय उत्सव के भव्य उद्घाटन से पहले अन्य मंत्रियों के साथ सिद्धरमैया ने यहां देवी चामुंडेश्वरी की विशेष पूजा की।दशहरा उत्सव देवी चामुंडेश्वरी को समर्पित है, जिन्हें मैसूरु शहर और मैसूरु वाडियार शाही परिवार की प्रमुख देवी माना जाता है। इस उत्सव को देवी चामुंडेश्वरी की असुर महिषासुर पर जीत के जश्न के रूप में मनाया जाता है।मान्यता है कि महिषासुर को पराजित करने के बाद देवी ने एक पहाड़ी को अपना निवास बनाया, जिसे चामुंडी पहाड़ी के नाम से जाना जाता है।उत्सव के दौरान अगले 10 दिनों में कई सांस्कृतिक कार्यक्रम भी होंगे।शहर के लोगों को कुश्ती प्रतियोगिता भी देखने को मिलेगी, जिसमें देश भर से पहलवान हिस्सा लेंगे। लोग यहां विजयदशमी वाले दिन मैसूरु दशहरे के भव्य समापन का बेसब्री से इंतजार करते हैं, जब जंबो सवारी निकाली जाती है। जंबो सवारी सुसज्जित हाथियों की एक शोभा यात्रा है जिसमें देवी चामुंडेश्वरी की प्रतिमा आगे चल रहे हाथी पर स्थापित की जाती है।

नवरात्रि के पहले दिन अमृतसर में लंगूर मेला के दौरान छोटे बच्चे बरा हनुमान मंदिर में हनुमान जी के ड्रेस में सजे हुए

उद्धव ने समाजवादियों से साधा संपर्क

कहा- पुराने मतभेदों को सुलझाया जा सकता है

भाषा। मुंबई

शिवसेना (यूबीटी) नेता उद्धव ठाकरे ने रविवार को कहा कि समाजवादियों के साथ पुराने मतभेद मुख्य रूप से वैचारिक थे जिन्हें लोकतंत्र के हित में सुलझाया जा सकता है। उद्धव ने 21 समाजवादी परिवार पार्टियों की एक सभा को संबोधित करते हुए याद किया कि मतभेदों के बावजूद उनके पिता एवं शिवसेना के संस्थापक बाल ठाकरे और समाजवादी नेता संयुक्त महाराष्ट्र के साझा उद्देश्य के लिए एक साथ आए थे। इस आंदोलन ने अपना लक्ष्य तब हासिल किया, जब 1960 में महाराष्ट्र को एक मराठी भाषी राज्य के रूप में सृजित किया गया और इसकी राजधानी मुंबई बनी। उद्धव ने कहा, हमारे बीच वैचारिक मतभेद थे, लेकिन हमारा उद्देश्य एक ही था। अगर हम बैठकर बात करेंगे तो मतभेद दूर हो सकते हैं। उन्होंने याद किया कि कैसे जॉर्ज फर्नांडीस 1960 के दशक में कांग्रेस के वरिष्ठ नेता एस. के. पाटिल को हराने में कामयाब रहे थे। उन्होंने कहा कि मजदूर संघ नेता (फर्नांडीस) ने लोगों में विश्वास पैदा किया कि मुंबई के मजबूत नेता पाटिल, जिन्हें उद्योगपतियों का समर्थन प्राप्त था, उन्हें भी हराया जा सकता है। उन्होंने कहा, अगर हम लोकतंत्र के लिए एकजुट रहें तो यह अब भी हो सकता है। कार्यकर्ता बहुत महत्वपूर्ण हैं और अगर हमारे पास मजबूत कैडर है, तो डरने की कोई जरूरत नहीं है। उद्धव ने कहा कि 1966 में स्थापित शिवसेना और समाजवादी पार्टियों के बीच मतभेदों का एक लंबा इतिहास रहा है, लेकिन वे संयुक्त महाराष्ट्र जैसे मुद्दों पर एक साथ आए। उन्होंने कहा, समाजवादियों ने आपातकाल के खिलाफ आंदोलन में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। मतभेदों के बावजूद संयुक्त महाराष्ट्र के आंदोलन के दौरान आचार्य अत्रे, एस. ए. डांगे और (बाल) ठाकरे एक ही ओर थे।

पायनियर
नई दिल्ली, सोमवार,16 अक्टूबर, 2023

उलटफेर का शिकार बना मौजूदा चैंपियन इंग्लैंड

- अफ़ग़ानिस्तान ने 69 रनों से हराया
- गुरबाज व रहमान का बेहतरीन खेल

भाषा। नई दिल्ली

सलामी बल्लेबाज रहमानुल्लाह गुरबाज के 57 गेंद में 80 रन के बाद मुजीबुर रहमान की अगुवाई में अपने गेंदबाजों के शानदार प्रदर्शन के दम पर अफगानिस्तान ने इस विश्व कप का सबसे बड़ा उलटफेर करते हुए रविवार को गत चैम्पियन इंग्लैंड को 69 रन से हरा दिया। लंबे समय तक युद्ध की विभीषिका झेलने और राहत शिविरों के अलावा अपने दूसरे घर भारत में क्रिकेट का ककहरा सीखने वाले अफगान खिलाड़ियों ने अपने क्रिकेट इतिहास का सबसे सुनहरा पन्ना लिख डाला और उसके साक्षी रहे अरूण जेटली स्टेडियम पर उनकी हौसलाअफजाई करने पहुंचे 25000 से अधिक दर्शक। पहले दोनों मैच हारकर यहां आई अफगानिस्तान टीम ने बल्लेबाजी और गेंदबाजी दोनों में इंग्लैड को उन्नीस साबित कर दिया। अफगानिस्तान ने पहले बल्लेबाजी के लिए भेजे जाने पर 49 . 5 ओवर में 284 रन बनाए। जवाब में इंग्लैंड की टीम 40.3 ओवर में 215 रन पर आउट हो गई। राशिद खान ने जैसे ही मार्क वुड को बोल्ड किया , खुशी से उछलते अफगान क्रिकेटरों के चेहरों पर साफ था कि यह जीत उनके और उनके देश के लिए कितने मायने रखती है। इंग्लैंड के लिए हैरी ब्रूक (61 गेंद में 66 रन) को छोड़कर कोई बल्लेबाज नहीं टिक सका। वहीं अफगानिस्तान के लिए पहले 16 गेंद में 28 रन बनाने वाले मुजीबुर ने गेंदबाजी में भी जलवा दिखाते हुए तीन विकेट चटकाए। अनुभवी स्पिनर मोहम्मद नबी ने छह ओवर में 16 रन देकर दो विकेट लिए। इससे पहले दोनों टीमों का सामना सिडनी में 2015 विश्व कप में और 2019 में मैनचेस्टर में 2019 विश्व कप में हुआ था और इंग्लैंड ने क्रमश: नौ विकेट और 150 रन से जीत दर्ज की थी। इंग्लैंड की शुरूआत बेहद खराब रही और दूसरे ही ओवर की पहली गेंद पर फजलहक फारूकी ने जॉनी बेयरस्टो (तीन) को पवेलियन भेज दिया। वहीं 33 के स्कोर पर उसका दूसरा विकेट जो रूट के रूप में गिरा जिन्हें मुजीबुर रहमान ने बोल्ड किया। फॉर्म में चल रहे डेविड मलान को अनुभवी स्पिनर मोहम्मद नबी ने जदरान के हाथों लपकवाया। मलान ने 39 गेंद में 32 रन बनाए। इंग्लैंड को सबसे करारा झटका तेज गेंदबाज नवीनुल हक ने दिया जब 18वें ओवर में कप्तान जोस बटलर सिर्फ नौ रन का योगदान देकर बोल्ड हो गए। लियाम लिविंगस्टोन (10) और सैम कुरेन (10) को क्रमश: राशिद खान और नबी ने पवेलियन भेजा। अफगानिस्तान के गेंदबाजों का इस कदर दबदबा था कि उसकी पारी का पहला छक्का 31वें ओवर में लगा जब हैरी ब्रूक ने मुजीबुर की गेंद को सीमा पार पहुंचाकर इंग्लैंड का स्कोर 150 रन तक पहुंचाया। ब्रूक ने 61 गेंद में 66 रन बनाए जिसमें सात चौके और एक छक्का शामिल था। मुजीबुर ने उन्हें पवेलियन भेजकर इंग्लैंड की करारी हार पर लगभग मुहर लगा दी। इससे पहले अफगानिस्तान की टीम एक गेंद बाकी रहते आउट हो गई लेकिन 284 रन का अच्छा स्कोर बनाया। उसके लिए गुरबाज ने 57 गेंद में 80 रन बनाए जिसमें आठ चौके और चार छक्के शामिल थे। गुरबाज के अलावा इकराम अलीखिल ने 66 गेंद में तीन चौकों और दो छक्कों के साथ 58 रन बनाए जबकि निचले क्रम पर अनुभवी मुजीबुर रहमान ने 16 गेंद में 28 रन की आक्रामक पारी खेली।

स्कोरबोर्ड

अफ़ग़ानिस्तान पारी : गुरबाज रन आउट 80, जदरान का रूट बो रशीद 28,शाह स्ट बटलर बो रशीद 3,शाहिदी बो रूट 14,उमरजई का वोक्स बो लिविंगस्टोन 19,इकराम का कुरेन बो टॉपली 58,नबी का रूट बो वुड 9, खान का रूट बो रशीद 23,रहमान का रूट बो वुड 28, हक रन आउट 5, फारूकी नाबाद 2,**अतिरिक्त** : 15 रन, **कुल योग** : 49 . 5 ओवर में 284 रन, **विकेट पतन** :1-114, 2-122, 3-122, 4-152, 5-174, 6-190, 7-233, 8- 277, 9-277, **गेंदबाजी** : वोक्स 4-0-41- 0, टॉपली 8.5-1-52-1,कुरेन 4-0-46-0, रशीद 10-1 -42-3, वुड 9-0-50-2 लिविंगस्टोन 10-0-33-1 रूट 4-0-19-1

इंग्लैंड पारी:बेयरस्टॉ पगबाधा फारूकी 02, मलान का जदरान बो नबी 32, रूट बो मुजीबुर 11,ब्रुक का इकराम बो मुजीबुर 66,बटलर नवीनुल 09, लिविंगस्टोन बो राशिद 10,कुरेन का रहमत बो नबी 10, वोक्स बो मुजीबुर 09,रशीद का नबी बो राशिद 20,वुड बो राशिद 18,टॉपली नाबाद 15, **अतिरिक्त**: (लेग बाईः 04, नोबॉलः 01, वाइडः 08) 13, **कुल योग**: 40.3 ओवर मे 215 रन,**विकेट पतन**:1-3, 2-33, 3-68, 4-91, 5-117, 6-138, 7-160, 8-169 , 9-198,**गेंदबाजी**: मुजीबुर 10-0-51-3,फारूकी 7-0-50-1, नवीनुल 6-1-44-1, नबी 6-0-16-2,राशिद 9.3-1-37-3,ओमरजई 2-0-13-0

अहमदाबाद में पिच को परखने के पहले के अनुभव से फायदा हुआः बुमराह

अहमदाबाद। पाकिस्तान के खिलाफ आईसीसी विश्व कप मैच मे 19 रन देकर दो विकेट लेकर भारत की जीत की पटकथा लिखने वाले तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह ने कहा कि उन्होंने आयु वर्ग की प्रतियोगिता के दिनो मे इस मैदान पर काफी क्रिकेट खेला है जिससे इस पिच को समझने मे आसानी हुई। मैन ऑफ द मैच बुमराह की अगुवाई मे भारतीय गेंदबाजो ने बल्लेबाजी के लिए आसान पिच पर पाकिस्तान की पारी को 191 रन पर समेट दी। कप्तान रोहित शर्मा की 86 रन की विस्फोटक पारी के दम पर भारत ने 117 गेंद शेष रहते तीन विकेट के नुकसान पर लक्ष्य हासिल कर लिया। भारतीय क्रिकेट बोर्ड (बीसीसीआई) की वेबसाइट पर जारी वीडियो मे बुमराह ने उप कप्तान हार्दिक पंड्या से कहा, मैने इस मैदान पर काफी जूनियर क्रिकेट खेला है। यह एक सपाट विकेट था, इसलिए मैने अपने उस अनुभव का यहां इस्तेमाल किया। चार चौके खाने की जगह पहले चौके के बाद ही विकेट के बारे में जानना जरूरी है। मै यही कोशिश कर रहा था। इस बातचीत के दौरान भारत के अन्य तेज गेंदबाज मोहम्मद सिराज ने याद दिलाया कि बुमराह ने दिल्ली मे अफगानिस्तान के खिलाफ भी घातक गेंदबाजी की थी। बुमराह ने अपनी सफलता का श्रेय इन स्थलो पर इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) के मैचो को दिया। वहां (दिल्ली) मैने अपने आईपीएल अनुभव का इस्तेमाल करने की कोशिश की थी। आईपीएल मे हम सपाट पिचो पर काफी गेंदबाजी करते है। पंड्या ने गेंदबाजी करते समय अपने सोचने के तरीके मे बदलाव का श्रेय बुमराह को देते हुए कहा, अगर उन्हे एक फ्लिक पर चौका लग जाता है, तो वह तुरंत धीमी गति से गेंद फेंकते है। वह एक महान गेंदबाज है। सिराज ने इस बीच स्वीकार किया कि पाकिस्तान के खिलाफ मैच के दौरान वह घबराए हुए थे और दबाव मे थे। यह भारत मे पाकिस्तान के खिलाफ मेरा पहला मैच था। विश्व कप मे पाकिस्तान के खिलाफ पहला मैच था। इसलिए मै थोड़े दबाव के साथ-साथ बहुत घबराया हुआ था। सिराज ने बताया कि कैसे उन्होने पाकिस्तान के सलामी बल्लेबाज अब्दुल्लाह शफीक को आउट करने की योजना बनाई। मैने अब्दुल्ला शफीक के विकेट के बारे मे रोहित से बात की। जबकि मेरा पहला बाउंसर अच्छा काम नही कर पाया, मैने उसे दूसरे बाउंसर के बारे मे अनुमान लगाने मे आश्चर्यचकित किया और उसे पगबाधा करने के लिए गेंद को आगे टप्पा खिलाया। हरफनमौला रविंद्र जडेजा ने पूरी भारतीय गेंदबाजी इकाई की सराहना की।

पाकिस्तान के बल्लेबाज मेरी गेंदों को नही समझ पाए, स्वीप शॉट को लेकर भ्रम में थेः कुलदीप

अहमदाबाद। भारतीय स्पिनर कुलदीप यादव का मानना है कि वह पाकिस्तान के बल्लेबाजो के दिमाग मे भ्रम पैदा करने मे सफल रहे, जिन्होने शनिवार को यहां खेले गए विश्व कप मैच मे उनकी गेंदो को समझे बिना जोखिम भरा स्वीप शॉट खेलने का प्रयास किया। कुलदीप ने सौद शकील और इफ्तिखार अहमद के महत्वपूर्ण विकेट लिए। इन दोनों ने बाएं हाथ के कलाई के स्पिनर की गेंद पर स्वीप शॉट खेलने के प्रयास मे अपने विकेट गंवाए। कुलदीप से पूछा गया कि क्या उन्होने इफ्तिखार के पांव को निशाना बनाकर गेंदबाजी करने की रणनीति बनाई थी तो उन्होने इसका दिलचस्प जवाब दिया। कुलदीप ने भारत की सात विकेट से जीत के बाद संवाददाताओ से कहा, नही मैने ऐसी योजना नही बनाई थी लेकिन मै गुगली कर रहा था तो मैने ऐसा प्रयास किया। वह थोड़ा शॉर्ट पिच गेंद थी जो बाहर जा रही थी और इस गेंद पर उसके लिए स्वीप करना मुश्किल था। इफ्तिखार ने ऑफ स्टंप से बाहर जा रही गेंद को स्वीप करने के प्रयास मे अपने विकेटो मे खेल दिया था। यह विकेट मुझे भाग्य से मिला और इस तरह के विकेट से बल्लेबाजो पर दबाव बढ़ता है। वे मेरी गेंद को नही समझ पाए और इसको लेकर भ्रम मे थे कि वे मेरी गेंद पर स्वीप शॉट लगाएं या सामान्य बल्लेबाजी करें। मै हालांकि उसे बेहतर तरीके से आउट करना पसंद करता। असल मे कुलदीप को वह ओवर नही करना था और उन्होने कप्तान रोहित शर्मा से बात करने के बाद ही यह ओवर किया था। मुझे लगा कि वे स्वीप शॉट खेलने का प्रयास करेंगे क्योकि वे ऐसा करने के लिए जाने जाते है। उन्होने पहले कोई जोखिम नही उठाया लेकिन जब कप्तान से बात करने के बाद मुझे वह अतिरिक्त ओवर करने को मिला तो मैने दोनो विकेट उस ओवर मे लिए।

भारत के हाथों पाकिस्तान की करारी हार दुखद और पीड़ादायकः रमीज राजा

नई दिल्ली। पाकिस्तान के पूर्व कप्तान रमीज राजा ने वनडे विश्व कप मे भारत के खिलाफ खराब प्रदर्शन के लिए पाकिस्तानी टीम की कड़ी आलोचना करते हुए इस हार को दुखद और पीड़ादायक करार दिया। भारत ने शनिवार को अहमदाबाद मे खेले गए मैच मे पाकिस्तान को 191 रन पर आउट कर दिया था तथा इसके बाद कप्तान रोहित शर्मा की शानदार पारी से लगभग 20 ओवर शेष रहते हुए सात विकेट से जीत हासिल की।राजा ने आईसीसी रिव्यू पॉडकास्ट मे कहा, इस हार से वे बेहद दुखी होगे। यह भयावह है। यह पीड़ादायक है। यह करारी हार है। वे खेल के तीनो विभागो मे चित कर दिए गए। अगर आप जीत नही सकते तो कम से कम चुनौती तो पेश करो। पाकिस्तान ऐसा करने में सक्षम नही था। पाकिस्तान की भारत के हाथों वनडे विश्व कप में यह लगातार आठवी हार थी। राजा ने कहा कि पाकिस्तान को लंबे समय से चले आ रहे इस अवांछित क्रम को समाप्त करने के लिए कोई रास्ता ढूंढना होगा।पाकिस्तान की 1992 की विश्व चैंपियन टीम का हिस्सा रहे राजा ने कहा, यह वास्तविकता है और पाकिस्तान को इसको लेकर कुछ करना होगा। उन्हे भारत के खिलाफ चोकर्स (दबाव मे बिखरने वाले) तो नही कहा जा सकता है। यह एक तरह का मानसिक अवरोध है। यह कौशल से जुड़ा अवरोध भी है। उन्होने कहा, जब आप भारत के खिलाफ खेल रहे हो और माहौल ऐसा हो कि 99 प्रतिशत दर्शक भारत का समर्थन कर रहे हो तो आप इससे प्रभावित हो सकते हो।

ट्रेविस हेड ने नेट सत्र में किया अभ्यास, इस सप्ताह ऑस्ट्रेलिया टीम से जुड़ने की संभावना

एडिलेड। ऑस्ट्रेलिया के ट्रेविस हेड ने बाएं हाथ मे फ्रैक्चर से उबरने के बाद रविवार को नेट अभ्यास किया जिससे मध्यक्रम के इस बल्लेबाज के भारत मे खेले जा रहे एकदिवसीय विश्वकप के लिए टीम मे जल्दी शामिल होने की उम्मीद बढ़ गई है। वामहस्त बल्लेबाज हेड के गुरुवार को भारत आने की संभावना है। उन्होने बीते शुक्रवार को हाथ से सुरक्षात्मक पट्टी हटा दी थी। विश्व कप से पहले सेंचुरियन मे दक्षिण अफ्रीकी तेज गेंदबाज गेराल्ड कोएत्जे की गेंद लगने के बाद उनके हाथ में फ्रैक्चर हो गया था। इस बात की संभावना कम है कि वह शुक्रवार को पाकिस्तान के खिलाफ मैच के उपलब्ध होंगे। वह हालांकि फिटनेस टेस्ट पास करने के बाद 25 अक्टूबर को दिल्ली में नीदरलैड के खिलाफ खेल सकते है। हेड ने क्रिकेट.कॉम.एयू से कहा, मै अच्छी तरह से उबर रहा हूं। यह मेरी उम्मीद से बेहतर है। हमने सर्जरी नही कराने का फैसला किया था क्योंकि उसमे उबरने मे 10 सप्ताह का समय लगता। हमे बताया गया कि स्प्लिंट के साथ उबरने मे कम से कम छह सप्ताह लगेंगे। हमारी योजना के मुताबिक नीदरलैड के खिलाफ मैच मेरे चोटिल होने के लगभग छह सप्ताह के बाद है। आगे अगर सबकुछ ठीक रहा तो मैने अपने लिए वही तारीख तय की है। ऑस्ट्रेलिया को विश्व कप के अपने शुरुआती दोनो मैचो मे हार का सामना करना पड़ा है।

बोपन्ना, एबडेन की जोड़ी शंघाई मास्टर्स में उपविजेता

शंघाई। भारतीय युगल खिलाड़ी रोहन बोपन्ना और उनके ऑस्ट्रेलियाई जोड़ीदार मैथ्यू एबडेन रविवार को यहां शंघाई मास्टर्स में मार्सेल ग्रेनोलर्स और होरासियो जेबालोस की सातवी वरीयता प्राप्त जोड़ी से 7-5, 2-6, 7-10 से हारकर उपविजेता रहे। चौथी वरीयता प्राप्त बोपन्ना और एबडेन की जोड़ी ने अंतिम चार मे फैबियन रेबौल और सादियो डौम्बिया पर जीत के साथ सत्र के आखिर में खेले जाने वाले एटीपी फाइनल का टिकट पक्का किया था। स्पेन और अर्जेंटीना की जोड़ी के सामने बोपन्ना और एबडेन की जोड़ी पहले सेट की बढ़त को एक घंटे 23 मिनट तक चले मैच में बरकरार नही रख सकी।

रेलवे की टीम राष्ट्रीय ओपन एथलेटिक्स में ओवरऑल चैम्पियन बनीं

बेंगलुरु रेलवे की टीम ने राष्ट्रीय ओपन एथलेटिक्स चैंपियनशिप में 220 अंकों के साथ रविवार को यहां ओवरऑल खिताब जीता। पुरुष टीम का खिताब 175 अंकों के साथ सेना के नाम रहा, जबकि रेलवे की महिला टीम 156 अंकों के साथ शीर्ष पर रही। सेना के भाला फेंक खिलाड़ी मनु डीपी को 1127 अंकों के साथ सर्वश्रेष्ठ पुरुष खिलाड़ी घोषित किया गया, जबकि महाराष्ट्र की यमुना लडकत को मीट की सर्वश्रेष्ठ महिला एथलीट चुना गया। उसके नाम 1128 अंक थे। स्वर्ण पदक विजेता मनु ने अपने मीट रिकॉर्ड मे सुधार किया।

रुबलेव हारे, हुर्काज को शंघाई मास्टर्स का खिताब

शंघाई। हुबर्ट हुर्काज ने शंघाई मास्टर्स टेनिस के रोमांचक फाइनल मे रविवार को यहां आंद्रे रुबलेव के खिलाफ मैच प्वाइंट का बचाव करते हुए 6-3, 3-6, 7-6 (8) से जीत दर्ज की। सेमीफाइनल मे सेबेस्टियन कोर्डा को शिकस्त देने वाले पोलैंड के इस खिलाड़ी ने फाइनल में रूस के रुबलेव के खिलाफ पहली सर्विस को 80 प्रतिशत बार भुनाने में सफल रहे। हुर्काज ने पहले सेट में 6-3 की बढ़त के साथ रुबलेव को दबाव में ला दिया। टूर्नामेंट में रुबलेव ने पहली बार कोई सेट गंवाया था। रुबलेव ने दूसरे सेट मे शानदार वापसी की और तीसरे सेट में 6-5 की बढ़त लेने के बाद वह मैच प्वाइंट के लिए सर्विस कर रहे थे। हुर्काज ने दो घंटे नौ मिनट तक चले मुकाबले शानदार जज्बा दिखाते हुए लगातार दो अंक जीत कर खिताब अपने नाम किया। हुर्काज का यह दूसरा मास्टर्स खिताब है। इससे पहले उन्होंने मियामी 2021 मे खिताब जीता था।

पेगुला ने युआन को हराकर कोरिया ओपन का खिताब जीता

सियोल। जेसिका पेगुला ने रविवार को कोरिया ओपन के फाइनल मे युआन यू को 6-2, 6-3 से हराकर अपने करियर का चौथा खिताब जीता। शीर्ष वरीयता प्राप्त पेगुला ने पूरे टूर्नामेंट मे केवल एक सेट गंवाया। वह 2007 मे वीनस विलियम्स के बाद सियोल में खिताब जीतने वाली अमेरिका की पहली खिलाड़ी बन गई। विश्व रैंकिंग मे 128वें स्थान पर काबिज युआन करियर (डब्ल्यूटीए) का पहला फाइनल मुकाबला खेल रही थी।

शुभंकर का तीसरे दौर में लचर प्रदर्शन

मैड्रिड। भारतीय गोल्फर शुभंकर शर्मा ने तीसरे दौर मे एक ओवर 72 का कार्ड खेल कर लचर प्रदर्शन किया जिससे वह एक्सियोना ओपन डी एस्पाना मे संयुक्त दूसरे से संयुक्त 14वें स्थान पर खिसक गए। शुभंकर ने पहले दो दौर मे समान 66 का स्कोर बनाया था लेकिन तीसरे दिन वह संघर्ष करते हुए नजर आए।

इकाना में जीत की तलाश में उतरेंगी दोनों टीमें

ऑस्ट्रेलिया और श्रीलंका में अहम मुकाबला आज

मिहिर चंद्र श्रीवस्तव

अभ्यास करती श्रीलंका की टीम

लखनऊ । शुरुआती मैचों में हार से मायूस श्रीलंका व ऑस्ट्रेलिया की टीमें लखनऊ के इकाना स्टेडियम में सोमवार को जीत की उम्मीद को लेकर उतरेंगी। दोनो ही टीमों पर जीत हासिल करने का दबाव है । श्रीलंकाई चीते व कंगारूओं की टीम एक दूसरे को हराकर जीत की राह पकड़ने की कोशिश करेंगी। दोनों टीमों को शुरुआत से ही एक दूसरे पर हावी होना होगा। पिछले मैच में इकाना पर दक्षिण अफ्रीका ने 300 रन के पार पहुंचा कर पिच के आलोचकों को जवाब दे दिया कि बल्लेबाजों के लिए ठीक नहीं है, हालांकि ऑस्ट्रेलियाई टीम लक्ष्य हासिल नहीं कर पाई थी। पर कल के मैच में उम्मीद की जा सकती है अच्छा स्कोर बनेगा। लखनऊ का मौसम भी साफ है इसलिए बारिश का भी डर नहीं है। हालांकि शाम के समय ठंड की वजह से हल्की ओस की संभावना हो सकती है। यह दोनों टीम टूर्नामेंट में अपनी पहली जीत की तलाश में हैं। ऑस्ट्रेलिया को जहां भारत और दक्षिण अफ्रीका से करारी हार का सामना करना पड़ा वहीं श्रीलंका की टीम दक्षिण अफ्रीका और पाकिस्तान से हार गई थी। पांच बार की विश्व चैंपियन ऑस्ट्रेलिया की टीम 10 टीमों की अंक तालिका में नौवें स्थान पर है। उसका नेट रन रेट −1.846 है। श्रीलंका −1.161 के नेट रन रेट के साथ सातवें स्थान पर है। इन दोनों टीमों ने अभी तक टूर्नामेंट में तीनों विभाग में लचर प्रदर्शन किया है। ऑस्ट्रेलिया का खराब क्षेत्ररक्षण वास्तव में हैरान करने वाला है। उसने अभी तक दो मैच में छह कैच टपकाए हैं। यह टूर्नामेंट में अभी तक किसी भी टीम का सबसे खराब प्रदर्शन है। उसकी गेंदबाजी में भी वह पैनापन नहीं दिखा जिसके लिए वह जाने जाते हैं। उसके बल्लेबाज भी नहीं चल पाए हैं और आलम यह है कि उसकी टीम अभी तक 200 रन की संख्या पर नहीं कर पाई है। पहले मैच में उसके बल्लेबाज भारतीय स्पिनरों के सामने नहीं चल पाए जबकि दूसरे मैच में दक्षिण अफ्रीका के तेज गेंदबाजों ने उनकी बखिया उधेड़ दी थी। खिलाड़ियों के चोटिल होने की समस्या से जूझ रहे श्रीलंका का आक्रमण कमजोर है और ऑस्ट्रेलिया के बल्लेबाजों के लिए लय हासिल करने का यह सुनहरा मौका होगा। ऑस्ट्रेलिया की टीम इस मैदान पर एक मैच खेल चुकी है और उसको इसका भी फायदा मिल सकता है। ऑस्ट्रेलिया के कप्तान पैट कमिंस ने इस सप्ताह के शुरू में कहा था कि वह अपने गेंदबाजों को रोटेट नहीं करेंगे। इसका मतलब है कि वह तेज गेंदबाजी विभाग में कमिंस, जोश हेज़लवुड और मिशेल स्टार्क के साथ उतरेंगे जबकि स्पिन विभाग की जिम्मेदारी एडम जंपा और ग्लेन मैक्सवेल पर होगी। श्रीलंका की टीम भी अभी तक टूर्नामेंट में अपेक्षानुरूप प्रदर्शन नहीं कर पाई है।

मेंडिस को बल्लेबाजों से दमदार खेल का भरोसा

लखनऊ। श्रीलंका के कप्तान कुसल मेंडिस को भरोसा है कि खराब लय से जूझ रही ऑस्ट्रेलिया की टीम के खिलाफ मुकाबले मे उनकी बल्लेबाजी सोमवार को यहां इकाना में मैच जिताने मे सहायक हो सकती है। श्रीलंका और ऑस्ट्रेलिया को ग्रुप चरण के अपने शुरुआती दोनो मैचो मे हार का सामना करना पड़ा। पैट कमिंस की टीम के जहां खेल के सभी विभागो में संघर्ष किया है वही श्रीलंका की बल्लेबाजी इकाई ने पिछले दो मैचों में काफी अच्छा प्रदर्शन किया है। टीम दक्षिण अफ्रीका और पाकिस्तान के खिलाफ 320 से अधिक का स्कोर बनाने मे सफल रही है। मेंडिस ने ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ मैच की पूर्व संध्या पर कहा, मुझे अपनी बल्लेबाजी पर बहुत भरोसा है, मुझे लगता है कि हम काफी कुछ कर सकते है। मेरा मानना है कि हमारे पास बेहतर बल्लेबाजी और गेंदबाजी इकाई है। मेंडिस खुद भी बल्ले से जबरदस्त फॉर्म मे है,।

हमारे लिए प्रत्येक मैच महत्वपूर्ण : कमिंस

लखनऊ। ऑस्ट्रेलिया के कप्तान पैट कमिंस को लगता है कि अब उनके लिए एकदिवसीय विश्व कप मे प्रत्एक मैच फाइनल जैसा बन गया है लेकिन उन्होंने कहा कि उनकी टीम उन टीमों के खिलाफ अच्छा प्रदर्शन करने के लिए तैयार है जिनके खिलाफ हाल मे उनका रिकॉर्ड बेहतर रहा है। ऑस्ट्रेलिया को पहले मैच मे भारत से करारी शिकस्त झेलनी पड़ी थी जबकि दूसरे मैच मे दक्षिण अफ्रीका ने उसे 134 रन से हराया था। अब उसे सेमीफाइनल मे जगह बनाने के लिए लीग चरण के बचे हुए सात मैच मे से कम से कम छह मैच मे जरूर जीत दर्ज करनी होगी। कमिंस को हालांकि लगता है कि अभी घबराने की जरूरत नही है। कमिंस ने श्रीलंका के खिलाफ मैच की पूर्व संध्या पर रविवार को यहां कहा, अगर हम विश्व कप 2019 पर गौर करें तो भारत और दक्षिण अफ्रीका दो ऐसी टीम थी जिन्होंने हमे राउंड रोबिन दौर मे हराया था। पिछले साल भी यही दो टीम थी जिनके खिलाफ हमें सबसे ज्यादा परेशानी हुई। अब हमारे पास ऐसी टीमो के खिलाफ खेलने का मौका है जिनके खिलाफ हम पिछले कुछ समय से नही खेले है और जिनके खिलाफ हमे काफी सफलता मिली है।

अभिनव बिंद्रा को निकट भविष्य में भारत को ओलंपिक की मेजबानी मिलने की उम्मीद

भाषा। मुंबई

भारत के पहले व्यक्तिगत ओलंपिक स्वर्ण पदक विजेता अभिनव बिंद्रा ने रविवार को उम्मीद जताई कि देश निकट भविष्य में ओलंपिक खेलों की मेजबानी करने में सफल रहेगा। बिंद्रा ने बीजिंग ओलंपिक (2008) में 10 मीटर एयर राइफल में स्वर्ण पदक जीता था। वह तोक्यो ओलंपिक 2020 में भाला फेंक खिलाड़ी नीरज चोपड़ा के पीले तमगे से पहले व्यक्तिगत स्पर्धाओं में भारत के इकलौते स्वर्ण पदक विजेता थे। अंतरराष्ट्रीय ओलंपिक समिति (आईओसी) के 141वें सत्र को संबोधित करते हुए बिंद्रा ने रविवार को यहां कहा, मुझे उम्मीद है कि हमें निकट भविष्य में ओलंपिक खेलों की मेजबानी मिलेगी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शनिवार को आईओसी सत्र की शुरुआत की घोषणा करते हुए कहा था कि भारत 2036 ओलंपिक के आयोजन के अपने प्रयासों में कोई कसर नहीं छोड़ेगा। मोदी ने यह भी कहा था कि भारत 2029 युवा ओलंपिक की मेजबानी करना चाहता है। पिछले साल ओडिशा में शुरू ओलंपिक वैल्यू एजुकेशन प्रोग्राम (ओवीईपी) के बारे में बिंद्रा ने कहा कि राज्य में इस पहल की शुरुआत के बाद 15,000 से अधिक लड़कियों ने पहली बार खेलों को अपनाया है।

आईओसी सदस्यों ने थॉमस बाख से 2025 के बाद भी अध्यक्ष पद पर बने रहने का आग्रह किया

मुंबई। अंतरराष्ट्रीय ओलंपिक समिति (आईओसी) के सदस्यो ने रविवार को यहां मौजूदा अध्यक्ष थॉमस बाख से 2025 मे कार्यकाल समाप्त होने के बाद भी अपने पद पर बने रहने का आग्रह किया। जर्मनी के पूर्व ओलंपियन बाख आईओसी के नौवे अध्यक्ष है। उन्हे पहली बार 2013 मे ब्यूनस आयर्स मे आईओसी के 125वे सत्र मे आठ साल के लिए अध्यक्ष चुना गया था। इसके बाद मार्च 2021 मे बाख को चार साल के कार्यकाल के लिए फिर से अध्यक्ष चुना गया था। ओलंपिक चार्टर के अनुसार कोई भी व्यक्ति 12 साल से अधिक समय तक आईओसी का अध्यक्ष नही रह सकता है। जॉक रोगे ने लंबे समय तक अध्यक्ष बने रहने की परंपरा को समाप्त करने के लिए यह नियम बनवाया था। बाख से पहले रोगे 2001 से 2013 तक आईओसी के अध्यक्ष रहे थे। आईओसी के 141वे सत्र के पहले दिन इसके अधिकतर सदस्यो का मानना था कि बाख को 2025 मे समाप्त होने वाले कार्यकाल के बाद भी तीसरे कार्यकाल के लिए अध्यक्ष बने रहना चाहिए। इसके लिए हालांकि ओलंपिक चार्टर में बदलाव करना होगा। आईओसी के सदस्य लुइस मेजिया ओविदो ने कहा, आपने हमे आगे बढ़ने का सबसे अच्छा रास्ता दिखाया है। हमें इस (ओलंपिक) आंदोलन को आगे बढ़ाना है। इसलिए मै इस बात को सबके सामने रख रहा हूं। बाख ने आईओसी सदस्यो का आभार व्यक्त किया और कहा कि उनकी अपील ने उनका दिल छू लिया। आईओसी के इस सत्र के दौरान लॉस एंजेलिस मे 2028 मे होने वाले ओलंपिक खेलो मे क्रिकेट सहित चार अन्य खेलो को शामिल करने के लिए सोमवार को मतदान होने की उम्मीद है।

आईओसी ने मानवाधिकार प्रतिबद्धताओं को मजबूत करने के लिए ओलंपिक चार्टर में संशोधन किया

मुंबई। अंतरराष्ट्रीय ओलंपिक समिति (आईओसी) ने रविवार को यहां अपने 141वे सत्र के पहले दिन अपनी मानवाधिकार प्रतिबद्धताओं को मजबूत करने के लिए ओलंपिक चार्टर मे संशोधन किया। इस साल सितंबर मे कार्यकारी बोर्ड द्वारा इस आशय की सिफारिश करने के बाद आईओसी सत्र ने मानवाधिकारो के सम्मान से संबंधित अतिरिक्त शब्दो को शामिल करने को मंजूरी दे दी। मानव अधिकारो के सम्मान के लिए एक व्यापक प्रतिबद्धता के रूप मे ओलंपिज्म (ओलंपिकवाद) के मौलिक सिद्धांतो मे अतिरिक्त शब्दो को शामिल किया गया है। यह बदलाव विशेष रूप से ओलंपिज्म एक और चार के मौलिक सिद्धांतो मे किया गया है। इसमे कहा गया है, यह बदलाव कानूनी मामलो के आयोग और मानवाधिकार सलाहकार समिति के साथ उसके परामर्श का परिणाम है। ओलंपिज्म के मौलिक सिद्धांत जिन नए शब्दो को शामिल किया गया है वह अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मान्यता प्राप्त मानवाधिकार और ओलंपिक आंदोलन के दायरे मे है। आईओसी के अध्यक्ष थॉमस बाख ने कहा, ओलंपिक आंदोलन मे मानवाधिकारो के सम्मान के प्रति हमारी प्रतिबद्धता मे यह एक बड़ा कदम है। ओलंपिक चार्टर मे इस बदलाव के साथ, हम अपने हितधारको को एक मजबूत संदेश भी भेज रहे है।

हॉकी इंडिया ने राष्ट्रीय शिविर के लिए 34 खिलाड़ियों का चयन किया

नई दिल्ली। हॉकी इंडिया ने महिला एशियाई चैंपियंस ट्रॉफी से पहले बेंगलुरु में 16 अक्टूबर से शुरू होने वाले राष्ट्रीय शिविर के लिए रविवार को 34 संभावित खिलाड़ियों की घोषणा की। राष्ट्रीय शिविर 22 अक्टूबर तक चलेगा जबकि महिला एशियाई चैंपियंस ट्रॉफी 27 अक्टूबर से रांची में खेली जाएगी ।यह प्रतियोगिता पहली बार भारत में आयोजित की जा रही है। भारत के अलावा इसमें मौजूदा चैंपियन चीन, जापान, कोरिया, मलेशिया और थाईलैंड की टीम हिस्सा लेगी। भारत अपने अभियान की शुरुआत थाईलैंड के खिलाफ करेगा ।भारत की मुख्य कोच यानिक शोपमैन ने कहा, अब हम ओलंपिक क्वालीफायर्स तक जो भी टूर्नामेंट खेलेंगे वह हमारे लिए महत्वपूर्ण होगा। इससे हमें एक टीम के रूप में सुधार करने का अवसर मिलेगा। हम एशियाई खेलों में टीम के प्रदर्शन की समीक्षा करेंगे। संभावितः गोलकीपरः सविता, रजनी एतिमारपु, बिचू देवी, बंसारी सोलंकी। डिफेंडरः दीप ग्रेस एक्का, गुरजीत कौर, निक्की प्रधान, उदिता, इशिका चौधरी, अक्षता ढेकाले, ज्योति छेत्री, महिमा चौधरी। मिडफील्डरः निशा, सलीमा टेटे, सुशीला चानू, ज्योति, नवजोत कौर, मोनिका, मरीना कुजूर, सोनिका, नेहा, बलजीत कौर, रीना खोखर, वैष्णवी फाल्के, अजमीना कुजूर। फॉरवर्डः लालरेम्सियामी, नवनीत कौर, वंदना कटारिया, शर्मिला देवी, दीपिका, संगीता कुमारी, मुमताज खान, सुनेलिता टोप्पो, ब्यूटी डुंगडुंग।

अमन, रतन व समीर बने साइकिलिंग में अव्वल

लखनऊ। अमन बाजपेयी ने लखनऊ जिला साइकिलिंग चैंपियनशिप.2023 में बालक अंडर-14 रोड साइकिलिंग में उत्कृष्ट प्रदर्शन से सबको पछाड़ते हुए पहला स्थान हासिल किया। खनऊ जिला साइकिलिंग एसोसिएशन के तत्वावधान में जनेश्वर मिश्र पार्क के पास जी-20 रोड पर रविवार सुबह आयोजित चैंपियनशिप में पुरुष अंडर-23 आयु वर्ग में रोड साइकिलिंग में समीर सिंह, एमटीबी में तनिष्क पाण्डेय और महिला अंडर.23 रोड साइकिलिंग में रत्ना सेन ने बाजी मारी। दूसरी ओर 50 वर्ष से अधिक आयु वर्ग में आयोजित 10 किलोमीटर की मासस्टार्ट प्रतियोगिता में संतोष जायसवाल ने अव्वल रहते हुए वाहवाही लूटी। इस स्पर्धा में उनको गोवर्धन सिंह और देवनाथ ने कड़ी चुनौती दी लेकिन क्रमश रू दूसरे व तीसरे स्थान पर रहे। समापन व पुरस्कार वितरण मुख्य अतिथि अनएडेड प्राइवेट स्कूल एसोसिएशन लखनऊ के अध्यक्ष अनिल अग्रवाल प्रबंध निदेशकए सेंट जोसेफग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूशंस सहित विशिष्ट अतिथि प्रदीप चंद एचओडीए फिजिकल डिपार्मेंट दिल्ली पब्लिक स्कूल लखनऊ व इंटरनेशनल साइकिलिस्ट डॉ प्रभात रंजन ने पुरस्कार वितरित किए।

विद्यालयी क्रिकेट चयन 19 से

लखनऊ। सेंटीनियल इंटर कॉलेजए गोलागंज के तत्वावधान में विभिन्न आयु वर्ग की जनपदीय विद्यालयी क्रिकेट चयन प्रतियोगिता 19 से 21 अक्टूबर तक केडी सिंह बाबू स्टेडियम के प्रैक्टिस ग्राउंड में आयोजित की जाएगी। सह संयोजक स्वप्निल वाटसन ने बताया कि 19 अक्टूबर को बालक अंडर.14 और बालिका अंडर.19 वर्ग का चयन किया जाएगा। इसके बाद बालक अंडर.17 आयु वर्ग का चयन 20 अक्टूबर को और बालक अंडर.19 वर्ग का चयन 21 अक्टूबर को होगा।

स्कूल प्रीमियर लीग में कंचन और किंग्स फाइनल में

लखनऊ। कंचन स्पोर्ट्स क्लब और किंग्स टाइगर्स नीलमथा ने स्कूल प्रीमियर क्रिकेट लीग एसपीएल.2023 के सेमीफाइनल मुकाबलों में जीत से फाइनल में खिताबी भिड़ंत तय की। लखनऊ विश्वविद्यालय के शिवाजी मैदान पर खेली जा रही लीग में रविवार को पहले सेमीफाइनल में कंचन स्पोर्ट्स क्लब ने फाइव फाइटर्स क्लब को पांच विकेट से हराया। फाइव फाइटर्स ने पहले बल्लेबाजी करते हुए निर्धारित 5 ओवर में 3 विकेट पर 33 रन बनाए। कंचन स्पोर्ट्स से सुदीप ने दो विकेट हासिल किए। जवाब में कंचन ने अभय की नाबाद 22 रन की पारी से बिना किसी नुकसान के चार ओवर में 4 ओवर में 34 रन बनाकर मैच जीत लिया। दूसरे सेमीफाइनल में किंग्स टाइगर्स नीलमथा ने राजाजीपुरम सुपर जायंट्स को तीन विकेट से हराया। राजाजीपुरम सुपर जायंट्स ने पहले बल्लेबाजी करते हुए निर्धारित 5 ओवर में 2 विकेट पर 37 रन रनब बनाए। टीम से विशाल ने 16 व आयुष ने 19 रन बनाए। जवाब में किंग्स टाइगर्स नीलमथा ने 4 ओवर में 2 विकेट पर 38 रन बनाकर मैच जीत लिया। टीम की जीत में अंकित ने 20 रन की पारी खेली।

सीएमवाईके प्रिंटेक लिमिटेड के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक शोबोरी गाँगुली द्वारा 100के, मिलाप भवन, 8/ए, बहादुर शाह ज़फ़र मार्ग, नई दिल्ली-110002, दूरभाषः 011-40110455 से प्रकाशित तथा बीएफएल इन्फोटेक लिमिटेड सी-9 सेक्टर-3, नोएडा-201301 (उ.प्र.) से मुद्रित। प्रधान संपादक : शोबोरी गाँगुली, स्थानीय सम्पादकः प्रदीप तिवारी। पाठकों को सुझाव दिया जाता है कि इस अखबार के किसी भी विज्ञापन पर प्रतिक्रिया करने से पहले पूरी तरह उसके बारे में दिए गए दावों, शर्तों और तथ्यों की जांच कर लें। पायनियर ग्रुप के मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक या उसका कोई भी कर्मचारी विज्ञापनदाता द्वारा उनके किसी उत्पाद तथा सेवा हेतु किए गए किसी दावे की सच्चाई का आश्वासन या उत्तरदायित्व नहीं लेता है। ऐसे विज्ञापनों के बाद किसी आर्थिक क्षति के लिए वे जिम्मेदार भी नहीं हैं। पत्रवार्ता ऑफिस- एफ-31, सेक्टर 6, नोएडा, गौतमबुद्धनगर-201301, उत्तर प्रदेश, दूरभाष- 120-4879900।